वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय
कोटा

एम.जे.एम.सी. -6
दृश्य-श्रव्य जनसंचार प्रविधि
(Audio-Visual Communication Technology)

दृश्य–श्रव्य जनसंचार प्रविधि- 4

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(Master of Journalism & Mass Communication)

दृश्य–श्रव्य जनसंचार प्रविधि

रेडियो प्रसारण सिद्धांत
टेलीविजन समाचार लेखन

4

पत्रकारिता एवं जनसंचार
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

दृश्य–श्रव्य जनसंचार प्रविधि – 4

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

- **प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा**
  कुलपति
  कोटा खुला विश्वविद्यालय,कोटा
  (अध्यक्ष समिति)
- **डॉ. अब्दुल वहीद खान**
  निदेशक (विकास एवं प्रशिक्षण)
  कॉमनवेल्थ सेण्टर ऑफ लर्निंग
  वैंकूवर (कनाडा)
- **राधेश्याम शर्मा**
  पूर्व-महानिदेशक
  माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
  विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)
- **डॉ. ओ.पी. केजरीवाल**
  निदेशक, नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी
  तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली
- **प्रो. ए.के. बनर्जी**
  पूर्व-अध्यक्ष,पत्रकारिता विभाग
  बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
  वाराणसी
- **प्रो. जे.एस. यादव**
  भारतीय जनसंचार संस्थान
  नई दिल्ली
- **डॉ. भंवर सुराणा**
  ब्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता
  दैनिक हिंदुस्तान
  जयपुर
- **डॉ. रमेश जैन**
  अध्यक्ष-जनसंचार विभाग
  कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा
  (सचिव, समिति)

संयोजक

डॉ. रमेश जैन- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

पाठ-संपादक

गोपाल सक्सेना
पूर्व निदेशक
सेन्टर प्रोडक्सन सेन्टर,दूरदर्शन,नई दिल्ली

भाषा-संपादक

डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार
जयपुर

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रोफेसर (डॉ.) अनाम जेटली**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक	प्रभारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

पुनः उत्पादन - सितम्बर, 2009

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस पाठ्यक्रम सामग्री का कोई भी अंश कोटा खुला विश्वविद्यालय/ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना या निम्योग्राफी (चक्रमुद्र) अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करना वर्जित है ।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, रावतभाता रोड, कोटा से प्राप्त की जा सकती हैं।

कुलसचिव, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा प्रकाशित

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय

एम. जे. एम. सी. -6

दृश्य-श्रव्य जनसंचार प्रविधि

पाठ्यक्रम - षष्ठ

खण्ड- 4

4

इकाई 15 रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त	8–25
इकाई 16 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ	26–44
इकाई 17 रेडियो की भाषा और अनुवाद	45–58
इकाई 18 टेलीविजन के लिए समाचार लेखन	59–72
इकाई 18 दूरदर्शन समाचारों का अनुवाद	73–82

पाठ लेखक

1. गोपाल सक्सेना
मीडिया सलाहकार, नोएडा
पूर्व निदेशक, सेन्ट्रल प्रोडक्शन सेंटर (सी.पी.सी.)
दूरदर्शन, नई दिल्ली

2. गोपाल गुप्ता
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
नई दिल्ली

3. शैलेन्द्र मोहन कुमार
सूचना अधिकारी
नई दिल्ली

4. सुभाष सोतिया
संपादक-आजकल
नई दिल्ली

5. प्रो. प्रदीप माथुर
भारतीय जनसंचार संस्थान
अरुणा आसफल अली मार्ग, जे.एन.यू.
न्यू कैम्पस, नई दिल्ली

6. श्याम माथुर
उप संपादक
राजस्थान पत्रिका, जयपुर

7. जी.सी. गर्ग
पूर्व-स्टेशन इन्जीनियर
दूरदर्शन, जयपुर

8. टीकम ठाकुर
सहायक अभियन्ता
दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर

9. महेश पालीवाल
सहायक इन्जीनियर
दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर

10. सत्यकाम
रीडर-हिन्दी विभाग
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

11. मुरली मनोहर मंजुल
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
जोधपुर

12. जगमोहन माथुर
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक
नई दिल्ली

13. राधेश्याम तिवारी
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
जयपुर

14. शांति प्रसाद अग्रवाल
मीडिया सलाहकार एवं
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
गाजियाबाद

खंड एवं इकाई परिचय

दृश्य -श्रव्य जनसंचार प्रविधि -4 में निम्न इकाइयां है- रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त,आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ,रेडियों की भाषा और अनुवाद,टेलीविज़न के लिए समाचार लेखन तथा दूरदर्शन समाचारों का अनुवाद।

ये पांचों इकाइयाँ रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त के साथ-साथ प्रसारण सेवाएं,रेडियो की भाषा,टी.वी. समाचार लेखन और अनुवाद पर यथेष्ट प्रकाश डालती है।

इकाई 15 रेडियो रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त की है। इसमे जनसंचार के सम्प्रेषण सिद्धान्त रेडियो के प्रसारण सिद्धान्त, रेडियो और श्रोता, शब्द, संगीत, मौन और ध्वनि प्रभाव, रेडियो कार्यक्रम निर्माण, आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएं तथा आकाशवाणी की तकनीकी व्यवस्था पर विस्तार से जानकारी दी गई है।

इकाई 16 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएं से सबद्ध है। इससे आकाशवाणी की प्रसारणी सेवाएं जैसी सामयिक सेवाएं, परिचर्चा, संगीत, विविध भारती, राष्ट्रीय चैनल, एफ.एम. चैनल, नाटक एवं रुपक तथा अन्य उत्तरित शब्द कार्यक्रम आदि पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त समाचार प्रसारण के मूल सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है।

इकाई 17 रेडियो की भाषा और अनुवाद की है। रेडियो में भाषा का विशेष महत्व है। रेडियो की भाषा कैसी होनी चाहिए, तथा अनुवाद करते समय किन-किन बातो का ध्यान रखना चाहिए आदि के बारे में इस इकाई में जानकारी दी गई है। आदर्श रेडियो की भाषा के संदर्भ में कवि स्व. भवानी प्रसाद मिश्र की ये पंक्तियां आज भी सामयिक है।

जिस तरह हम बोलते है,
उस तरह तू लिख ।
और इसके बाद भी
हमसे बड़ा तू दिख ।

इकाई 18 टेलीविज़न के लिए समाचार कैसे लिखे जाए' विषय से सबद्ध है। इसमें दूरदर्शन के लिए समाचार लेखन, समाचार संरचना, समाचार बुलेटिन का स्वरूप और प्रक्रिया, समाचार को चित्रात्मक बनाने के साधन, भाषा और अनुवाद आदि के बारे में विवेचन किया गया है। आशा की जाती है कि यह इकाई टेलीविज़न समाचार लेखन में आप की सहायक होगी।

इकाई 19 दूरदर्शन समाचारों का अनुवाद की है। इस इकाई में टेलीविज़न प्रसारण और समाचार, दूरदर्शन समाचारों की संरचना, अनुवाद की अनिवार्यता, अनुवाद का स्वरूप तथा मौखिक समाचारों का अनुवाद आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

इस खंड की ये पांचों इकाईयां आपको टेलीविज़न एवं रेडियो लेखन में मदद देगी और वे एक कुशल तथा योग्य समाचार-लेखक बनेंगे।

इकाई 15 रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.02 जनसंचार के सम्प्रेषण

15.02.1 परस्पर सम्प्रेषण

15.02.2 दश्रोपा (दर्शक, श्रोता, पाठक) की प्रतिक्रिया

15.02.3 जनसंचार माध्यमों की प्रकृति

15.03 रेडियो के प्रसारण सिद्धांत

15.03.1 श्रव्य माध्यम

15.03.2 बोलचाल का माध्यम

15.03.3 लचीला माध्यम

15.03.4 वर्तमान का बोध

15.04 रेडियो और श्रोता

15.04.1 रेडियो क्यों सुना जाता है?

15.04.2 मनोवैज्ञानिक पहलू

15.04.3 श्रोता और उसकी कल्पनाशीलता

15.05 शब्द, संगीत, मौन और ध्वनि-प्रभाव

15.05.1 उच्चरित शब्द

15.05.2 वाचक या उद्घोषक की भूमिका

15.05.3 संगीत

15.05.4 मौन या पॉज

15.05.5 ध्वनि प्रभाव

15.06 रेडियो कार्यक्रम निर्माण

15.06.1 कार्यक्रम की योजना

15.06.2 कार्यक्रम की प्रस्तुति

15.06.3 प्रसारण के विभिन्न स्रोत

15.07 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ

15.07.1 राष्ट्रीय प्रसारण सेवा

15.07.2 क्षेत्रीय प्रसारण सेवा

15.07.3 विविध भारती

15.07.4 एफ.एम. चैनल

15.07.5 विदेश प्रसारण सेवा

15.07.6 विभिन्न एकांश
15.08 आकाशवाणी की तकनीकी व्यवस्था
15.08.01 रिकार्डिंग स्टुडियो
15.08.02 प्रसारण स्टुडियो
15.08.03 नियंत्रण कक्ष (कण्ट्रोल रुम)
15.08.04 ट्रांसमीटर
15.09 सारांश
15.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
15.11 निबंधात्मक प्रश्न

15.0 उद्देश्य

इस इकाई में रेडियो प्रसारण के सिद्धान्तों की बात की जा रही है । इसे पढ़ने के बाद आप-

- जनसंचार के सम्प्रेषण सिद्धांत का परिचय प्राप्त कर सकेंगे,
- रेडियो के सम्प्रेषण सिद्धान्त का विवेचन कर सकेंगे,
- माध्यम के रूप में रेडियो की विशेषताएँ पहचान सकेंगे,
- रेडियो के प्रमुख उपकरणों, मसलन संगीत, मौन, शब्द, ध्वनि-प्रभाव का महत्व और भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे,
- रेडियो की प्रसारण तकनीक से परिचित हो सकेंगे और
- आकाशवाणी की कार्य-प्रणाली से अवगत हो सकेंगे ।

15.1 प्रस्तावना

रेडियो प्रसारण के सिद्धांत पर विचार करने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि इस समाज में जनसंचार की क्या भूमिका है? लोग अखबार क्यों पढ़ते हैं, रेडियो क्यों सुनते हैं, टेलीविजन क्यों देखते हैं? अलग-अलग जनसंचार माध्यम अलग-अलग ढंग से काम करते हैं और उनकी कार्य-पद्धति भी अलग होती है । मसलन, मुद्रित माध्यम होने के कारण अखबार में लेखन, सम्पादन, मुद्रण पर जोर रहता है जबकि रेडियो और टेलिविजन में शब्द, ध्वनि और प्रस्तुति का महत्व होता है । रेडियो और टेलिविजन में भी प्रस्तुति की भंगिमा बदल जाती है । एक ओर केवल शब्द ही शब्द होते हैं, दूसरी ओर ध्वनि और चित्र दोनों का समायोजन होता है । इसलिए प्रत्येक माध्यम की जरूरत और माँग अलग-अलग होती है । रेडियो में भी प्रसारण और प्रस्तुति की अपनी तकनीक है, जिस पर हम इस इकाई में विचार करेंगे ।

15.2 जनसंचार के सम्प्रेषण सिद्धान्त

सभी जनसंचार माध्यम अपनी बात अलग-अलग तरीके से दर्शक, श्रोता, पाठक (दश्रोता) तक पहुँचाते हैं । सम्प्रेषण का अर्थ है दो या दो से अधिक व्यक्तियों में विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान होना । जब प्रसारक अपना संदेश दश्रोता तक पहुँचाता है और उन्हें वांछित

प्रतिक्रिया के लिए प्रेरित करता है तब जाकर संचार की प्रक्रिया पूरी होती है । इसे इस प्रकार समझा जा सकता है-

सम्प्रेषक → संदेश → माध्यम → दश्रोपा → प्रतिक्रिया

15.2.1 परस्पर सम्प्रेषण

जनसंचार माध्यम परस्पर सम्प्रेषण को बढ़ावा देते हैं । परन्तु इसमें दश्रोपा सम्प्रेषक की आँखों के सामने नहीं होता । उनके बीच एक भौगोलिक दूरी होती है । इस भौगोलिक दूरी को संदेशों के माध्यम से पाटा जाता है । समाचारपत्रों में छपे समाचार, टेलीविजन पर चल रहे धारावाहिक और रेडियो पर आने वाले कार्यक्रमों की लोग आपस में चर्चा करते हैं और अपनी राय व्यक्त करते हैं । इसके साथ-साथ जनसंचार माध्यम 'रायदाता' (ओपिनियन लीडर) की भी भूमिका निभाता है । वे जो कहते हैं उसका दश्रोपा पर गहरा असर होता है । जनसंचार माध्यम में परस्पर सम्प्रेषण के जरिए लोगों तक सूचना पहुँचती है, इसका उपयोग सामाजिक समर्थन और सामाजिक दबाव के स्रोत के रूप में भी किया जाता है ।

15.2.2 दश्रोपा (दर्शक, श्रोता, पाठक) की प्रतिक्रिया

आरम्भ में विद्वान जनसंचार को एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम मानते थे जो दश्रोपा को अपने मनमुताबिक ढाल लेते हैं और उन्हें कठपुतली की तरह नचाते हैं । यह स्वीकार नहीं किया जाता था कि सम्प्रेषण एक प्रक्रिया है । सम्प्रेषण को एक सीधी और सरल घटना माना जाता था, जिसे इंजेक्शन की सुई के समान दश्रोपा के मन-मस्तिष्क में सीधे डाला जा सकता है। विल्वर श्रम का मानना था कि समाचार-पत्र, रेडियो और टेलीविजन में जो कुछ कहा जाता है उसे दश्रोपा बिना कुछ सोचे-समझे स्वीकार कर लेते हैं । विलवर श्रम के इस सिद्धान्त को 'बुलेट शॉट' के नाम से जाना जाता है ।

परन्तु बहुत जल्दी ही इस सिद्धांत से लोगों का मोह-भंग होने लगा । शोध और विश्लेषण से यह बात सामने आई कि दश्रोपा जनसंचार माध्यम के जरिए प्रेषित संदेश को चुपचाप ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं करता बल्कि उस पर विचार करता है और उस पर अपनी राय कायम करता है । इस प्रकार दश्रोपा एक सक्रिय वर्ग है जो किसी के बहकावे या बहलावे में नहीं आता है । वह निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं होता ।

15.2.3 जनसंचार माध्यमों की प्रकृति

यहाँ एक सवाल अहम हो जाता है कि संदेश प्रसारित करने के लिए किस जनसंचार माध्यम का प्रयोग कितने प्रभावी तरीके से किया जा रहा है? वस्तुत: संदेश का प्रभावी होना काफी हद तक जनसंचार माध्यम की शक्ति पर निर्भर कर्ता है । अलग-अलग जनसंचार माध्यमों की अपनी-अपनी विशेषताएँ, क्षमताएँ और सीमाएँ हैं । प्रत्येक माध्यम अपनी विशेषताओं और विशिष्टताओं के अनुसार दश्रोपा तक अपने संदेश पहुँचाता है । इसके अलावा, प्रत्येक माध्यम दश्रोपा के अनुसार ही अपनी प्रस्तुति तथा कार्यक्रमों में भी परिवर्तन लाता है । आइए रेडियो के संदर्भ में सम्प्रेषण के सिद्धांतों पर विचार करें ।

बोध प्रश्न-1

1. क्या दर्शक, श्रोता, पाठक जनसंचार माध्यमों से प्रसारित संदेशों को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेता है? ऐसा वह क्यों करता है ।
2. सम्प्रेषण का क्या अर्थ है? जनसंचार माध्यमों द्वारा यह सम्प्रेषण किस प्रकार सम्पन्न होता है?
3. जनसंचार माध्यमों की प्रकृति से आप क्या समझते हैं?
4. 'दश्रोपा' से क्या आशय है? स्पष्ट करें ।

15.3 रेडियो-प्रसारण

सिद्धांत रेडियो पर होने वाला प्रसारण रेडियो माध्यम की विशिष्टता और समाज में रेडियो की भूमिका से संचालित और परिचालित होता है । रेडियो के लिए कोई भी कार्यक्रम बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाता है-

1. रेडियो ध्वनि का माध्यम है ।
2. यह बोलचाल का माध्यम है ।
3. यह लचीला माध्यम है ।
4. यह आत्मीय माध्यम है ।
5. इसमें वर्तमान का बोध होता है ।

15.3.1 श्रव्य माध्यम

रेडियो के कार्यक्रम निर्माण के लिए जिन पाँच आधारभूत तत्वों का ऊपर हमने उल्लेख किया है उसमें कहा गया है कि रेडियो ध्वनि का माध्यम है । इसे हम सुन-भर सकते हैं । यह बातचीत के जरिए सम्प्रेषण करता है । इसमें ध्वनि, संगीत, मौन, शब्द और ध्वनि प्रभाव का रचनात्मक और सृजनात्मक मिश्रण कर आवाज की दुनिया बनाई जाती है ।

ध्वनि का माध्यम होने के कारण इस माध्यम के अपने लाभ हैं तो इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं । ध्वनि का माध्यम होने के कारण इस माध्यम में एक लचीलापन आ जाता है । इसे श्रोता कहीं, किसी स्थिति में किसी भी समय सुन सकता है । इस माध्यम को केवल सुना जाता है । सुनने का एक सुखद पक्ष यह है कि जो कुछ हम सुनना चाहते हैं वह सुनते हैं बाकी ध्वनियों और आवाज़ों को हमारा मस्तिष्क झटक देता है । अगर आप अखबार पढ़ रहे हैं या कोई काम कर रहे हैं तो आसपास की ध्वनि आपके कान से टकराएगी और लौट जाएगी । इसीलिए अक्सर लोगों को पढ़ते समय कम्प्यूटर चलाते समय, खाना बनाते हुए या कोई अन्य कार्य करते हुए रेडियो 'सुनते' हुए देख सकते हैं । क्या वास्तव में वे रेडियो 'सुन' रहे होते हैं? इसका उत्तर 'हाँ' और 'नहीं' दोनों हैं । हाँ इसलिए कि रेडियो से निकली आवाज बराबर उनके कान से टकरा रही है और 'नहीं' इसलिए कि कान से टकराने वाली हर ध्वनि को मस्तिष्क पूरा का पूरा ग्रहण नहीं कर्ता? श्रोता जब चाहता है अपने मनमुताबिक रेडियो से प्रसारित संदेश को

'ग्रहण' करता है और जब नहीं चाहता है तो अपनी ग्रहण-शक्ति को निष्क्रिय कर देता है । इसलिए रेडियो भी चलता रहता है और काम भी ।

इस मनोवृत्ति और मनोवैज्ञानिक के साथ एक अहम सवाल यह भी जुड़ा हुआ है कि लोग रेडियो सुनते क्यों हैं ? कई लोग 'नेपथ्य शोर' के लिए रेडियो सुनते हैं । वह उनके अकेलेपन को दूर करता है । इसीलिए कई लोग सुबह उठकर या ऑफिस से लौटकर या सोने जाने से पहले रेडियो ऑन कर देते हैं । रेडियो से आने वाली आवाज लोगों के अकेलेपन को तो दूर करती ही है, साथ ही साथ यह उन्हें ऊर्जा और ताजगी से भर देती है ।

यह तो हुई ध्वनि माध्यम की विशिष्टता । परन्तु ध्वनि की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह ठहरती नहीं । मुख से निकली ध्वनि तुरन्त हवा में विलीन हो जाती है । आप अखबार में छपे समाचार को एक बार नहीं दो बार या जितनी बार आप चाहें पढ़ सकते हैं । परन्तु रेडियो के साथ ऐसा संभव नहीं है । रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रम अगर आपने एक बार न सुना या उस पर कहे गए वाक्य या शब्द आप सुनने से चूक गए तो फिर आप उसे तब तक नहीं सुन सकते जब तक कि उसे दुबारा प्रसारित न किया जाए । इसीलिए रेडियो पर प्रसारित होने वाले संदेश स्पष्ट, सरल, सहज और सम्प्रेष्य होने चाहिए । जो संदेश एक बार सुनकर समझ में न आ सके वह रेडियो प्रसारण के योग्य नहीं है ।

15.3.2 बोलचाल का माध्यम

रेडियो बिलकुल आपकी ही भाषा में आपसे बातचीत करता है । बातचीत करने में दो पक्षों का होना जरूरी है । इसमें भी प्रस्तुतकर्त्ता और श्रोता होते हैं । जैसे-जैसे रेडियो प्रसारण का विकास होता जा रहा है, वैसे-वैसे श्रोता रेडियो के आस-पास आते जा रहे हैं । जब रेडियो का आरंभ हुआ था तो उसमें सामूहिकता को ध्यान में रखा जाता था क्योंकि काफी लोग एक साथ बैठकर रेडियो सुनते थे । इसलिए उसमें भाषण-शैली अपनाई जाती थी । जैसे ही रेडियो बाहर से घर के अन्दर आया और मेज से पॉकेट में समाया, वैसे ही इसकी शैली भी बदलने लगी । अब यह श्रोताओं से बात करने लगा । धीरे-धीरे तकनीक का विकास हुआ और 'फोन इन कार्यक्रम' की शुरुआत हुई । इसमें श्रोता सीधे प्रस्तुतकर्त्ता से बातचीत कर सकता है, अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है, अपनी राय दे सकता है और खुद को रेडियो पर सुन सकता है। आजकल कई रेडियो स्टेशनों पर इस प्रकार के कार्यक्रम शुरू हो गए हैं । इस प्रकार की तकनीकों के विकास से रेडियो प्रसारण से सम्भाषण की ओर अग्रसर हुआ है । अर्थात् रेडियो अब एक-तरफा संवाद का माध्यम नहीं रहा है बल्कि इसमें प्रसारणकर्त्ता और श्रोता के बीच लगातार सम्पर्क होता रहता है । रेडियो के इस बदले स्वभाव को देखते हुए प्रसारण में बोलचाल की शैली को बढ़ावा दिया गया है ।

बोलचाल, की शैली का तात्पर्य है कि रेडियो पर प्रसारित कार्यक्रमों की भाषा सरल, सहज और सम्प्रेष्य होती है । बोलचाल की शैली का यह अर्थ कतई नहीं है कि भाषा के मानक स्वरूप, शालीनता और सौष्ठव का ध्यान न रखा जाए । रेडियो पर बोलने की शैली का इस्तेमाल किया जाता है, पुस्तकीय शैली का नहीं । इसलिए बोलचाल की शैली का भी एक

मानक रूप होता है जो उस भाषा के मानक रूप के अनुरूप होता है । मसलन यदि हिन्दी में कोई कार्यक्रम चल रहा है तो बेशक सरल और बोलचाल के शब्दों का इस्तेमाल कीजिए परन्तु प्रयत्न कीजिए कि भाषा का स्वरूप, संगठन और सौन्दर्य बिखरे नहीं । जनभाषा का सार्थक, सर्जनात्मक और रचनात्मक प्रयोग ही रेडियो के कार्यक्रमों को जीवंत और जानदार बनाता है ।

15.3.3 लचीला माध्यम

कमरा हो, मैदान हो, खेत हो, सड़क हो, रेलगाड़ी पर सवार हों, गाड़ी चला रहे हों, पुस्तक पढ़ रहे हों, कम्प्यूटर चला रहे हों आप हर जगह, हर मौसम में हर स्थिति में रेडियो सुन सकते हैं । यही रेडियो का लचीलापन है । अब सवाल यह उठता है कि रेडियो की इस विशिष्टता से उसके प्रसारण पर क्या प्रभाव पड़ता है । वस्तुत: रेडियो के कार्यक्रम का स्वरूप और लक्षण रेडियो सेटों में होने वाले परिष्कार से भी प्रभावित हुआ है । खासकर ट्रांजिस्टर सेटों के आविष्कार ने तो रेडियो के स्वभाव और चरित्र को बिलकुल ही बदल दिया है ।

रेडियो अपने इस लचीलेपन के कारण श्रोताओं का आत्मीय साथी बन गया । यह लोगों के अकेलेपन को दूर करने लगा, बोरियत से उबारने लगा । ध्वनि-माध्यम होने के कारण ही इसका लचीलापन बढ़ा है । इसके लचीलेपन को देखते और समझते हुए ही रेडियो पर कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं ।

कार्यक्रम निर्माण की दृष्टि से भी यह लचीला माध्यम है । इसके लिए कोई कार्यक्रम करने के लिए कम से कम उपकरणों के साथ जल्द से जल्द पहुँचा जा सकता है । प्रसारणकर्त्ता को अपने साथ टेपरिकार्डर ले जाना होता है । घटना-स्थल पर वह कार्यक्रम रिकॉर्ड करता है और स्टुडियो से उसे प्रसारित कर देता है ।

15.3.4 वर्तमान का बोध

रेडियो के लचीलेपन के साथ ही समकालीनता और वर्तमान बोध का मुद्दा जुड़ा हुआ है। तात्कालिकता इसकी एक खासियत है । इसीलिए इसमें प्रसारण के दौरान वर्तमान काल का प्रयोग किया जाता है । अपनी इसी विशेषता के कारण रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम ताजा और नवीन प्रतीत होता है । अपने लचीलेपन और तात्कालिकता के कारण ही कोई भी खबर सबसे पहले रेडियो पर ही आती है । मछुआरों को समुद्र में न जाने की चेतावनी जैसी आपातकालीन सूचनाओं के लिए रेडियो सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम है ।

बोध प्रश्न-2

1. रेडियो प्रसारण में किन पाँच तत्वों का ध्यान रखा जाता है?
2. ध्वनि माध्यम की सीमा क्या है?
3. रडियो कल और आज में क्या फर्क है?
4. रेडियो के लचीलेपन से आप क्या समझते हैं?
5. रेडियो की तात्कालिकता से क्या तात्पर्य है?

15.4 रेडियो और श्रोता

श्रोता के अभाव में रेडियो की कल्पना ही नहीं की जा सकती । रेडियो भी अपने श्रोताओं के लिए ही कार्यक्रम तैयार करता है ।

15.4.1 रेडियो क्यों सुना जाता है?

रेडियो के प्रसारण को नियमित और नियंत्रित करने में इस प्रश्न की अहम भूमिका है कि लोग रेडियो क्यों सुनते हैं? रेडियो का सारा का सारा प्रसारण इसी प्रश्न के उत्तर पर आधारित है ।

मुख्य रूप से लोग रेडियो निम्नलिखित कारणों से सुनते हैं-

1. मनोरंजन के लिए
2. सूचना प्राप्त करने के लिए
3. शिक्षा के लिए
4. नेपथ्य-शोर के लिए
5. अपनत्व का महौल बनाने के लिए
6. 'मूड' ठीक करने के लिए
7. आराम करने के लिए
8. जड़ता को तोड़ने के लिए

जब टेलीविजन आया तो लोग कहने लगे कि रेडियो की मौत निश्चित है । शुरू में ऐसा जरूर लगा कि रेडियो की लोकप्रियता समाप्त होती जा रही है । परन्तु ऐसा हुआ नहीं क्योंकि रेडियो श्रोताओं के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर ही अपना कार्यक्रम बनाता है । रेडियो आज भी इसलिए लोकप्रिय है क्योंकि उसमें मनुष्य की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता है । वह श्रोता की जरूरतों को ध्यान में रखता है, वह उसका मनोरंजन करता है, उसके मूड का ख्याल रखता है और सहभागिता का अवसर देता है । वह जन-जन तक सूचना पहुँचाता है, उन्हें शिक्षित करता है और उनका मनोरंजन करता है ।

15.4.2 मनोवैज्ञानिक पहलू

रेडियो के कार्यक्रम श्रोताओं की मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करते हैं । श्रोता कब क्या सुनना चाहता है, इसका रेडियो कार्यक्रमों में खास ध्यान रखा जाता है । सुबह-सुबह आप एफ.एम. कार्यक्रम सुनिए । इसमें संगीत, सूचना और समाचार का ऐसा रंग-बिरंगा कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है कि श्रोता मुग्ध हो जाते हैं । मधुर चटकदार गाने, ट्रेन के आगमन-प्रस्थान की सूचना, आम नागरिक जीवन से जुड़ी सामान्य सीख जिसे हम अक्सर नजर अंदाज कर देते हैं । शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का इसमें इतना सुन्दर सामंजस्य होता है कि मन मुग्ध हो जाता है ।

इसी प्रकार, अलग-अलग श्रोताओं को ध्यान में रखकर भी कार्यक्रम बनाए जाते हैं । मसलन, महिलाओं, के लिए, बच्चों के लिए, वयस्कों के लिए, किसानों के लिए, श्रर्मिकों के लिए

आदि-आदि । इन कार्यक्रमों के निर्माण में उनकी जरूरतों और मनोवैज्ञानिकता का तो ध्यान रखा जाता ही है, साथ ही साथ इस बात का भी ख्याल रखा जाता है कि वे किस समय कार्यक्रम सुनना चाहेंगे । मसलन, गृहणियाँ दिन में कार्यक्रम सुनना चाहेंगी, किसान शाम को रेडियो सुनना चाहेगा, बच्चे भी शाम के वक्त रेडियो सुनना चाहेंगे । श्रोता-आधारित कार्यक्रम में प्रसारण-समय का विशेष ख्याल रखा जाता है ।

15.4.3 श्रोता और उसकी कल्पनाशीलता

रेडियो कार्यक्रम की सफलता श्रोताओं की कल्पनाशीलता के सार्थक और सर्जनात्मक प्रयोग पर आश्रित है । रेडियो के कार्यक्रम श्रोता समुदाय की भावना और कल्पना को स्पर्श करता है । इसमें मानव की सोचने की शक्ति का भरपूर उपयोग किया जाता है । इसमें उसकी कल्पनाशीलता को उत्प्रेरित और उद्‌बोधित किया जाता है । इससे श्रोता की कल्पनाशीलता में रचनात्मकता आ जाती है । शब्द, संगीत और ध्वनि प्रभावों के मिले-जुले प्रयोग से श्रोताओं की कल्पना-शक्ति को उदबुद्ध किया जाता है ।

प्रेषक का संदेश शब्दों के जरिए श्रोता तक पहुँचता है जिसे श्रोता ग्रहण करता है और मन में उसके चित्र बनने लगता है ।

हरेक श्रोता में उसकी कल्पनाशीलता के अनुरूप अलग-अलग चित्र बनते हैं । इस प्रकार, रेडियो से प्रत्येक श्रोता तक सम्प्रेषण जनसंचार अलग-अलग ढंग से होता है । परन्तु अच्छा रेडियो कार्यक्रम वह है जो कम से कम कल्पनाशील श्रोता को भी पसंद आए । इसके लिए प्रसारणकर्त्ता को उपयुक्त शब्द, संगीत और ध्वनि-प्रभाव का इस्तेमाल करना होता है ।

15.5 शब्द, संगीत मौन और ध्वनि-प्रभाव

रेडियो में शब्द, संगीत, मौन और ध्वनि-प्रभावों के सहारे प्रसारण किया जाता है ।

15.5.1 उच्चरित शब्द

रेडियो पर बोले हुए शब्द सुनाई देते हैं । उसमें देखने या पाटने के लिए कुछ नहीं होता है । उच्चरित शब्द की विशेषताओं और सीमाओं की चर्चा 'श्रव्य माध्यम' शीर्षक भाग में किया जा चुका है । वहाँ हमने आपको बताया था कि रेडियो एक श्रव्य माध्यम है और वह ध्वनि का माध्यम है । ध्वनि का माध्यम होने के कारण शब्द उच्चरित रूप में श्रोताओं तक पहुँचते हैं । इसलिए रेडियो के प्रत्येक कार्यक्रम में उच्चारण का विशेष ख्याल रखा जाता है । भाषा का प्रयोग करते समय इस बात का खास ख्याल रखा जाता है कि इसके उच्चारण में वाचक या उद्‌घोषक को कोई परेशानी न हो और उसकी जीभ न लड़खड़ाए ।

15.5.2 वाचक या उद्‌घोषक की भूमिका

रेडियो प्रसारण में वाचक या उद्‌घोषक की भूमिका प्रमुख होती है । वह कार्यक्रम की धुरी होती है । रेडियो के हर कार्यक्रम के लिए स्क्रिप्ट लिखी जाती है और वाचक अपनी या दूसरे की लिखी स्क्रिप्ट माइक्रोफोन के सामने 'पढ़ता' है । उसके स्क्रिप्ट 'पढ़ने' पर कार्यक्रम का

काफी दारोमदार होता है । रेडियो प्रसारण में यह 'पढ़ना' आम पढ़ने से भिन्न होता है । यह 'बोले हुए' के निकट होता है । यह भाषण या वाचन नहीं होता । इसे 'बोलना' होता है । स्क्रिप्ट पढ़ते वक्त भी वाचक को इस प्रकार बोलना चाहिए कि लगे कि वह अपने सामने रखकर कुछ पढ़ नहीं रहा बल्कि खुद बोल रहा है । अगर स्क्रिप्ट दूसरे की लिखी हुई है तो वाचक को अपनी अभिव्यक्ति पद्धति और शैली के अनुरूप स्क्रिप्ट में थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर लेना चाहिए।

रेडियो पर प्रसारित संदेश श्रोताओं तक बोले हुए शब्द के माध्यम से पहुँचते हैं । इस संदेश की भाषा को श्रोताओं तक पहुँचने से पहले दो स्तरों से गुजरना पड़ता है । पहला स्तर स्क्रिप्ट का होता है और दूसरा स्तर वाचक, उद्घोषक या पात्र के स्तर का होता है । वाचक अपने स्वर के उतार-चढ़ाव और मोहन शक्ति से श्रोता को बाँधकर रखता है । वाचक का 'स्वर' मात्र एक स्वर नहीं होता बल्कि 'स्वर' किसी कार्यक्रम-विशेष या कभी-कभी किसी खास रेडियो स्टेशन का प्रतीक बन जाता है । रेडियो खोलते ही पता चल जाता है कि एफ.एम.चल रहा है या सीलोन रेडियो । कहने का तात्पर्य यह है **कि उद्यरित शब्द मानवीय उपस्थिति, संस्पर्श, संवेदना और परिवेश की अनुभूति कराते हैं ।** नाटक में पात्रों, स्थितियों, हाव-भाव, परिवेश सब कुछ का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

15.5.3 संगीत

उच्चरित शब्द के साथ-साथ रेडियो प्रसारण में संगीत का भी विशेष महत्व होता है । संगीत एक माहौल बनाता है । संगीत रेडियो का स्पंदन है, धड़कन है, प्राण है । रेडियो पर संगीत की प्रमुख भूमिकाएँ इस प्रकार हैं-

1. मनोरंजन के गीत-संगीत के कार्यक्रम
2. रेडियो स्टेशन और कार्यक्रम की पहचान धुन
3. रेडियो नाटक में संगीत का महत्व

अगर यह कहा जाए कि रेडियो सुना ही जाता है, गीत-संगीत के कार्यक्रमों के लिए तो अतिशयोक्ति न होगी । रेडियो के जिन स्टेशनों से गीत-संगीत के जानदार कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, जनता के बीच सर्वाधिक लोकप्रिय होते हैं । रेडियो सिलोन, विविध भारती, एफ.एम. की लोकप्रियता का राज यही है । इसलिए रेडियो प्रसारण में गीत-संगीत के कार्यक्रमों को प्रमुखता दी जाती है । आजकल इन गीतों के कार्यक्रमों के जरिए रेडियो जन-जन तक शिक्षा और सूचना पहुँचाने जैसा सामाजिक दायित्व भी पूरा कर रहा है । आज वे ही कार्यक्रम सफल हो रहे हैं जिसमें गीत-संगीत का पुट है । अंततः रेडियो मनोरंजन का एक साधन है । परन्तु इसके साथ-साथ इसे राष्ट्रीय विकास की दिशा में भी भूमिका निभानी होती है । रेडियो ये सारी भूमिकाएँ बखूबी निभा रहा है और इसका श्रेय काफी हद तक गीत-संगीत के कार्यक्रमों को जाता है । अलग से सूचना देने या जन-जन तक शिक्षा पहुँचाने में रेडियो बहुत सफल नहीं रहा है । इसलिए अब मनोरंजन के साथ सूचना और शिक्षा का समन्वय कर दिया गया है ।

रेडियो नाटक में संगीत की भूमिका असंदिग्ध है । दृश्य बदलने, पात्रों की मनःस्थति दर्शाने, खुशी, गम, परिवेश निर्माण के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है ।

5.5.4 मौन या पॉज

रेडियो में मौन या पॉज का सार्थक उपयोग किया जाता है । रेडियो है तो ध्वनि का माध्यम पर इसमें खामोश का भी एक विशेष अर्थ है । वह भी एक खास प्रकार का संदेश श्रोताओं तक पहुँचाता है । अगर मैं यह कहूँ कि रेडियो की खामोशी भी 'सुनी' जा सकती है तो यह आपको अजीब-सा लगेगा, किन्तु ऐसा होता है । रेडियो की खामोशी को महसूस करने के साथ-साथ सुना भी जाता है । यहाँ श्रोता अपनी कल्पनाशीलता के बल पर खामोशी का अर्थ निकालता है, मसलन अब यह कार्यक्रम समाप्त हुआ या फेर कोई दूसरा कार्यक्रम शुरू होने वाला है । एक ही कार्यक्रम में एक बात से दूसरी बात तक जाने के लिए क्षण-क्षण की खामोशी का सहारा लिया जाता है । समाचार वाचन करते समय समाचार वाचक अक्सर खामोशी का इस्तेमाल करते हैं । असल में खामोशी कौमा भी है, पूर्ण-विराम भी । लेखन में तो बलाघात के लिए अर्ध-विराम और विराम चिह्न दिखाई देते हैं और पाठक उसी के अनुसार उन्हें पढ़ता है और उनका अर्थ समझता हैं । रेडियो में काफी हद तक इस खामोशी का इस्तेमाल पूर्ण-विराम और अनुच्छेद परिवर्तन के लिए किया जाता है ।

रेडियो नाटक में इस खामोशी का रचनात्मक प्रयोग किया जाता है । खामोशी से स्थिति की भयावहता, डरावनी स्थिति, लाचारी, भावुकता आदि स्थितियों को प्रतीकित किया जाता है । आजकल हास्य कार्यक्रमों में बीच-बीच में खामोशी, हँसी और ताली की गड़गड़ाहट जैसे ध्वनि प्रभावों का प्रयोग किया जाता है । खामोशी के कारण हँसी और ताली की आवाज प्रमुखता से उभरती है और श्रोताओं पर बेहतर प्रभाव डालती है ।

15.5.5 ध्वनि प्रभाव

ध्वनि-प्रभाव रेडियो प्रसारण का एक प्रमुख हिस्सा है । इसका उपयोग नाटक, डॉक्युड्रामा, डॉक्युमेंन्ट्री, रूपक, आँखों देखा हाल और यहाँ तक कि समाचार में भी किया जाता है । रेडियो के लिए तैयार किए जाने वाले विज्ञापनों में भी ध्वनि प्रभावों का उपयोग किया जाता है ।

ध्वनि प्रभाव आम जीवन से ली गई ध्वनियाँ हैं । ये ध्वनियाँ इतनी आम हैं कि हर कोई इससे परिचित है, मसलन ट्रेन की आवाज़, चिड़ियों की चहचहाहट, दरवाजा खटखटाने की आवाज़, घोड़े की टाप, मोटर का हॉर्न, तेज हवा की ध्वनि, टेबल-कुर्सी खिसकाने की आवाज़, पटाखों की आवाज़, गोली की ध्वनि, पैरेड की ध्वनि, हवाई जहाज की आवाज़; रेडियो पर जब इन ध्वनियों का उपयोग परिवेश निर्माण के लिए किया जाता है तो इसे ध्वनि-प्रभाव कहते हैं । रेडियो के हर कार्यक्रम में ध्वनि प्रभाव का इस्तेमाल किया जाता है या किया जा सकता है । परन्तु रेडियो नाटक के लिए इसका विशेष महत्व है । इसके बिना रेडियो नाटक प्रसारित ही नहीं किया जा सकता ।

किसी स्थिति या परिवेश को श्रोताओं तक पहुँचाने के लिए ध्वनि प्रभावों का स्वतन्त्र रूप से भी इस्तेमाल किया जाता है और सहायक रूप में भी । ध्वनि प्रभाव से श्रोता के मन में किसी प्रकार का भ्रम या संशय नहीं पैदा होना चाहिए । इस भ्रम या संशय की स्थिति को

स्पष्ट करने के लिए अक्सर संवाद का सहारा लिया जाता है । मसलन, रेडियो पर 26 जनवरी का आँखों देखा हाल आ रहा हो और पृष्ठभूमि से बैंड की धुन आए । तब श्रोता को यह तो पता नहीं चलेगा कि यह बैंड किस सेना की टुकड़ी या बिग्रेड का है । इसे कमेंट्रेटर ही बताएगा कि कौन-सा ब्रिगेड उनके सामने से गुजर रहा है । कहने का तात्पर्य यह है कि कभी-कभी ध्वनि प्रभाव से स्थिति स्पष्ट नहीं होती और श्रोता के समक्ष सम्पूर्ण उपस्थिति करने के लिए संवाद का सहारा लेना पड़ता है । रेडियो नाटक में भी कई बार ध्वनि प्रभाव और संवाद से पूरा दृश्य उभारा जाता है ।

कभी-कभी ध्वनि प्रभाव इतने सशक्त, सटीक और प्रतीकात्मक होते हैं कि उसे पुष्ट करने के लिए किसी प्रकार के कथन या संवाद की आवश्यकता नहीं होती । ध्वनि प्रभाव को सशक्त, सार्थक और स्वतन्त्र बनाने के लिए जरूरी है कि प्रसंगानुकूल ध्वनि प्रभावों का इस्तेमाल किया जाए । इसके अलावा, देश और काल का भी ध्यान रखा जाना चाहिए ।

वस्तुत: ध्वनि प्रभाव का उपयोग परिवेश या वातावरण निर्माण के लिए किया जाता है। रंगमंचीय नाटक में साज-सज्जा, टेलीविजन में दृश्य (क्लोज अप, लांग शॉट) आदि के जरिए जो काम किया जाता है वहीं काम ध्वनि प्रभावों के माध्यम से रेडियो नाटक या डॉक्युमेंन्ट्री में कथा का विकास भी किया जाता है । ध्वनि प्रभावों के जरिए पात्रों के मनोभावों को भी वाणी दी जाती है । इन्हीं सब कारणों से रेडियो में ध्वनि प्रभाव का अलग व्यक्तित्व निर्मित हो गया है। इससे परिचय प्राप्त किए बिना रेडियो कार्यक्रम निर्माण की दिशा में अग्रसर नहीं हुआ जा सकता ।

बोध प्रश्न-3

1. श्रोता रेडियो क्यों सुनता है?
2. रेडियो में उच्चारण का क्या महत्व है?
3. रेडियो प्रसारण में संगीत की भूमिका क्या है?
4. रेडियो प्रसारण में खामोशी का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है?
5. रेडियो के संदर्भ में ध्वनि प्रभाव का क्या अर्थ है?

15.6 रेडियो कार्यक्रम निर्माण

आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से देश के शहरों, गाँवों और विदेशों में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं । रेडियो स्टेशन से श्रोताओं तक कार्यक्रम पहुँचने में प्रसारण को कई स्तरों और आयामों से गुजरना पड़ता है । इसे जानने के लिए आकाशवाणी की कार्य-प्रणाली से अवगत होना आवश्यक है ।

15.6.1 कार्यक्रम की योजना

आकाशवाणी से प्रसारित प्रत्येक कार्यक्रम योजनाबद्ध ढंग से तैयार किया जाता है । कार्यक्रम बनाते समय आकाशवाणी अपने 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' के आदर्श को सामने रखता है और इसमें इसकी प्रसारण आचार संहिता और प्रसारण-नीति का विशेष ख्याल रखा जाता है । प्रसारण-नीति और आचार संहिता का उल्लेख आगे किया जा रहा है ।

(क) प्रसारण नीति

1. राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को मजबूत करना
2. सामाजिक परिवर्तन
3. वैज्ञानिक रूझान का विकास
4. जनसंख्या नियंत्रण
5. ग्रामीण विकास
6. शिक्षा का प्रसार और प्रचार
7. कला-संस्कृति का विकास
8. विकासोन्मुख कार्यक्रम
9. पर्यावरण संबंधी शिक्षा
10. कमजोर और वंचित वर्गों का विकास
11. नागरिक सुरक्षा ।

(ख) प्रसारण आचार संहिता

1. भारतीय संविधान की अवमानना में कुछ न कहा जाए
2. विधायिका और न्यायपालिका की किसी प्रकार की आलोचना न की जाए
3. किसी भी धर्म या सम्प्रदाय पर कोई आक्षेप न लगाया जाए
4. अश्लील भाषा का प्रयोग न किया जाए
5. मित्र देशों की आलोचना न की जाए
6. हिंसा बढ़ाने और कानून-व्यवस्था बिगाड़ने वाले समाचार या अन्य कार्यक्रम नहीं प्रसारित किए जाएँ ।

आकाशवाणी से प्रसारित सारे कार्यक्रमों में इस प्रसारण-नीति और आचार संहिता का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता है । इस कसौटी पर खरा उतरने पर ही कोई कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है ।

इन कार्यक्रमों को जाँचने-परखने के लिए आकाशवाणी के केन्द्रों में सलाहकार समितियों का गठन किया जाता है । रेडियो स्टेशन का केन्द्र निदेशक इन समितियों का पदेन अध्यक्ष होता है । इसमें संस्कृति, शिक्षा, पर्यावरण आदि से जुड़े विशेषज्ञ सदस्य होते हैं । इसके अलावा, इसमें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का एक अधिकारी भी सदस्य के रूप में शामिल होता है । ग़ैर-सरकारी सदस्यों का कार्यकाल दो वर्षों का होता है । ये समितियाँ आकाशवाणी की कार्य-प्रणाली के संबंध में सुझाव देती हैं ।

15.6.2 कार्यक्रम की प्रस्तुति

आकाशवाणी के प्रत्येक केन्द्र से भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। प्रत्येक केन्द्र अपनी कार्यक्रम-तालिका खुद तैयार करता है । वर्ष में चार बार तीन-तीन महिने के लिए कार्यक्रम-तालिका बनाई जाती है । कार्यक्रम-तालिका बनाने की जिम्मेदारी कार्यक्रम अधिकारी की होती है । यह तालिका तीन महीने पहले बना ली जाती है । मसलन अप्रैल से

जून तक की प्रसारण-तालिका जनवरी में तैयार कर ली जाती है । तालिका तैयार होने पर केन्द्र निदेशक इसे मंजूरी दे देता है । कार्यक्रम तालिका में कार्यक्रम का नाम, शीर्षक, विधा, उद्देश्य, प्रसारण समय, अवधि आदि पूरा ब्योरा दिया जाता है ।

केन्द्र निदेशक द्वारा कार्यक्रम-तालिका को मंजूरी प्राप्त होने के बाद कलाकारों और प्रस्तुतकर्त्ताओं को अनुबंध-पत्र भेजा जाता है । अनुबंध-पत्र में कार्यक्रम का नाम, प्रसारण तिथि, रिकॉडिंग तिथि तथा पारिश्रमिक का उल्लेख रहता है ।

15.6.3 प्रसारण के विभिन्न स्रोत

आकाशवाणी प्रसारण के लिए कई स्रोतों का इस्तेमाल करता है । आकाशवाणी के केन्द्रों में काम करने वाले कर्मचारी कई प्रकार के कार्यक्रम तैयार करते हैं, मसलन रेडियो नाटक, डॉक्युमेंन्ट्री, डॉक्युड्रामा, फीचर आदि । इसके अलावा, प्रायोजित कार्यक्रमों के तहत आकाशवाणी के साथ-साथ निजी एजेंसियाँ भी कार्यक्रम तैयार करती हैं । इसके अलावा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अन्तर्गत विदेशों से प्राप्त कार्यक्रम भी रेडियो पर प्रसारित किए जाते हैं ।

15.7 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ

आकाशवाणी का संजाल पूरे देश में फैला हुआ है । इसके प्रसारण केन्द्र देश के हर हिस्से में और हर कोने में स्थापित हैं । आइए, इन प्रसारण सेवाओं की जानकारी प्राप्त की जाए ।

15.7.1 राष्ट्रीय प्रसारण सेवा

राष्ट्रीय प्रसारण सेवा की शुरुआत 18 मई, 1988 को की गई । इसका मुख्यालय दिल्ली में स्थित है । यहाँ से प्रसारित कार्यक्रम देश के सभी आकाशवाणी केन्द्र प्रसारित करते हैं । यहाँ से हिन्दी और अंग्रेजी के कार्यक्रम तैयार और प्रसारित किए जाते हैं । इन कार्यक्रमों में राष्ट्रीय अखण्डता और एकता के साथ-साथ भारत की सांस्कृतिक बहुलता का भी ध्यान रखा जाता है ।

15.7.2 क्षेत्रीय प्रसारण सेवा

देश के अलग-अलग प्रांतों में आकाशवाणी के केन्द्र स्थापित हैं । ये केन्द्र राष्ट्रीय प्रसारण सेवा के कार्यक्रम प्रसारित करने के साथ-साथ क्षेत्र-विशेष की आवश्यकताओं और प्रकृति को ध्यान में रखते हुए विशिष्ट कार्यक्रम तैयार करते हैं । इन रेडियो स्टेशनों से क्षेत्रीय भाषा में भी कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं । क्षेत्र-विशेष की संस्कृति और परम्परा को ध्यान में रखकर इन केन्द्रों में कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं । इन केन्द्रों से कृषि, ग्राम विकास, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण आदि विषयों पर विशेष रूप से कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं ।

15.7.3 विविध भारती

जनता की रुचि, जरूरत और रेडियो माध्यम की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए विविध भारती सेवा की शुरूआत की गई । श्रोताओं की प्रतिक्रिया से यह महसूस किया गया है कि लोगों को एक ऐसे प्रसारण की बेहद जरूरत है जो उनका मनोरंजन कर सके । इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर विविध भारती की स्थापना की गई । विविध भारती सेवा में गीत-संगीत के कार्यक्रम, नाटक, प्रहसन आदि मनोरंजन से भरपूर कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं ।

विविध भारती से विज्ञापन सेवा भी प्रसारित की जाती है । इसमें प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं । प्रसारित कार्यक्रम या तो निजी कम्पनियों दारा तैयार किया जाता है या विविध भारती द्वारा तैयार कार्यक्रमों को व्यावसायिक कम्पनियाँ या एजेन्सियाँ प्रसारित करती हैं। परन्तु शराब, सिगरेट जैसी मादक वस्तुएँ बनाने वाली कम्पनियाँ किसी कार्यक्रम की प्रायोजक नहीं बन सकती हैं ।

15.7.4 एफ.एम. चैनल

महानगरों में शुरू किए गए एफ.एम. चैनल ने रेडियो कार्यक्रमों को एक नया व्यक्तित्व प्रदान किया है । आधुनिक जनसंचार माध्यमों (खासकर टेलीविजन) के आगमन से रेडियो के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा था । केबल नेटवर्क और सैटेलाइट चैनल आने के बाद तो सारी दुनिया टेलीविजन में सिमट कर रह गई । महानगरों में रेडियो सुनने वाले लोगों में कमी आई । खासकर युवा वर्ग रेडियो से अलग हटने लगा । इन सारी स्थितियों को देखते हुए आकाशवाणी के एफ.एम. चैनल की शुरुआत की गई । यह चैनल अपने मकसद में कामयाब रहा है । इससे रेडियो की लोकप्रियता फिर से स्थापित हुई और लोग रेडियो सुनने लगे हैं ।

15.7.5 विदेश प्रसारण सेवा

आकाशवाणी की विदेश प्रसारण सेवा 16 विदेशी भाषाओं और 10 भारतीय भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करती है । जनरल ओवरसीज सर्विस, उर्दू सर्विस तथा हिन्दी सर्विस इसके प्रमुख अंग हैं । इस प्रसारण सेवा का उद्देश्य भारतीय संस्कृति, चिंतन और दृष्टिकोण से सारी दुनिया को परिचित कराना है । अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर यह भारत की राय लोगों के सामने रखता है । विदेशी श्रोताओं के साथ-साथ ये कार्यक्रम विदेशों में रह रहे भारतीय और भारतीय मूल के श्रोताओं को सम्बोधित होता है ।

15.7.6 विभिन्न एकांश

आकाशवाणी विभिन्न यनिटों/एकांशों में बंटा होता है । प्रत्येक यूनिट की अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ होती है । आकाशवाणी में कार्यरत एकांशों में प्रमुख हैं-समाचार एकांश, श्रोता अनुसंधान एकांश, ध्वनि प्रतिलिपि तथा कार्यक्रम विनिमय सेवा, निरीक्षण एकांश, प्रशिक्षण संस्थान आदि अपना-अपना कार्य करते हैं और आकाशवाणी को मजबूती प्रदान करते हैं ।

समाचार एकांश का मुख्य जिम्मा समाचार प्रसारित करना होता है । यह 24 घंटे कार्य करता है । यहाँ देश-विदेश से समाचार प्राप्त होते हैं और फिर इन्हें रेडियो समाचार में ढालकर

आप तक पहुँचाया जाता है । श्रोताओं की प्रतिक्रिया जानना, रेडियो और श्रोता के बीच सम्पर्क स्थापित करना और श्रोताओं का सर्वेक्षण, विश्लेषण और मूल्याँकन करने का काम श्रोता अनुसंधान एकांश में किया जाता है । श्रोता संबंधी अनुसंधान से प्राप्त आँकड़ों और निष्कर्षों के आधार पर कार्यक्रम में फेर-बदल किया जाता है ।

इसके अलावा, कार्यक्रम अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियों और तकनीकी आधिकारियों को आकाशवाणी के कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था होती है । नए कर्मचारियों और अधिकारियों को रेडियो संबंधी मूलभूत जानकारी दी जाती है । उन्हें रेडियो की विभिन्न विधाओं और कार्यक्रमों से परिचित कराया जाता है । यहाँ सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है । इसके अलावा, यहाँ विभिन्न प्रकार की कार्यशाला भी आयोजित की जाती हैं और कार्यक्रम तैयार करने वाले कर्मचारियों तथा अधिकारियों को नए रुझानों, प्रवृत्तियों और प्रगति से अवगत कराया जाता है ।

15.8 आकाशवाणी की तकनीकी व्यवस्था

किसी भी कार्यक्रम को आकाशवाणी केन्द्र से श्रोताओं के रेडियो सेट तक पहुँचाने के लिए कई प्रकार की तकनीकी व्यवस्था करनी होती है । पहले कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग की जाती है, फिर उसे आकाशवाणी केन्द्र के स्टूडियो से प्रसारित किया जाता है । कण्ट्रोल रूम, ट्रांसमीटर, सैटेलाइट, रिसीविंग सेन्टर आदि के जरिए कार्यक्रम रेडियो सेटों तक पहुँचते हैं ।

रेडियो प्रसारण एक लम्बी यांत्रिक प्रक्रिया है; हालांकि यह सब क्षण-भर में हो जाता है। आकाशवाणी केन्द्रों से ध्वनि तरंगें चलती हैं जिन्हें विद्युत तरंगों में परिवर्तित कर हवा में उछाला जाता है जिसे ग्रहण कर सैटेलाइट उसे चारों ओर फैला देता है । हमारे घर में रखे रेडियो सेट विद्युत तरंगों को ग्रहण करते हैं और फिर उसे ध्वनि तरंगों में बदल देते हैं और हम आकाशवाणी के स्टुडियों से प्रसारित हो रहे कार्यक्रम को सुनने लगते हैं ।

15.8.1 रिकॉर्डिंग स्टुडियो

रेडियो के संदर्भ में स्टुडियो उस कक्ष को कहते हैं जहाँ रेडियो कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग और प्रसारण होता है । रेडियो के अधिकांश कार्यक्रम पहले से रिकॉर्ड होते हैं । स्टुडियो साउंड-प्रूफ होता है ताकि बाहर से किसी प्रकार की आवाज स्टुडियो के अन्दर नहीं आ सके । इसके अलावा, स्टुडियो का निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि आवाज उसमें गूँजे नहीं । इसी उद्देश्य से स्टुडियो के अन्दर की दीवारों पर ध्वनि-निरोध सामग्री लगी होती है ।

जरूरत के मुताबिक रिकॉर्डिंग स्टुडियो अलग-अलग प्रकार के होते हैं और उनके आकार तथा बनावट में भी अन्तर होता है । जैसे, वार्ता-कक्ष के दो हिस्से होते हैं । एक हिस्से से प्रोडयूसर वार्ताकार या वाचक को निर्देश देता है । इस हिस्से को निर्देशन-कक्ष के नाम से जाना जाता है । इसमें रिकॉर्डिंग मशीन होती है । इसमें एक कंसोल रहता है जिसमें लगे स्विच (फेडर) को उठाते ही या ऊपर की ओर खिसकाते ही बूथ की मशीनों का सम्पर्क वार्ताकार के माइक से जुड़ जाता है । प्रोडयूसर हाथ से इशारा करता है और वार्ताकार वार्ता की स्क्रिप्ट पढ़ना शुरू कर देता है । आलेख पढ़ने के लिए वार्ताकार को गत्ते की तख्तियाँ उपलब्ध कराई

जाती हैं । हर पृष्ठ को वार्ताकार अलग-अलग तख्तियों पर लगा देता है और एक पृष्ठ पढ़ने के बाद उसे बगल में रखता है । इससे कागज के उड़ने या फड़फड़ाने की आवाज नहीं होती । हाँ ! वार्ता शुरू होने से पहले वार्ता की आवाज का स्तर जाँच लिया जाता है ।

नाटक और संगीत की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बड़े स्टुडियों की जरूरत होती है। नाटक के लिए स्टुडियो में ध्वनि प्रभाव पैदा करने की सामग्री भी उपलब्ध होती है । संगीत के लिए भी बड़े स्टुडियो की जरूरत होती है पर इस स्टुडियो की दीवारों पर ध्वनि-निरोधक सामग्री पूरी तरह नहीं लगाई जाती । कहीं-कहीं प्लास्टर भी किया जाता है । इससे संगीतज्ञ का स्वर और वाद्य की धुन गूँजती है जिससे उसका प्रभाव बढ़ जाता है ।

15.8.2 प्रसारण स्टुडियो

रिकॉर्डिंग रूम के समान प्रसारण-कक्ष भी साउंड-प्रूफ होता है और ध्वनि-निरोधी होता है। इसमें उद्घोषक के लिए माइक्रोफोन, टेप डेक, टर्न टेबल, कॉम्पेक्ट डिस्क (सी.डी.), प्लेयर के संचालन के लिए बटन (फेडर) को ऊपर ले जाने पर संबंधित मशीन चालू हो जाती है । उद्घोषक कार्यक्रम की जरूरत के अनुसार माइक्रोफोन, सी.डी., प्लेयर आदि का स्विच (फेडर) ऑन करके कार्यक्रम शुरू करता है । जिस आवाज को वह खत्म करना चाहता है उसका फेडर वह नीचे कर देता है । अब स्टुडियो में फोन, हेडफोन की भी व्यवस्था हो गई है । फोन-इन जैसे कार्यक्रमों को रिकॉर्ड करने और प्रसारित करने के लिए इस प्रकार की व्यवस्थाएँ की गई हे।

15.8.3 नियंत्रण कक्ष (कण्ट्रोल रूम)

प्रसारण कक्ष से आकाशवाणी से बाहर कार्यक्रम प्रसारित करने के क्रम में आवाज कंट्रोल रूम (नियंत्रण कक्ष) से होकर गुजरती है । यहां पर आवाज़ को एक स्तर पर संतुलित किया जाता है और उसे शक्तिशाली बनाकर ट्रांजिस्टर तक भेजा जाता है । वस्तुत: कंट्रोल रूम अलग-अलग स्टुडियो से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को कार्यक्रम की तालिका के अनुसार बारी-बारी से प्रसारण चैनल से जोड़ता रहता है । जैसे किसी एक स्टुडियो से उद्घोषक ने कहा, 'ये आकाशवाणी का जयपुर केन्द्र है । अब आप समाचार सुनेंगे ।' कंट्रोल रूम में बैठे इंजीनियर ने अभी तक प्रसारण चैनल में उद्घोषक को स्टुडियो में जोड़ रखा था । घोषणा होने के बाद वह समाचार-कक्ष से ट्रांजिस्टर का संपर्क जोड़ देता है । इस प्रकार, श्रोता निरन्तर एक के बाद एक कार्यक्रम सुनते रहते हैं ।

15.8.4 ट्रांसमीटर

ट्रांसमीटर 'ट्रांसमिट' शब्द से बना है । ट्रांसमिट का मतलब है भेजना या प्रेषण तथा ट्रांसमीटर का अर्थ हुआ भेजने वाला या प्रेषक । ट्रांसमीटर कण्ट्रोल रूप से प्राप्त आवाज को विद्युत-तरंगों में बदलकर चारों दिशाओं में फैला देते हैं । इन विद्युत तरंगों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाता है-

1. मीडियम वेव

2. शॉर्ट वेव

3. एफ.एम

यह विभाजन वाहक रेडियो तरंगों की गति पर आधारित होते हैं ।

प्रसारण दो प्रकार से किया जाता है-(1) A.M. (Amplitude Modulation) और (2) F.M. (Frequency Modulation) । ए.एम. और एफ.एम. दोनों ही प्रकार के प्रसारण का जरिया विद्युत-चुम्बकीय तरंगें होती हैं । ए.एम. प्रसारण एफ.एम. से ज्यादा दूर जा सकता है । ए.एम. की तरंगें ऊँची-नीची चलती हैं । जबकि एफ.एम. की तरंगें एक पंक्ति में चलती हैं । ये तरंगे कम दूरी तक जाती हैं पर ये अन्य आवाज़ों से बाधित नहीं होती । अत: इसका प्रसारण साफ होता है और रेडियो पर कोई शोर नहीं रहता ।

15.9 सारांश

इस इकाई में रेडियो प्रसारण के सिद्धांत की चर्चा की गई है । रेडियो जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है । जनसंचार के सम्प्रेषण सिद्धांत तो इस पर लागू होते हैं परंतु रेडियो माध्यम की अपनी विशिष्टता के कारण इसमें प्रसारण के लिए माध्यमानुसार परिवर्तन करना होता है ।

रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त पर विचार करने से पहले यह जानना जरूरी है कि लोग रेडियो क्यों सुनते हैं? असल में रेडियो की लोकप्रियता का कारण इसकी अपनी विशेषता है अपनी श्रव्यता, लचीलेपन और जीवंतता के कारण रेडियो जन-जन का माध्यम बन जाता है रेडियो में श्रोताओं के मनोविज्ञान का ध्यान रखा जाता है इसी कारण जनसंचार-विस्फोट के इस युग में भी रेडियो का अस्तित्व सुरक्षित है ।

रेडियो ध्वनि का माध्यम है और इसे 'आवाज की दुनियों' के नाम से जाना जाता है शब्द' संगीत' मौन और ध्वनि प्रभाव के जरिए इस आवाज की दुनिया का निर्माण किया जाता है । रेडियो स्टेशन से श्रोताओं तक कार्यक्रम पहुंचाने के लिए आकाशवाणी योजनाबद्ध ढंग से कार्यक्रम का निर्माण करती है आकाशवाणी अपनी विभिन्न प्रसारण सेवाओं के जरिए श्रोताओं तक कार्यक्रम पहुंचाती है । आकाशवाणी से श्रोताओं तक कार्यक्रम पहुंचाने के लिए कई प्रकार की तकनीकी व्यवस्था करनी होती है ।

इन सभी पक्षों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की गई है आशा है कि इस इकाई को पढ़कर आप रेडियो प्रसारण के विविध पक्षों से परिचित हो चुके हैं । आपके समक्ष रेडियो प्रसारण के सभी पहलू स्पष्ट हैं इससे आपको रेडियो के लिए आलेख लेखन में मदद मिलेगी, ऐसी आशा है ।

15.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. जनमाध्यम : सम्प्रेषण और विकास, देवेन्द्र इस्सर, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली
2. जनसंचार : विविध आयाम, बृजमोहन गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. भारतीय प्रसारण : विविध आयाम, मधुकर गंगाधर, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली

15.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. जनसंचार के विभिन्न सम्प्रेषण सिद्धांतों का जिक्र करते हुए इसकी सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. रेडियो के प्रसारण सिद्धांत के आधारभूत तत्वों का विवेचन कीजिए ।
3. रेडियो की लोकप्रियता के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का उल्लेख कीजिए ।
4. रेडियो प्रसारण में शब्द, संगीत, मौन और ध्वनि-प्रभाव की भूमिका का विवेचन कीजिए।
5. आकाशवाणी से प्रसारण की विधि का विस्तार से परिचय दीजिए ।
6. आकाशवाणी की तकनीकी व्यवस्था का उल्लेख कीजिए ।

इकाई 16 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 रेडियो माध्यम की विशेषताएँ

16.3 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ

- 16.3.1 समाचार
- 16.3.2 समाचारों पर आधारित कार्यक्रम
  - (क) सामयिक वार्ताएं
  - (ख) संसद समीक्षा
  - (ग) परिचर्चाएँ
  - (घ) रेडियो ब्रिज
- 16.3.3 संगीत
- 16.3.4 विविध भारती
- 16.3.5 राष्ट्रीय चैनल
- 16.3.6 एफ एम चैनल
- 16.3.7 नाटक एवं रूपक
- 16.3.8 अन्य कार्यक्रम

16.4 रेडियो कार्यक्रमों के मार्गदर्शक सिद्धांत

16.5 आकाशवाणी कोड

16.6 रेडियो समाचार प्रसारण के मूल सिद्धांत

- 16.6.1 सत्यता
- 16.6.2 तात्कालिकता
- 16.6.3 निष्पक्षता व वस्तुनिष्ठा
- 16.6.4 विभिन्न राजनैतिक विचारों का समावेश
- 16.6.5 स्वतन्त्रता के साथ दायित्व
- 16.6.6 मानवीय सेवा
- 16.6.7 विकास गतिविधियों की जानकारी
- 16.6.8 घटनाओं की पृष्ठभूमि
- 16.6.9 संसद समाचार
- 16.6.10 चुनाव समाचार
- 16.6.11 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

16.7 व्यावहारिक सूत्र

16.7.1 संक्षिप्तता
16.7.2 भाषा की सरलता
16.7.3 भूल सुधार
16.8 सारांश
16.9 निबंधात्मक प्रश्न
16.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.0 उद्देश्य

रेडियो आज एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है । इस इकाई का उद्देश्य आपको यह बताता है कि देश में समाचारपत्रों एवं टेलीविजन का बड़ी तेजी से विस्तार कैसे हुआ और किस प्रकार रेडियो सस्ते सेटों और ट्रांजिस्टरों की उपलब्धता के कारण पढ़े-लिखे, अनपढों के लिए सूचना व मनोरंजन का लोकप्रिय माध्यम बन गया है ।

जनसंचार इस इकाई में हम आपको यह भी बताएंगे कि रेडियो माध्यम की क्या विशेषताएँ हैं और समाचार-पत्रों व टेलीविजनों के होते प्रविधि हुए भी इसकी पहुँच कितनी व्यापक है । इसी इकाई से आपको रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों के विभिन्न विधाओं का परिचय मिलेगा और यह भी आप जानेंगे कि रेडियो प्रसारणों के मूल सिद्धान्त क्या हैं । रेडियो प्रसारण का एक बड़ा हिस्सा समाचारों व समाचार पर आधारित कार्यक्रमों यानी सामयिक वार्ताओं और परिचर्चाओं का है । समाचारों का संकलन, सम्पादन और प्रसारण एक चुनौती भरा कार्य है पर यह काम बड़ा दिलचस्प, उमंगों से भरा भी है । आप यह जान पाएगे कि समाचार कक्ष में कार्य करते समय किन सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करना चाहिए ताकि आप किसी विवाद और झंझट में न फंसे । इसी संदर्भ में आपको हम यह भी बताएगे कि संसद के समाचार व समीक्षा तथा चुनाव एवं चुनाव परिणामों के प्रसारण में क्या-क्या सावधानियां बरती जानी चाहिए ।

16.1 स्तावना

आज की दुनिया में सूचना और मनोरंजन के मुख्य माध्यमों के रूप में समाचारपत्रों, रेडियो एवं टेलीविजन का बड़ी तेजी से विकास हुआ है । भारत में समाचारपत्रों का इतिहास दो सौ वर्ष से भी अधिक पुराना है । भारत में पहला समाचारपत्र बंगाल गजट जनवरी 1780 में निकला था । सन् 1997 में 41,705 समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की तुलना में 31 दिसम्बर, 1998 को पत्र-पत्रिकाओं कुल संख्या 43,828 थी । इनमें 4,890 दैनिक, 331 सप्ताह में दो अथवा तीन बार प्रकाशित होने वाले, 15,645 साप्ताहिक, 12,065 मासिक, 5,913 पाक्षिक, 3,127 त्रैमासिक, 383 वार्षिक और 1,474 द्विमासिक एवं अर्धवार्षिक प्रकाशन थे ।

1998 में लगभग 160 भाषाओं और बोलियों में समाचारपत्र प्रकाशित होते थे । (भारत 2000, वार्षिक संदर्भ ग्रंथ, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार का प्रकाशन विभाग, दिल्ली)

भारत में प्रसारण की शुराआत जुलाई, 1927 में हुई थी जबकि एक प्राइवेट कंपनी ने एक 1.5 किलोवाट का ट्रांसमीटर लगाया था । इसी कम्पनी ने एक महीने बाद कलकत्ता में दूसरा ट्रांसमीटर लगाया । अप्रैल, 1930 से भारत सरकार के नियन्त्रण में 'इंडियन स्टेट ब्राडकास्टिंग सर्विस' स्थापित की । उसके अन्तर्गत शुरू में प्राइवेट कम्पनी के दोनों ट्रांसमीटर ले लिए गए । 1934 में दिल्ली में तीसरा केन्द्र शुरू हुआ । दो वर्ष बाद 1936 में 'ऑल इण्डिया रेडियो' की स्थापना के साथ नियमित प्रसारण शुरू हुए । 1947 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो ऑल इण्डिया रेडियो के कुल छः केन्द्र थे । बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, लखनऊ एवं तिरूचिरापल्ली । विभाजित पूर्व भारत के तीन अन्य केन्द्र लाहौर, पेशावर एवं ढाका पाकिस्तान के हिस्से में आए । इस माध्यम की 53 वर्षों में कितनी प्रगति हुई है । इसी तथ्य से जाहिर है कि वर्तमान में प्रसारण केन्द्रों की कुल संख्या 198 हो गई । मीडियम वेब, शार्ट वेब, बी.एच.एफ (एफ.एम.) को मिलाकर कुल 310 ट्रांसमीटर थे । रेडियो प्रसारण कवरेज देश के 90 प्रतिशत क्षेत्र और 973 प्रतिशत जनसंख्या तक हो गया है । (सूचना और प्रसारण मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट 1999-2000) ।

टेलीविजन का उद्भव स्वतन्त्रता के बाद हुआ । प्रयोगात्मक सेवा के रूप में इसकी शुरुआत सितम्बर, 1959 में हुई थी । जबकि सप्ताह में केवल तीन दिन सीमित अवधि का प्रसारण होता था । 1965 से दूरदर्शन की नियमित सेवा शुरू हुई । 1970 के दशक के मध्य तक देशभर में केवल सात दूरदर्शन केन्द्र थे । 1976 में दूरदर्शन को आकाशवाणी से अलग करके पृथक संगठन बनाया गया । 1982 से इस माध्यम की उल्लेखनीय प्रगति हुई । सूचना और प्रसारण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 1999-2000 के अनुसार (31 दिसम्बर, 1999 की स्थिति के अनुसार) दूरदर्शन के 16 क्षेत्रीय केन्द्र कार्यरत थे और 20 चैनल चल रहे थे । उच्च शक्ति, कम शक्ति और बहुत कम शक्ति वाले ट्रांसमीटर तथा ट्रांसपोजर सबको मिलाकर दूरदर्शन के 1060 ट्रांसमीटर थे । दूरदर्शन के डी डी-1 चैनल की पहुँच तो 33 करोड़ लोगों तक थी । दूरदर्शन की देश में क्षेत्रफल के हिसाब से 72 प्रतिशत और जनसंख्या के हिसाब से 87 प्रतिशत तक पहुँच थी । निःसंदेह दूरदर्शन का विस्तार हाल में बड़ा तेजी से हुआ ।

दूरदर्शन के विस्तार के साथ टेलीविजन के चैनलों की शुरूआत हुई और 2000 के अंत तक देश में बीस से अधिक चैनल भारतीय जनता को विविध प्रसारण कार्यक्रम उपलब्ध करा रहे थे । इनमें अनेक धारावाहिक, फिल्मों पर आधारित कई कार्यक्रम और समाचार बुलेटिन भी शामिल हैं ।

अब भी समाचारपत्रों व दूरदर्शन के मुकाबले रेडियो प्रसारणों की पहुँच सर्वाधिक है । रेडियो की विशेषताओं की चर्चा हम बाद में करेंगे, रेडियो सही अर्थ में आम जनता का माध्यम है । आगे के पृष्ठों में हम आपको बताएंगे कि अन्य माध्यमों के मुकाबले रेडियो में क्या विशेषताएँ हैं और आम लोगों के लिए समाचार, सूचना व मनोरंजन का सबसे महत्व स्रोत किस प्रकार बना ।

16.2 रेडियो माध्यम की विशेषताएँ

रेडियो प्रसारण के सिद्धान्त समझने के पूर्व आपको जान लेना आवश्यक है कि रेडियो की क्या विशेषता है और रेडियो एवं समाचारपत्र तथा रेडियो व टेलीविजन में क्या अन्तर है ।

रेडियो की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सुना जाता है, श्रव्य माध्यम है । बटन दबाते ही श्रोता वायु तरंगों के माध्यम से रेडियो कार्यक्रम सुनने लगता है । रेडियो पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति, श्रोताओं को नहीं देख पाता और न ही श्रोता वक्ता या कार्यक्रम प्रस्तोता को देख पाते हैं । इसलिए रेडियो पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी बात श्रोता आसानी से समझ सकें । श्रोता को यह नहीं लगना चाहिए कि कोई कागज पर लिखा आलेख पढ़ रहा है । बातचीत करने की आवाज स्पष्ट और मधुर होनी चाहिए और बातचीत के ढंग में श्रोता को निकटता एवं अपनापन लगना चाहिए । आकाशवाणी टेलीविजन श्रव्य और दृश्य माध्यम है । इसमें ध्यान दृश्य पर या पात्रों के व्यक्तित्व, परिधान पर भी जाता है । रंगीन टेलीविजन की पर कार्यक्रम नयनाभिराम व मनमोहक लगते हैं ।

यह ध्यान रखने की बात है कि रेडियो पर कही गई बात पुन: नहीं सुनी जा सकती । वह एक ही बार में श्रोता को समझ में आनी चाहिए । अखबार के पाठक को अगर कोई समाचार समझ में नहीं आता तो वह दुबारा पढ़कर समझ सकता है पर रेडियो पर ऐसा संभव नहीं है ।

रेडियो की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि निर्धारित समय पर निर्धारित कार्यक्रम तत्काल सुना जा सकता है । अखबार पहुँचने की जैसे प्रतीक्षा करनी होती है वैसा रेडियो में नहीं करना पड़ता । रेडियो समाचार 24 घंटे सुने जा सकते है क्योंकि अब हर घंटे समाचार प्रसारित होते हैं । जाड़ा हो या बरसात, होली हो या दिवाली, हडताल हो या बंद, रेडियो कार्यक्रम सदैव उपलब्ध रहते हैं । पर अखबार दिन में एक बार ही निकलता है ।

एक अन्य विशेषता यह है कि रेडियो के कार्यक्रम या समाचार सुनने के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी नहीं है । समाचारपत्र पढ़ने के लिए पढ़ा-लिखा होना आवश्यक है । हमारे देश में जहाँ आधे से अधिक लोग निरक्षर हैं, रेडियो उनके लिए सूचना और मनोरंजन का सुविधाजनक माध्यम है ।

रेडियो टेलीविजन की तरह महंगा माध्यम नहीं है । आजकल लगभग सौ रुपये में भी छोटा सा ट्रांजिस्टर मिल जाता है । इस कारण रेडियो गरीब लोगों को भी सुलभ है । पान-बीड़ी की दुकानों और रेड़ीवालों तथा रिक्शाचालकों के पास भी रेडियो देखा जा सकता है । गाँवों व शहरों सभी जगह रेडियो देखे जा सकते हैं । अत: यह कहा जा सकता है कि रेडियो आम जनता तक पहुँचने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है । बिजली फेल हो जाने पर रेडियो या ट्रांजिस्टर बैटरी से चलाए जा सकते हैं । अत: मनोरंजन या सूचना प्राप्त करने में कभी बाधा नहीं पड़ती ।

रेडियो की एक और विशेषता यह है कि इसे आसानी से उठाकर कहीं भी ले जाया जा सकता है । टी वी तो घर में प्राय: एक जगह रखा रहता है । रेडियो सुनने के लिए अपना

कामकाज छोड़ने की जरूरत नहीं । रेडियो रिक्शा में चलते, कार में जाते, ट्रेन या हवाई जहाज में सफर करते सुना जा सकता है । खेत हो या खलिहान, ड्राइंग रूम हो या बाथरूम, पैदल घूमते हुए या बिस्तर में लेटे हुए रेडियो सुना जा सकता है । रेडियो अब सर्वत्र देखा जा सकता है । टेलीविजन के विस्तार के बावजूद रेडियो की उपयोगिता कम नहीं हुई है । क्योंकि उसे रखना जितना आसान है, कम खर्चीला है, सुलभ है, उतना टेलीविजन नहीं । देश में 31 दिसम्बर, 1999 में रेडियो क्षेत्रफल के हिसाब से 90 प्रतिशत क्षेत्र में और जनसंख्या के हिसाब से 97.3 प्रतिशत लोगों तक पहुँच गया है और सभी माध्यमों के मुकाबले इसका प्रभाव क्षेत्र काफी ज्यादा है । इसका विस्तार निरन्तर हो रहा है । देश में इस समय आकाशवाणी के 198 केन्द्र काम कर रहे हैं जिनमें से 185 पूर्ण सज्जित केन्द्र, 10 रिले केन्द्र और 3 विविध भारती के विज्ञापन प्रसारण सेवा केन्द्र हैं । आकाशवाणी के पास इस समय 310 ट्रांसमीटर हैं ।

16.3 आकाशवाणी की प्रसारण सेवाएँ

रेडियो से दिन-रात विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित होते हैं । कार्यक्रमों में संगीत, नाटक, रूपक, वार्ताएँ आदि है जिनका उद्देश्य श्रोताओं को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना है । रेडियो से समाचार सुनने वालो की संख्या काफी अधिक है ।

समाचारों के प्रेषण, संकलन व सम्पादन में बड़ी सावधानी बरती जाती है । जब प्रसार भारती की स्वायता की बात होती है तो उसका मुख्य अर्थ समाचार बुलेटिनों और समाचार आधारित कार्यक्रमों के बारे में बिना सरकारी अंकुश या सरकार की नाराजगी की परवाह किए बिना कार्य करना है क्योंकि संगीत, नाटक, रूपक, सामान्य वार्ताओं के प्रसारण पर सामान्यत: कोई मतभेद या विवाद नहीं होता । स्वायता का अर्थ समाचारों के चयन में स्वतन्त्र रहना, सभी पक्षों के विचारों को बुलेटिन में समावेश करना तथा वार्ता लिखने अथवा परिचर्चा में भाग लेने वालों को ऐसा कोई निर्देश न देना है कि वह किसी दृष्टिकोण विशेष का समर्थन करें ।

16.3.1 समाचार

आकाशवाणी के समाचार प्रतिदिन लगभग हर घंटे प्रसारित होते हैं । नई दिल्ली के प्रसारण भवन में स्थित समाचार सेवा प्रभाग में सभी प्रकार की गतिविधियों का संचालन है । यहाँ से प्रतिदिन हिन्दी में 23, अंग्रेजी में 22 और 17 अन्य भाषाओं में 43 बुलेटिन प्रसारित होते हैं । इनके अलावा छोटे बुलेटिन एफ एम चैनल पर होते हैं । इरा प्रकार दिल्ली से 114 बुलेटिन प्रसारित होते हैं । इनके अलावा 42 क्षेत्रीय केन्द्रों में प्रादेशिक भाषा के 137 बुलेटिन होते हैं । विदेश सेवा के अन्तर्गत 25 भाषाओं में 66 बुलेटिन प्रसारित होते हैं । आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग 30 घंटे और 39 मिनट की कुल अवधि के 315 समाचार बुलेटिन रोज प्रसारित करता है ।

इनमें प्रातःकालीन बुलेटिन-हिन्दी में समाचार प्रभात, अंग्रेजी में मार्निंग न्यूज सर्वाधिक लोकप्रिय हैं । इनमें 15-15 मिनट के इन बुलेटिनों में समाचारों के अलावा ढाई-तीन मिनट का ज्वलंत विषय पर समीक्षा' तथा प्रमुख अखबारों में छपी खबरों का निचोड दिया जाता है । रात

में पौने नौ बजे हिन्दी में समाचार संध्या व नौ बजे न्यूज़ एट नाइन अंग्रेजी बुलेटिन भी 15-15 मिनट का है । इसमें विभिन्न संवाददाताओं की आवाज में संवाद देकर इन्हें रोचक बनाया जाता है ।

बुलेटिन चाहे कोई भी हो रेडियो समाचार संपादक को समाचारों के चयन का अस्वीकार करने के बारे में तुरन्त निर्णय लेना होता है । साथ ही बुलेटिन समयावधि का पूरा ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि संक्षिप्त किए बिना सभी समाचारों का समावेश नहीं हो सकता ।

आकाशवाणी के समाचार फरवरी 1998 से टेलीफोन तथा इन्टरनेट पर भी सुलभ करा दिए गए हैं । यह एक बड़ी उपलब्धि है । आकाशवाणी की 'न्यूज़ आन फोन' सेवा फोन पर दुनिया के किसी भी हिस्से में अंग्रेजी और हिन्दी में ताजा समाचार उपलब्ध कराती है । 1 नवम्बर, 1995 से खाडी क्षेत्रों के लिए दैनिक मलयालम सेवा भी शुरू की गई है ।

16.3.2 समाचारों पर आधारित कार्यक्रम

(क) सामयिक वार्ताएँ-दिल्ली से हिन्दी में सायं 7 बजकर 35 मिनट पर सामयिकी कार्यक्रम में समसामयिक विषय पर वार्ता लिखवाकर प्रसारित की जाती है । यह वार्ता तथा सुबह की समीक्षा बाहर के लेखकों/पत्रकारों द्वारा लिखी जाती है और इसके लिए भुगतान किया जाता है । हिन्दी अंग्रेजी में सवा नौ बजे स्पाट लाइट कार्यक्रम होता है, जिसमें समसामयिक विषयों पर दो वार्ताएँ होती हैं ।

(ख) संसद समीक्षा-संसद अधिवेशन के दिनों में श्रोताओं को संसद में हो रही गतिविधियों, मंत्रियों के नीति संबंधी वक्तव्यों और सांसदों द्वारा उठाए गए प्रश्नों और विभिन्न मुद्दों पर हुई बहस में भाग लेने वाले सांसदों के विचारों का समावेश करने वाला कार्यक्रम संसद समीक्षा दिल्ली से प्रसारित होता है । यह 20.30 बजे से 20.45 तक दिल्ली 'ए' पर प्रसारित होता है । इसी समय दिल्ली 'बी' से अंग्रेजी में ऐसा ही कार्यक्रम प्रसारित होता है । जिसे 'टूडे इन पार्लियामेंट' कहते हैं । शनिवार को हिन्दी में 'इस सप्ताह संसद में' और 'दिस वीक इन पार्लियामेंट' इसी समय प्रसारित होता है । इसका आलेख संसद की कार्यवाही प्रत्यक्ष देखने वाले बाहर के पत्रकारों से लिखाया जाता है, जिसके लिए भुगतान होता है । इसका आलेख लिखते समय भी संसद समाचार लिखते समय जैसी सावधानी बरतनी होती है । अध्यक्ष के निर्णयों और सांसद किस दल से सम्बद्ध है, यह ध्यान रखना जरूरी है ।

(ग) **परिचर्चाएँ-**सामयिक और ज्वलंत विषयों पर विषय-विशेष के जानकारों के बीच विचार-विमर्श एक अन्य सूचनाप्रद व ज्ञानबोधक कार्यक्रम है । हिन्दी में यह हर बुधवार को 21.30 बजे प्रसारित होता है । इसका नाम है 'चर्चा का विषय है' । अंग्रेजी में इसे 'करंट अफेयर्स' कहते हैं और रविवार को उसी समय प्रसारित होता है ।

(ग) रेडियो ब्रिज-चुनाव परिणामों के दिनो में विभिन्न शहरों में आकाशवाणी के स्टूडियो में विशेषज्ञों को आमंत्रित कर दिल्ली के स्टुडियो में बैठे विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श कराया

जाता है, जिसे 'रेडियो ब्रिज' कहते हैं । इसरो श्रोताओं को देश के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले विशेषज्ञो के विचार एक साथ मालूम हो जाते हैं ।

हिन्दी में समाचार आधारित अन्य कार्यक्रम हैं-राज्यों की चिट्ठी-09.10 पर और विकास यात्रा 09.15 पर । सामयिक विषयों पर उर्दू में तब्सरा 21.15 पर प्रतिदिन तथा डोगरी, कश्मीरी व अरूणाचली भाषा में प्रतिदिन पाँच-पाँच मिनट की समीक्षाएँ होती

आइए, अब समाचारों के अलावा अन्य कार्यक्रमों पर नजर डालें । इनमें संगीत, वार्ताएँ और विचार विमर्श, नाटक-रूपक तथा विशिष्ट वर्ग जैसे महिलाओं, बच्चों, युवकों, आदिवासियों, ग्रामीण समुदाय, औद्योगिक कामगारों के कार्यक्रम शामिल हैं ।

16.3.3 संगीत-आकाशवाणी से मनोरंजन का मुख्य कार्यक्रम साधन संगीत है । रेडियो कार्यक्रमों में संगीत का हिस्सा 39.2 प्रतिशत है । आकाशवाणी से शास्त्रीय संगीत जिसमें उत्तर का हिंदुस्तानी संगीत और दक्षिण का कर्नाटक संगीत सुनवाया जाता है । इस कार्यक्रम में हल्का-फुल्का संगीत, फिल्मी संगीत, लोकसंगीत, भक्ति संगीत और पाश्चात्य संगीत भी प्रस्तुत किया जाता है । आकाशवाणी ने संगीत और संगीतकारों को प्रोत्साहन देने में बड़ा योगदान किया है । प्रतिवर्ष आकाशवाणी संगीत सम्मेलन का आयोजन करता है, जिसमें देश भर से चोटी के कलाकार भाग लेते हैं । टेलिविजन के बावजूद बहुत से श्रोताओं का रेडियो पर ही संगीत का आनन्द आता है ।

16.3.4. विविध भारती-लोगों में हल्के-फुलके संगीत और मनोरंजन की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए 'विविध भारती' सेवा अक्टूबर, 1957 से शुरू की गई थी । इसका लगभग 60 प्रतिशत फिल्मी भाग संगीत होता है । शेष में भक्ति संगीत लघु नाटिकाएँ भेंटवार्ता आदि होती हैं । सप्ताह के सामान्य दिनों में विविध भारती 14 घंटे 20 मिनट तथा रविवार और छुट्टियों के दिन 16 घंटे 35 मिनट की सेवा प्रसारित होती है । विविध भारती से विज्ञापनों के प्रसारण से आय भी होती है ।

16.3.5. राष्ट्रीय चैनल-राष्ट्रीय चैनल मई, 1988 से शुरू किया गया था । यह रात्रि सेवा के रूप में चलाया जा रहा है । इसकी पहुँच देश की 76 प्रतिशत जनता तक है । इसके कार्यक्रमों में सूचना व मनोरंजन का संतुलित समावेश रहता है । समूचे देश को अपना क्षेत्र मानकर यह चैनल देश की प्रतिभाओं का उपयोग करता है । इसके कार्यक्रमों में देश की सांस्कृतिक विविधता परिलक्षित होती है ।

16.3.6. एफ.एम. सर्विस-फरवरी, 1995 से आकाशवाणी के दिल्ली, मुम्बई, मद्रास, कलकत्ता के एफ.एम. सर्विस शुरू की गई । इसमें लोकप्रिय गीत-संगीत के अलावा संक्षिप्त समाचार भी सुनाए जाते हैं । बड़े शहरों में यह बहुत लोकप्रिय है ।

16.3.7. नाटक एवं रूपक-रेडियो से प्रसारित नाटक और रूपक लोकप्रिय विधा है जिसका उपयोग देश की स्वतंत्रता से पहले से हो रहा है । आकाशवाणी के लगभग 80 केन्द्र हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में नाटक-रूपक प्रसारित करते हैं । मूल नाटकों के अलावा प्रसिद्ध उपन्यासों, लघु कथाओं व रंगमंचीय नाटकों का रेडियो रूपान्तरण प्रसारित होता है । नाटक व रूपक में शब्दों और उनके बोलने के ढंग से पात्रों की मनोदशा दर्शानी होती है ।

16.3.8. अन्य कार्यक्रम-आकाशवाणी के अन्य कार्यक्रमों को उच्चरित शब्द कार्यक्रम की संज्ञा दी गई है । इनमें सामान्य विषयों की वार्ताएँ एवं विचार-विमर्श, नाटक व रूपक तथा विशेष वर्गों जैसे ग्रामीण, युवा, छात्र, बच्चों, महिलाओं और कामगारों के कार्यक्रम शामिल हैं । ये वार्ताएँ दिल्ली केन्द्र और क्षेत्रीय केन्द्र प्रसारित करते हैं और इनमें निरक्षरता, बेरोजगारी, स्त्रियों की उन्नति जैसे सामाजिक विषय या कृषि, उद्योग आदि में हो रहे विकास के विषय होते हैं । ग्रामीण कार्यक्रम लगभग हर केन्द्र से प्रसारित होता है । शिक्षा के भी अनेक कार्यक्रम हैं ।

16.4 रेडियो कार्यक्रम के मार्गदर्शक सिद्धान्त

सर्वप्रथम हम रेडियो कार्यक्रम के मार्गदर्शक सिद्धान्त पर विचार करते हैं जो समाचार, समाचारों पर आधारित कार्यक्रम तथा संगीत, नाटक, रूपक और अन्य विधाओं पर समान रूप से लागू होते हैं ।

प्रथम सिद्धान्त यह है कि प्रसारण संविधान में सन्निहित लोकतांत्रिक मूल्यों तथा देशों की एकता व अखण्डता को बनाए रखने में सहायक होने चाहिए । विभिन्न मतों को प्रश्रय और अभिव्यक्ति को स्थान दिया जाना एक जीवन्त लोकतंत्र के लिए आवश्यक है । पर देश की अखण्डता पर प्रहार करने, एकता को छिन्न-भिन्न करने, विभिन्न वर्गो में तनाव पैदा करने में आकाशवाणी के प्रसारण को सहायक नहीं बनने देना चाहिए । प्रसारण का उद्देश्य देश में धर्म निरपेक्षता के आदर्श को बनाए रखना है । इससे किसी धर्मावलम्बी को क्लेश या क्षोभ नहीं होना चाहिए । सभी धर्मो को आदर मिलना चाहिए । सभी धर्मग्रन्थों से मानव-मानव में भाईचारा पैदा करने वाले अंश प्रसारित कर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाया जाना चाहिए । प्रसारणों में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय रूचि के विषयों पर निष्पक्ष व संतुलित ढंग से सूचना दी जानी चाहिए । किसी धर्म, मत, सिद्धान्त विशेष का प्रतिपादन हमारे प्रसारण का उद्देश्य नहीं हो सकता ।

भारत सामाजिक संस्कृति का धनी है । उसके भीतर कई संस्कृतियाँ पनपी और फली-फूली हैं । इसके विराट् और उदारतापूर्ण स्वरूप को प्रसारणों के जरिए दर्शाया जाना चाहिए । देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग संस्कृतियों का रूप बिखरा हुआ है । इनके बीच एकता की अंतरधारा बह रही है । इसे उजागर किया जाना चाहिए । प्रसारण का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को सूचना देने, उन्हें प्रबुद्ध बनाने, शिक्षित करने, उनका स्वस्थ मनोरंजन करना होना चाहिए । प्रसारण कार्यक्रमों को देश में समता व सामाजिक न्याय के फैलाने में योग देना चाहिए। गरीब-अमीर, छोटे-बड़े आदि की भावना नहीं फैलने देनी चाहिए ।

प्रसारण का उद्देश्य देश में चल रही विकास संबंधी गतिविधियों को समुचित ढंग से प्रस्तुत करना होना चाहिए । 1951 से अब तक आठ पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हो चुकी हैं और 1998 से नौवीं योजना चालू है । इन योजनाओं के फलस्वरूप देश का जो नया स्वरूप ऊभर रहा है, उसे बताया जाना चाहिए । कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं । पूरे देश में बुनियादी उद्योगों सहित अनेक कल-कारखानों का निर्माण हुआ है । सड़क, जल एवं वायु परिवहन

सुविधाओं व संचार साधनों का विस्तार हुआ है । शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण में बढ़ी हुई सुविधाओं से जीवन शैली बदल रही है । विज्ञान व टेक्नालॉजी में नए कीर्तिमान कायम हुए हैं। इन सबकी झलक प्रसारण कार्यक्रमों से मिलनी चाहिए ।

प्रसारण का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के निरक्षर लोगों, विकलांग व समाज से उपेक्षित लोगों की सेवा करना होना चाहिए । इसके साथ ही ग्रामीणों को कृषि और बागवानी की उन्नत विधियां बताई जानी चाहिए । देश के विभिन्न क्षेत्रों में आदिवासी रहते हैं । इनमें आत्मविश्वास की भावना जगाकर उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में लाना चाहिए । इसी तरह अल्पसंख्यकों में भी सुरक्षा की भावना जगाई जानी चाहिए ।

महिलाएँ सम्पूर्ण जनसंख्या लगभग आधा भाग हैं और नई पीढ़ी के निर्माण में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है । लेकिन परम्पराओं से जकड़ी रहने के कारण उनकी यथेष्ट उन्नति नहीं हुई है । उनमें आत्मविश्वास की भावना जगाकर उन्हे अपने अधिकारों का अहसास कराया जाना चाहिए । साथ ही दहेज, अशिक्षा जैसी कुरीतियों से उन्हें बचाया जाना चाहिए । बेटा-बेटी को समान मानने की भावना जगाया जाना आवश्यक है ।

इसी तरह बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित कर उनमें देश प्रेम और स्वावलम्बन की भावना जगाई जानी चाहिए तथा मनोरंजन के साथ वे अच्छी बातें सीख सकें इसकी चेष्टा की जानी चाहिए । देश में बहुत से बच्चे छोटी उम्र में ही मजदूरी या नौकरी करने के लिए मजबूर हो जाते हैं । बाल मजदूरी प्रथा समाप्त करने के लिए प्रयास होने चाहिए ।

16.5 आकाशवाणी कोड

आकाशवाणी में व्यक्तियों द्वारा प्रसारण के लिए निम्नलिखित कोड का पालन करना जरूरी है ।

1. मित्र देश की आलोचना न हो
2. किसी धर्म या समुदाय पर प्रहार न हो
3. कोई अश्लीलता या अपमानजनक बात न हो
4. हिंसा और कानून एवं व्यवस्था तोड़ने को बढ़ावा न मिले
5. न्यायालय की अवमानना करने वाली बात न हो
6. राष्ट्रपति, राज्यपाल और न्यायपालिका की ईमानदारी पर कोई आक्षेप न हो
7. किसी राजनैतिक दल का नाम लेकर उस पर प्रहार न किया जाए
8. किसी राज्य या केन्द्र सरकार की निंदा न हो
9. संविधान के प्रति असम्मान अथवा उसे बदलने के लिए हिंसात्मक उपाय करने या बगावत करने की हिमायत न हो । संवैधानिक ढंग से परिवर्तन की वकालत करने पर कोई रोक नहीं है ।

यह कोड आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए 1997 में 'प्रसार भारती' गठन किए जाने पूर्व का है । हो सकता है इसमें कोई परिवर्तन किया जाए ।

16.6 समाचार प्रसारण के मूल सिद्धान्त

अब हम समाचार प्रसारण पर आते हैं, जिनके संबंध में कार्य करते समय सावधानी और सजगता के साथ तत्परता और सूझ-बूझ भी जरूरी है ।

16.6.1 सत्यता

प्रसारित किए जाने वाले समाचारों के संबंध में प्रथम आवश्यकता यह है कि वे सत्य और सही हों । साथ ही समाचार तथ्यात्मक दृष्टि से ठीक और निष्पक्ष भी हों । रेडियो के लिए समाचार कई साधनों से प्राप्त होते हैं जैसे कि संवाद एजेंसियाँ अथवा अपने संवाददाता । दोनों ही स्थिति में संपादक को यह अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए कि कहीं उसमें कोई बात गलत सिद्ध होने की तो संभावना नहीं है । जरा भी संदेह होने पर उसकी प्राप्त स्रोत के अलावा अन्य साधनों से भी पुष्टि कर लेनी चाहिए ।

दंगे-फसाद की घटना की पुष्टि संबंधित जिलाधीश, उच्चतम पुलिस अधिकारी, गृहमंत्रालय के उच्चाधिकारी से की जा सकती है । मृतकों की संख्या बताते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उनका धर्म न बताया जाए यानि हमें यह नहीं बताना चाहिए कि मरने वालों में कितने हिन्दू थे, कितने मुसलमान या कितने सिख थे । क्योंकि ऐसा करने से विभिन्न सम्प्रदायों में कडवाहट और तनाव और बढ़ सकता है । उद्देश्य स्थिति को शांत करना होना चाहिए ।

निधन समाचार-राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभाध्यक्ष, भारत के प्रधान न्यायाधीश आदि महत्वपूर्ण व्यक्तियों के निधन का समाचार देने से पूर्व इस संबंध में निर्धारित नियमों का पालन करना आवश्यक है । मद्रास के मुख्यमंत्री अन्ना दुरई के, जो मद्रास के एक अस्पताल में बीमार थे, निधन का समाचार आकाशवाणी पर संवाद एजेन्सियों से मिली खबरों के आधार पर प्रसारित कर दिया गया था । बाद में यह गलत निकला । इससे पूरे देश में हंगामा खड़ा हो गया । इसी प्रकार श्री जगजीवनराम के निधन का समाचार, आकाशवाणी समाचार कक्ष में, दोनों प्रमुख समाचार एजेन्सियों और आकाशवाणी के संवाददाता से भी प्राप्त हुआ था और वह 6 बजे की सुबह बुलेटिन में प्रसारित हो गया । बाद में वह गलत निकला । इस सबका तात्पर्य यह है कि बीमार नेता का अगर किसी अस्पताल में इलाज चल रहा हो और उसका निधन हो जाए तो प्रमुख चिकित्सा अधिकारी या चिकित्सा बुलेटिन के आधार पर दिया जाना चाहिए । भारत सरकार ने आकाशवाणी ओर दूरदर्शन पर निधन का समाचार प्रसारित करने के पूर्व किस प्रकार पुष्टि की जानी चाहिए इस संबंध में निर्देश निर्धारित किए हैं ।

अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियों के निधन का समाचार परिवार के किसी सदस्य से पुष्टि के बाद ही प्रसारित किया जा सकता है । सीमा पर झड़पों या युद्ध भड़कने की खबर रक्षा मंत्रालय के प्रमुख जनसंपर्क निदेशक की पुष्टि के बाद देनी चाहिए । वैसे हर सीमावर्ती क्षेत्रों में सेनाओं के जनसंपर्क अधिकारी इस संबंध में पत्रकारों को जानकारी देने के लिए उपलब्ध रहते हैं ।

सरकारी फैसलों की पुष्टि सूचना पत्र सूचना कार्यालय और राज्यों में वहाँ के जनसम्पर्क निदेशक से प्राप्त की जा सकती है यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जब संसद या विधान मंडल

का अधिवेशन चल रहा हो तो यह परिपाटी बनी हुई है कि प्रमुख सरकारी निर्णयों या नीति संबंधी घोषणाएँ पहले संसद अथवा राज्यों के विधान मंडल में की जाती हैं ।

तथ्यों की पवित्रता-आकाशवाणी में समाचार देते समय सत्यता के उच्चतम मान दंडों को ध्यान में रखा जाता है । इस माध्यम से अखबारों की तरह अटकलबाजी, अफवाहों या सुनी सुनायी बातों पर खबर नहीं दी जानी चाहिए । समाचार संपादकों को घटनाओं की जाँच के लिए पुष्टि के वास्ते अपने साधन भी विकसित करने चाहिए । यह ध्यान रखना चाहिए कि तथ्य पवित्र होते हैं, उनमें छेड़छाड़ उचित नहीं ।

समाचार संपादक को यह चाहिए कि समाचार देने के पूर्व उसे वह समाचार मूल्य के आधार पर अच्छी तरह परख ले । उसे यह सोचना चाहिए कि अमुक समाचार का उसको श्रोता के लिए कितना महत्व है ।

16.6.2 तात्कालिकता

सत्यता और समाचार की तथ्यपरक जाँच के अलावा एक बहुत जरूरी बात यह है कि समाचार तत्काल प्रसारित होना चाहिए । घटना होने और समाचार प्रसारित होने में कम से कम समय लगना चाहिए । यह ध्यान रखना चाहिए कि रेडियो समाचार का महत्व इसी बात में निहित है कि वह अपनी खबरें तत्काल प्रसारित करता है । अगर समाचार प्रसारण में देर होती है तो वह संपादक की अक्षमता जाहिर करती है । अखबार 24 घंटे में एक बार छपता है जब कि आकाशवाणी से हर घंटे समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं । यह ध्यान में रखना चाहिए कि सुबह का अखबार जो करीब रात दो बजे तक छप जाता है, निकल जाने के बाद यदि कोई महत्वपूर्ण घटना घटती है तो वह अखबार में दूसरे दिन के संस्करण में ही छप सकती है । रेडियो का श्रोता यह आशा करता है कि घटना होने के बाद प्रसारित अगले बुलेटिन में उसे वह खबर सुनने को मिलेगी ।

रेडियो से तात्कालिकता की अपेक्षा के कारण लोग कोई बड़ी घटना या महत्वपूर्ण व्यक्ति के निधन की अफवाह सुनते ही अपने रेडियो या टेलीविजन सैट को चालू कर देते हैं । टी वी में भी विजुअल की व्यवस्था करने या समाचार वाचक के सजने-संवरने में कुछ समय लग सकता है और रेडियो की तरह समाचार शायद तुरन्त प्रसारित न हो सके । इसलिए रेडियो का विशेष दायित्व है कि खबर तुरन्त प्रसारित हो । इस प्रकार सत्यता और तात्कालिकता दोनों ही सिद्धान्तों का एक साथ पालन करना आवश्यक है । यह चुनौती भरा काम अवश्य है पर बहुत मुश्किल नहीं । काम करने पर इसका अभ्यास हो जाता है ।

16.6.3 निष्पक्षता एवं वस्तुनिष्ठा

रेडियो और टेलीविजन पर सरकार का 1997 तक एकाधिकार रहा है । इसलिए 'आम लोगों की यह धारणा बन गई थी कि आकाशवाणी से प्रसारित समाचार सरकार के मनोनुकूल होते हैं । कुछ लोग तो पहले रेडियो को सरकारी भोंपू कहने से भी नहीं चूकते थे । इसीलिए रेडियो में समाचार संपादक को निष्पक्षता के उच्च मानदंड का पालन करना चाहिए । निष्पक्षता केवल रेडियो के लिए ही नहीं, टेलीविजन या समाचारपत्रों में समाचार देने वालों के लिए भी

उतनी ही जरूरी है । समाचार तैयार करते समय संपादक को उसे अपने विचारों के अनुसार नहीं ढालना चाहिए । समाचार और विचार अलग-अलग चीजें हैं ।

समाचार को संपादकीय विचारों का दर्पण नहीं बनाना चाहिए

1997 में रेडियो और टेलीविजन के लिए प्रसार भारती निगम की स्थापना कर दी गयी। इसके अन्तर्गत भारत के इन दो इलेक्ट्रोनिक माध्यमों को स्वायता है । इसलिए रेडियो या टी वी के बुलेटिनों में केवल उन सरकारी समाचारों की भरमार नहीं होनी चाहिए । समाचारों का चयन करते समय संपादक के मन में यह भय नहीं रहना चाहिए कि अमुक समाचार देने से सरकारी मंत्री या उच्च पदाधिकारी नाराज हो जाएंगे । साथ ही कोई समाचार इस वजह से भी नहीं छोड़ा जाना चाहिए कि वह सरकारी मंत्री का भाषण है या महज सरकारी विज्ञप्ति ।

10.6.4 विभिन्न राजनीतिक विचारों का समावेश

भारत एक सजीव लोकतंत्र है और हमारे लोगों में राजनीतिक समाचारों के प्रति गहरी रुचि है । अत: इन्हें प्रसारित करते समय बड़ी सतर्कता बरतनी चाहिए । कई राजनेता मीडिया में प्रचार पाने की लालसा से तरह-तरह के बयान देते रहते हैं और कई बार वे अपने दिए गए बयान से मुकर भी जाते है । समाचार बुलेटिन में सभी राजनीतिक दलों के विचारों को समान रूप से स्थान दिया जाना चाहिए । यदि एक राजनीतिक दल किसी दूसरे राजनीतिक दल की नीति या कार्यक्रम के बारे में अपनी प्रतिक्रिया देता है तो उसे भी बुलेटिन में समाविष्ट किया जाना चाहिए ।

हर प्रमुख राजनीतिक दल अपना वार्षिक अधिवेशन करते हैं या कोई प्रमुख मुद्दा सामने आने पर विचार करते और निर्णय करने के लिए अपनी कार्यसमितियों की बैठक बुलाते हैं । जब से भारत में मिलीजुली सरकारों का युग शुरू हुआ है, श्रोता यह व्यग्रता से प्रतीक्षा करते है कि अमुक राजनीतिक दल सत्तारूढ़ का समर्थन करता है या विरोध । बड़े ही नहीं छोटे राजनीतिक दलों के निर्णय भी केन्द्र और राज्य सरकार की अस्थिरता के कारण बन सकते हैं । इसलिए सभी के विचारों को बुलेटिन में स्थान देना चाहिए । कई बार राजनीतिक दल टूट जाते हैं या उनके अन्दर बने विभिन्न गुटों के नेता बयान देने लगते हैं । इनके विचार समाचार में देते समय सतर्क रहना चाहिए । और यह नहीं लगना चाहिए कि रेडियो किसी दल विशेष को बढ़ाने में रुचि रखता है या यह चाहता है कि उसमें फूट पड़ जाए । इस संबंध में बहुत सावधानी से तथ्यात्मक स्थिति पेश की जानी चाहिए और पदाधिकारियों से पुष्टि करके ही समाचार देना चाहिए । प्राय: हर प्रमुख राजनीतिक दल समय-समय पर मीडिया और प्रेस के लिए ब्रीफींग की व्यवस्था करते हैं या अपने किसी पदाधिकारी को अपना प्रवक्ता बना देते हैं । उनसे पूछताछ करके समाचार दिए जाने चाहिए ।

16.6.5 स्वतन्त्रता के साथ दायित्व

लोकतांत्रिक देश होने के नाते हमारे संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता दी गई है और स्वतन्त्रता के साथ कुछ जिम्मेदारियाँ भी है । राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, लोकसभा अध्यक्ष और भारत के प्रधान न्यायाधीश आदि को हमारे संविधान में विशेष दर्जा प्राप्त है । ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए कि ऐसा लगे कि समाचार उनको अपमानित या लांछित करने

के उद्देश्य से दिया गया है । साथ ही संवैधानिक ढंग से स्थापित सरकार को हिंसात्मक या विद्रोह द्वारा उखाड़ फेंकने को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए पर शांति पूर्ण ढंग से संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार सरकार बदलने के आह्वान को या सरकारी नीतियों की आलोचना को समाचारों में देने में कोई हर्ज नहीं है ।

देश की अखंडता, राष्ट्रीय एकता व धर्मनिरपेक्षता के आदर्श को कायम रखने तथा संसद, विधानमंडलों और न्यायपालिका की मर्यादा का ध्यान रखा जाना चाहिए ।

16.6.6 मानवीय सेवा

बाढ़, तूफान, भूकम्प जैसी प्राकृतिक विपदाओं के समाचार तुरन्त देना अच्छा है, पर साथ ही राहत पहुँचाने के लिए किए गए कार्यों की जानकारी भी दी जानी चाहिए । भूकम्प, बाढ़ या तूफान आने के पहले जो खबर मिले उसे भी तुरन्त और बार-बार प्रसारित किया जाना चाहिए ताकि लोग अपने बचाव के लिए सतर्क हो जाए । तूफान आने की आशंका वाले दिन इस तरह का समाचार देने के मछुआरे भी नावों को लेकर समुद्र में नहीं जाएंगे और समुद्री जहाज भी सावधान हो जाएंगे । बाढ़ के खतरे का समाचार सुनकर लोग सुरक्षित स्थानों पर जा सकते हैं । इस तरह रेडियो एक मानवीय सेवा भी करता है । इससे जन हानि को रोका जा सकता है और लोगों के कष्टों को कम किया जा सकता है । पर अपराध, बलात्कार, सेक्स आदि संबंधी समाचार नहीं देना चाहिए, क्योंकि इनसे समाज में बुरी आदतों को बढ़ावा मिलता है ।

16.6.7 विकास गतिविधियों की जानकारी

भारत एक विकासशील देश है और विभिन्न क्षेत्रों में विकास परियोजनाओं के जरिए लोगों का जीवन स्तर सुधारने में जुटा है । इसलिए विकास के क्षेत्र में होने वाली उपलब्धियों और समस्याओं को भी समाचार प्रसारण में स्थान दिया जाना चाहिए ।

देश में आर्थिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में, बड़ी-बड़ी गतिविधियाँ हो रही हैं । उनकी और भावी योजनाओं को समाचारों में समुचित ढंग से स्थान दिया जाना चाहिए ।

16.6.8 घटनाओं की पृष्ठभूमि

समाचारों के साथ आवश्यक हो तो घटना की संक्षिप्त पृष्ठभूमि भी दी जानी चाहिए । श्रोता सही संदर्भ में घटना को समझ सके । समाचार प्रसारण के मूल सिद्धान्त जान लेने के साथ संसदीय समाचारों और चुनाव समाचारों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करना लेना भी आपके लिए उपयोगी होगा । ये क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें सावधानी न बरतने पर आप कभी भी परेशानी में पड़ सकते ?

18.6.9 संसद समाचार

लोकतंत्र में संसद सर्वोपरि है । वहीं लोकतंत्र के वास्तविक दर्शन होते हैं । संसदीय समाचारों का संकलन या सम्पादन करने अथवा संसद की समीक्षा लिखने के पूर्व संसद के कार्य संचालन, संसद के गठन आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है । संसद भवन

में लोकसभा व राज्यसभा के लिए संवाद देने वाले पत्रकारों के लिए अलग-अलग प्रेस गैलेरियां बनी हुई हैं । इनमें जाने के लिए अलग-अलग पास प्राप्त करना जरूरी है, जो उनके प्रेस सम्पर्क विभागों दारा जारी किए जाते हैं ।

लोकसभा में बालिग मताधिकार के अनुसार प्रत्यक्ष रूप से चुने गए सांसद होते हैं । इनमें 542 निर्वाचित सदस्यों और 2 ऐसे एंग्लो इंडियन सदस्य होते हैं, जिन्हें राष्ट्रपति हारा मनोनीत किया जाता है । राज्यसभा उच्च सदन है । जिसमें आजकल 245 सदस्य हैं, जिन्हें राज्यों के विधान मंडल अप्रत्यक्ष रूप से चुनते हैं । 12 सदस्य राष्ट्रपति दारा मनोनीत किए जाते हैं । इस सदन के एक तिहाई सदस्य हर दूसरे साल बाद रिटायर हो जाते हैं और उनकी जगह नए सदस्य आ जाते हैं । इस प्रकार राज्यसभा निरन्तर बने रहने वाला सदन है । वह कभी भंग नहीं की जाती ।

लोकसभा में जिन विषयों पर सबसे गरमागरम चर्चा होती है, वह है-राष्ट्रपति के अभिभाषण के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव, सरकार में विश्वास या अविश्वास व्यक्त करने वाले प्रस्ताव तथा केन्द्र सरकार का सामान्य वार्षिक बजट और रेल बजट । इसके अलावा विभिन्न सांसद प्रतिदिन प्रश्न पूछते हैं, तरह-तरह के मुद्दों पर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव या अल्पावधि बहस का मुद्दा उठाते हैं ।

इन सबके लिए संसद की नियमावली और कार्य पद्धति को अच्छी तरह जान लेना जरूरी है । यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सदन में किस दल के सदस्य किस तरफ बैठे हैं । लोकसभा के अध्यक्ष के दाहिनी और सत्ता पक्ष और बायीं और विपक्ष के सदस्य बैठते हैं । अध्यक्ष की दायीं ओर की प्रथम पंक्ति में प्रथम सीट पर प्रधानमंत्री और बांयी ओर की प्रथम पंक्ति की सीट पर विपक्षी नेता बैठते हैं । अग्रिम पंक्तियों में प्रधानमंत्री के साथ ही अन्य वरिष्ठ मंत्रियों की सीटें होती हैं । मध्य तथा बांयी ओर विपक्षी दलों के प्रमुख नेता और मध्य में कभी-कभी सरकार का समर्थन करने वाले अन्य दलों के वरिष्ठ नेता बैठते हैं ।

संसद में समाचार तैयार करने के समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि किस विषय में अध्यक्ष क्या निर्णय देता है । अगर अध्यक्ष सदन में कार्यवाही का कोई अंश निकालने का निर्देश देता है तो वह अंश कदापि प्रसारित नहीं किया जाना चाहिए ।

विधेयक प्रस्तुत करने के पूर्व सदन की अनुमति ली जाती है और उसी के बाद वह पेश किया जाता है । हर विधेयक तीन चरणों से गुजरता है और अध्यक्ष द्वारा विधेयक पास होने की घोषणा के बाद ही विधेयक पास माना जाता है । आजकल सदन में कई बार शोर-शराबा या हंगामा होता है और कुछ सदस्य इतनी जोर से बोलते हैं कि बहस गैलेरी में बैठे पत्रकारों को सुनाई नहीं पड़ती । ऐसी स्थिति में संसद के टेबल आफिस में जाकर उन रिपोर्टरों से पूर्ण जानकारी लेनी चाहिए जो सदन में हुई हर बात का रिकार्ड लिखते जाते हैं ।

संसद समाचारों और संसद समीक्षा में इस बात का पूरा ध्यान रहना चाहिए कि सदन में हुई कार्यवाही का उससे समग्र विवरण मिल सके । हर दल को उचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए और समाचार या समीक्षा हर तरह से संतुलित रहनी चाहिए । इस बात का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए कि जिस सांसद का नाम दिया जा रहा है, वह किस दल का है । गलत

पार्टी बताए जाने पर आपत्ति की जा सकती है । इस बात का भी ध्यान रखना जरूरी है कि संसद समाचारों और संसद समीक्षा में लोकसभा और राज्यसभा दोनों के बीच संतुलन रहे ।

16.6.10 चुनाव समाचार

किसी भी लोकतंत्र के लिए चुनाव राष्ट्रीय महत्व की घटना है । भारत में गणराज्य की स्थापना के बाद 1952 से लेकर अब तक जितने आम चुनाव हुए हैं । उनमें भारतीय जनता ने गहरी दिलचस्पी दिखाई है । लोग न केवल यह जानना चाहते हैं कि कौनसा दल या दलों का गठबंधन विजयी होगा, परन्तु यह भी जानना चाहते हैं कि किस दल या गठबंधन का चुनाव जीतने के बाद क्या कार्यक्रम अथवा नीति होगी । अगर चुनाव पूर्व विभिन्न दलों में गठबंधन नहीं हो पाता तो सीटों पर तालमेल करने की कोशिश की जाती है, जो भी हो, समाचार में स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए ।

चुनाव के दौरान विभिन्न दलों द्वारा घोषणा-पत्र जारी होते ही वह उसी दिन शाम के मुख्य बुलेटिनों में दिया जाना चाहिए । अंग्रेजी और हिन्दी के रात्रि के मुख्य बुलेटिनों के अलावा दिल्ली से विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रसारित बुलेटिनों में भी घोषणा-पत्र का निचोड़ दिया जाना आवश्यक है । इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि विभिन्न राजनैतिक दल के घोषणा-पत्रों से सम्बन्धित समाचार बुलेटिनों में लगभग समान आकार में दिया जाए । विशेषकर मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय दलों के बारे में यही नीति अपनानी चाहिए, ताकि किसी भी दलों को पक्षपात का आरोप लगाने का मौका न मिले । संपादक के सामने चुनौती तब आती है, जब एक ही दिन एक से अधिक राजनैतिक दल घोषणा-पत्र जारी कर देते हैं । कुछ भी हो हर राजनैतिक दल के घोषणा को बराबरी के आधार पर देखा जाना चाहिए ।

जब विभिन्न दल अपने उम्मीदवारों की सूची पूरी या आंशिक रूप से जारी करें, उसे तभी समाचार बुलेटिनों में लिया जाना चाहिए । बिना अधिकृत रूप से जारी किए किसी व्यक्ति को दल विशेष का उम्मीदवार बताना उचित नहीं । उम्मीदवारों की संख्या अगर बहुत ज्यादा हो तो चुनाव आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय दलों और निर्दलीय उम्मीदवारों की संख्या बता देना ठीक रहेगा ।

यह भी आवश्यक है कि चुनाव आयोग द्वारा जारी की गयी आचार-संहिता का पालन किया जाए और उसके निर्देशों को भी ध्यान में रखा जाए । मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने और अपने अधिकार का सोच-समझकर उपयोग करने संबंधी समाचारों को बुलेटिन में आवश्यक स्थान दिया जाना चाहिए । विचार अभियान के दौरान विभिन्न नेताओं द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को बुलेटिन में स्थान देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी दल विशेष की नीति संबंधी आलोचना तो हो सकती है, किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप न हो ।

मतदान की तैयारियों और मतदान के लोगों में व्याप्त उत्साह के बारे में समाचार देना आकाशवाणी की वर्षों पुरानी परिपाटी है । इसमें जितना रोचक ढंग से समाचार दिया जा सके, उतना ही श्रोता के लिए अच्छा होगा । लगभग हर आम चुनाव में भारत में मतदान का प्रतिशत काफी ऊँचा रहता है । यह भारतीय जनता की लोकतंत्र में बढ़ती आस्था को प्रकट करता है । इसलिए मतदान समाप्त होने के बाद मतदान अधिकारियों द्वारा दी गई सूचना के

आधार पर यह आवश्यक बताया जाना चाहिए कि किन स्थानों और किन प्रदेशों में मतदान का प्रतिशत सबसे अधिक रहा । यदि मतदान के दौरान हिंसा की वारदात होती है तो उसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं दिया जाना चाहिए, जिससे कि मतदान करने वाले अन्य लोगों में कोई डर पैदा न हो जाए ।

इसके बाद मत-गणना की बारी आती है । आकाशवाणी चुनाव परिणाम तुरन्त बताने के लिए विशेष बुलेटिनों की व्यवस्था करती है अथवा मौजूदा बुलेटिनों का समय बढ़ा देती है । अब चुनाव परिणामों के पहले मतगणना का रुझान देने की भी प्रथा चल पड़ी है । पर लीड या बढ़त बताते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि निकटतम प्रतिद्वन्द्वी के साथ वोटों का अन्तर काफी हो । हजार-दो हजार का अन्तर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए कोई खास महत्व नहीं रखता ।

मतदान के दौरान निर्वाचन अधिकारी द्वारा विजयी उम्मीदवार की घोषणा करने पर ही जीत का समाचार दिया जाना चाहिए । परिणाम देते समय उम्मीदवार का सही-सही नाम, सम्बद्ध दल व निर्वाचन क्षेत्र तथा निकटतम प्रतिद्वन्द्वी, उसके दल और जीत का मार्जिन बताया जाना चाहिए । अत: अनजाने में किसी चुनाव परिणाम की गलत घोषणा आकाशवाणी से प्रसारित हो जाती है तो उसे तुरन्त उसी बुलेटिन में और अगर ऐसा सम्भव न हो तो अगले बुलेटिन में सही समाचार खेद सहित बताया जाना चाहिए । कभी-कभी गलत व्यक्ति की जीत का समाचार प्रसारित होने पर दंगे भड़क उठने की आशंका रहती है ।

हर बुलेटिन के शुरू और अंत में विभिन्न दलों की ताजा स्थिति बताया जाना जरूरी है। ज्यादातर श्रोताओं की इसी में रुचि होती है । अब आप अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों के बारे में भी कुछ जान लें ।

16.6.11 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के बारे में समाचारों का चयन करते समय संपादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि विश्व में घटित हो रही समसामयिक घटनाओं की भारतीय श्रोताओं को सही जानकारी मिलती रहे । अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों के सम्बन्ध में यह ध्यान रखना जरूरी है कि बहुत सी विदेशी एजेंसियाँ समाचार देते समय पाश्चात्य देशों का दृष्टिकोण देती हैं । अत: उसमें से समाचार तत्व निकाल लेना चाहिए और एजेन्सियों का पूर्वाग्रह या विशेष झुकाव अलग कर दिया जाना चाहिए ।

समाचार देते समय भारत के राष्ट्रीय हित को सबसे अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय समाचार देते समय विशेषकर सभी पड़ौसी देशों में हो रही घटनाओं को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए । इन देशों के नेता या प्रमुख अधिकारी भारत आते हैं या भारत के नेता व अधिकारी इन देशों की यात्रा पर आते हैं और जो समझौते और करार करते हैं, उनको प्रमुखता दी जानी चाहिए, क्योंकि यह सब भारत और पड़ौसी देशों के बीच संबंधों को घनिष्ठ करने में सहायक होता है ।

इसके बाद गुटनिरपेक्ष देशों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए । भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का अग्रणी नेता रहा है । इसलिए एशियाई, अफ्रीका महाद्वीप के गुट-निरपेक्ष देशों में

हो रही घटनाओं को स्थान मिलना चाहिए । गुट-निरपेक्ष आंदोलन ने एक समाचार पूल भी बनाया है । इसके समाचारों को लेने पर ध्यान देना चाहिए ।

भारत के लाखों प्रवासी विदेशों में रहते हैं, वे आकाशवाणी से भारत में हो रही घटनाओं, विकास कार्यक्रमों और भारतीय त्यौहारों और उत्सवों के बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं । कई देशों में भारत के बारे में समाचार जानने का मुख्य साधन आकाशवाणी है । वहाँ भारतीय अखबार कई दिन बाद पहुँचते हैं । समाचार तैयार करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए ।

16.7 व्यावहारिक सूत्र

समाचार प्रसारण के सिद्धान्तों को जानने के अलावा समाचार प्रसारण सम्बन्धी कुछ व्यवहारिक बातों को जान लेना भी जरूरी है ।

16.7.1 संक्षिप्तता

रेडियो समाचार बुलेटिन के बारे में यह जान लेना आवश्यक है कि समाचार बुलटिनों का समय सीमित होता है और वे निश्चित समय पर प्रसारित होते हैं । इसलिए प्रसारण का कार्य करते समय लम्बे चौड़े भाषणों अथवा विवरणों को शीघ्रता से संक्षिप्त रूप देने की कला भी सीखनी चाहिए । हर किसी विवरण में काफी अंश गैर-जरूरी होता है । उसको छोड़ देना चाहिए । संक्षेपण किए बिना रेडियो प्रसारण में आप सफल नहीं हो सकते । याद रहे 15 मिनट के समाचार को शुरू में और अंत में देने के लिए भी जगह रखनी होती है । 10 मिनट के बुलेटिन में 120 और 5 मिनट के बुलेटिन में 60 पंक्तियों से अधिक प्रसारित नहीं हो सकतीं । इसलिए सभी उपलब्ध समाचारों को बुलेटिन की अवधि के अनुसार संक्षिप्त करना जरूरी है । लम्बे समाचारों को देखकर घबराना नहीं चाहिए । एक-दो बार पढ़ने से समझ में आ जाता है कि उसमें महत्वपूर्ण अंश क्या है । वास्तव में वही अंश या बातें समाचार का मूल तत्व होती हैं, परन्तु संक्षिप्त करते समय कोई भी महत्वपूर्ण बात नहीं छोड़नी चाहिए ।

16.7.2 भाषा की सरलता

प्रसारण के लिए यह आवश्यक है कि भाषा बहुत सरल हो, क्योंकि श्रोता अगर एक बार में समाचार नहीं समझ पाया तो उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा । यह भी आपको ध्यान में रखना है कि रेडियो सुनने वाले बहुत से अनपढ़ भी होते हैं । इसलिए आम लोगों की समझ में आने वाले शब्दों तथा छोटे वाक्यों का प्रयोग होना चाहिए और मुहावरों का भी इस्तेमाल किया जाना चाहिए । ये भाषा को सुन्दर बनाते हैं । अंग्रेजी से अनुवाद करते समय यह भी ध्यान भी रखना चाहिए कि अर्थ का अनर्थ न हो जाए । अंग्रेजी में कई शब्द ऐसे होते है जिनके अर्थ संदर्भ के अनुसार बदल जाते हैं ।

16.7.3 भूल सुधार

पूरी सावधानी बरतने के बाद भी कभी-कभी समाचार प्रसारण में गलती हो जाना स्वाभाविक है । परन्तु यह आवश्यक है कि गलती को जल्दी से जल्दी सुधार लिया जाए ।

यथासंभव उसी बुलेटिन में संशोधन किया जाना चाहिए । शुरू में यह कहा जा सकता हे कि कृपया यह समाचार फिर से सुन लें । अगर उस बुलेटिन में संशोधन संभव न हो और गलती का बाद में पता चले तो अगले बुलेटिन में अवश्य ही संशोधित समाचार प्रसारित किया जाना चाहिए । संशोधित समाचार प्रसारित करने के पूर्व यह कहा जा सकता है कि हमारे पिछले बुलेटिन में गलती से यह समाचार प्रसारित हो गया था, जिसका हमें खेद हैं । संशोधित ठीक समाचार इस प्रकार है .....।

यदि किसी व्यक्ति के निधन के बारे में समाचार गलत प्रसारित हो गया है तो वह एक गम्भीर भूल है और अगले बुलेटिन में क्षमा याचना सहित गलती की परिस्थिति और सही स्थिति बताई जानी चाहिए ।

16.8 सारांश

इस इकाई में पिछले विवरण से आपने जाना कि टेलीविजन I समाचारपत्रों के तेजी से विस्तार के बावजूद रेडियो इस देश में आप जनता तक तुरन्त पहुँचने का प्रभावी और सशक्त माध्यम है । आपने यह भी जाना कि रेडियो कार्यक्रमों में हालांकि संगीत, नाटक, रुपक और उच्चरित शब्दों के अन्य कार्यक्रम प्रसारित होते हैं, पर समाचार और समाचारों पर आधारित सम-सामयिकी वार्ताओं और परिचर्चाओं का विशेष महत्व है और उन्हें बड़ी संख्या में सुना जाता है । इन सब विधाओं के कार्यक्रम तैयार करने में किन मार्ग दशर्क सिद्धान्तों की आवश्यकता है यह भी बताई जा चुकी है । आपको ध्यान रखना चाहिए कि इस देश में आकाशवाणी आम जनता की शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का बहुत बड़ा माध्यम है और उसकी पहुँच व्यापक है ।

इसके साथ ही हमने बताया कि किस प्रकार की सावधानियां समाचारों के संबंध से बरती जानी चाहिए । रेडियो समाचारों के सकंलन, प्रेषण, सम्पादन और प्रसारण के पूर्व उन्हें किन मूल सिद्धान्तों की कसौटी पर परखा जाना चाहिए । यह भी आप जान चुके हैं कि समाचारों के लिए सत्यता, निष्पक्षता, स्पष्टता और तात्कालिकता का विशेष महत्व है । हमने आपको यह भी बताया है कि संसद और चुनाव संबंधी समाचार देते समय किन-किन विशेष बातों को ध्यान में रखना जरूरी है ताकि बाद में आपके लिए koi विवाद या झंझट उठ खड़ा न हो ।

इन सब बातों का उद्देश्य रेडियो में काम-काज करने के लिए आपको एक सक्षम और उपयोगी व्यक्ति बनाना है ताकि आप सभी जरूरी जानकारी से अवगत होकर आत्म विश्वास के साथ अपने कार्य क्षेत्र में सफलता के साथ आये बढ़ सकें ।

16.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. भारत के समाचारपत्रों, रेडियो एवं दूरदर्शन के उद्भव और विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।
2. 'रेडियो भारत में आम जनता तक पहुँचने का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है' । इरा कथन की विवेचना कीजिए ।

3. रेडियो प्रसारण की विभिन्न विधाओं का परिचय दीजिए और बताइए कि आपको इनमें सबसे अधिक कौन सी विधा पसंद है ।
4. रेडियो प्रसारण के मार्ग दर्शक सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए ।
5. समाचार प्रसारण में किन मूल सिद्धान्तों का ध्यान रखना आवश्यक है? रेखांकित कीजिए ।
6. संसद की कार्यवाही के समाचार और समीक्षा लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?
7. चुनाव संबंधी समाचारों को प्रसारित करते समय किन सिद्धांतों का पालन करना चाहिए?
8. आकाशवाणी समाचार प्रसारणों में अनजाने में गलती हो जाने पर क्या उपाय करना आवश्यक है?

16.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आकाशवाणी - लेखक-रामबिहारी विश्वकर्मा
प्रकाशक-प्रकाशन विभाग-नई दिल्ली

Indian Broadcasting - H.R. Luthra
Publication Division, New Delhi

This is All India Radio - U.L. Barua,
Publication Division, New Delhi

Broadcasting & the People - Mehra-Masani
National Book Trust, New Delhi

Broadcasting in India - G.C. Awasthi,
Allied Publication, New Delhi

Broadcasting in India - P.C. Chatterjee

वार्षिक रिपोर्ट 1999-2000, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली

इकाई 17 रेडियो की भाषा और अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 रेडियो के कार्यक्रम

17.2.1 संगीत

17.2.2 साहित्यिक कार्यक्रम

17.2.3 स्पोकन वर्ड कार्यक्रम

17.2.4 समाचार एवं विचार

17.3 रेडियो में भाषा का महत्व

17.3.1 भाषाओं की विविधता

17.3.2 अंग्रेजी और हिन्दी को प्रमुखता

17.3.3 हिन्दी का स्थान

17.4 भाषा का स्वरूप

17.4.1 सरलता

17.4.2 शब्द रचना

17.4.3 वाक्य रचना

17.5 भाषा का प्रयोग

17.6 रेडियो समाचारों की भाषा

17.7 अनुवाद

17.7.1 भावानुवाद

17.7.2 शब्द प्रयोग

17.7.3 वाक्य प्रयोग

17.8 आदर्श रेडियो भाषा

17.9 सारांश

17.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.11 निबंधात्मक प्रश्न

17.0 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप-

- जनसंचार माध्यम के रूप में रेडियो के महत्व और उपयोगिता को समझ सकेंगे ।
- रेडियो के भाषिक और गैर-भाषिक कार्यक्रमों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।
- रेडियो के कार्यक्रमों के प्रसारण में भाषा के महत्व, स्वरूप और प्रयोग की जानकारी हासिल कर सकेंगे ।
- आकाशवाणी के कार्यक्रमों में हिन्दी के स्थान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

- रेडियो के समाचारों तथा अन्य कार्यक्रमों में अनुवाद की आवश्यकता, उसके स्वरूप और कृत्रिम अनुवाद से बचने के उपायों को समझ सकेंगे ।

17.1 प्रस्तावना

जनसंचार माध्यम के रूप में रेडियो का 20 वीं शताब्दी में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है । 1916 के आसपास अस्तित्व में आया । रेडियो 1940-50 तक सारे संसार में धूम मचाने लगा था । देखते ही देखते यह दुनिया के देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध जोड़ने के एक सशक्त माध्यम के साथ-साथ मनोरंजन, ज्ञान और शिक्षा का सबसे प्रभावशाली साधन बन गया। एक समय था जब जिस देश में जितने अधिक रेडियो स्टेशन थे, वह उतना ही जागरूक देश माना जाता था ।

लोकतांत्रिक देशों में रेडियो को लोकतंत्र की मजबूती के लिए सरकारी तंत्र से मुक्त करके पत्र-पत्रिकाओं की तरह निजी हाथों में सौंप दिया गया है जबकि राजाशाही, तानाशाही और कुछ विकासशील लोकतांत्रिक देशों में इसे सरकारी नियंत्रण में रखा गया है । भारत में भी सरकारी नियंत्रण को समाप्त करने की दिशा में हुए अनेक प्रयासों के बावजूद रेडियो (और टेलीविजन भी) निजीकरण की राह पर नहीं चल पाया है । हमारे यहाँ 'आल इंडिया रेडियो' यानी 'आकाशवाणी' ही रेडियो का एकमात्र संगठन है । इसलिए हम रेडियो के विविध पक्षों तथा भाषा पर विचार करते हुए 'आकाशवाणी' को ही आधार मानकर चर्चा करेंगे ।

सरकारी नियंत्रण तथा भाषाओं की विविधता से उत्पन्न कठिनाइयों के बावजूद भारत तथा विश्व के अन्य देशों में रेडियो ने मनोरंजन, शिक्षा प्रसार, आर्थिक प्रगति, वैज्ञानिक दृष्टि के विकास तथा विभिन्न विषयों पर लोगों के ज्ञानवर्धन में अत्यन्त उपयोगी भूमिका निभाई है और आज भी निभा रहा है । रेडियो की सबसे बड़ी खूबी यह है कि श्रव्य माध्यम होने के कारण यह सर्वसुलभ तथा बोधगम्य है । इस सदी के मध्य में टेलीविजन के उद्भव के पश्चात् रेडियो को चुनौती मिली और कुछ समय के लिए लगने लगा था कि रेडियो की उपयोगिता समाप्त हो जाएगी । परन्तु यह आशंका निर्मूल सिद्ध हुई और अपने विशिष्ट पहलुओं के कारण यह अपनी सार्थकता, महत्ता एवं उपयोगिता बनाए हुए है ।

भारतीय सन्दर्भों में जनसंचार की दृष्टि से रेडियो का और भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान है । अशिक्षा और गरीबी के कारण पत्र-पत्रिकाएँ बहुसंख्यक भारतवासियों की पहुँच और समझ के बाहर हैं । टेलीविजन महंगा माध्यम है । किन्तु रेडियो हर वर्ग के व्यक्ति तक पहुँच सकता है और आम लोगों की भाषा एवं मुहावरे में प्रस्तुत कार्यक्रमों के माध्यम से जनता के मनोरंजन, शिक्षण और जागरण में सहायक हो सकता है । अपने स्वर्णकाल में रेडियो अपने उद्देश्य में बखूबी सफल रहा और वह कृषि, स्वास्थ्य, खेलों आदि से लेकर राजनीतिक, साहित्य और संस्कृति का वाहक बना रहा । सदी के अन्तिम दशक के मध्य में रेडियो ने करवट ली, जब एफ.एम. चैनल की शुरुआत से वह पुन: लोकप्रिय होने लगा । 1999 में एफ.एम. स्टेशनों के निजीकरण के फैसले के बाद आकाशवाणी लोकप्रियता की अपनी यात्रा की दिशा में दो कदम और आगे बढ़ गया है । इस प्रकार 21 वीं शताब्दी के द्वार पर पहुँचकर आकाशवाणी में नए प्राणों का संचार होने लगा है ।

17.2 रेडियो के कार्यक्रम

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि रेडियो मुख्यता मनोरंजन, शिक्षा और सूचना के त्रिमुखी उद्देश्यों को सामने रखकर अपने कार्यक्रमों की रचना करता है ।

लगभग 75 साल के अपने इतिहास में भारतीय रेडियो प्रसारण ने न केवल अपने तंत्र में विस्तार किया है बल्कि अपने कार्यक्षेत्र को भी अत्यन्त विविधतापूर्ण और व्यापक बना लिया है । मनोरंजन, सूचना तथा शिक्षा के अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए समय-समय पर आकाशवाणी नई-नई सेवाओं और कार्यक्रमों का प्रसारण अपने हाथ में लेता रहा है । इन सब प्रयासों से आकाशवाणी का कार्यक्षेत्र व्यापक बन चुका है ।

आकाशवाणी के कार्यक्रम समय के साथ-साथ बदलते और बढ़ते रहते हैं । भाषा की दृष्टि से कार्यक्रमों का विभाजन भाषिक और गैर-भाषिक के रूप में किया जा सकता है ।

17.2.1 संगीत

संगीत गैर-भाषिक कार्यक्रम है । संगीत दो तरह का है-वाद्य एवं गायन । वाद्य संगीत में भाषा का कोई स्थान नहीं होता क्योंकि उसमें कलाकार केवल वाद्य यंत्र बजाता है । गायन में भाषा का सहारा लिया जाता है किन्तु उसमें मुख्य स्थान सुर और लय का होता है शब्दों का नहीं । फिर भी आंशिक रूप से भाषा भी संगीत का अंग रहती है । भारत में संगीत को रेडियो में बहुत सम्मानजनक स्थान प्राप्त है । बहुत से लोगों के लिए रेडियो की उपायोगिता संगीत तक सीमित है । आकाशवाणी की कार्यक्रम रचना में संगीत के महत्व का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि आकाशवाणी के कुल प्रसारण समय में 40 प्रतिशत समय शास्त्रीय, सुगम, लोक तथा फिल्मी संगीत को समर्पित करने में रेडियो की अहम भूमिका रही है । गीत के कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रमों जैसे कि नाटकों, रूपकों आदि में भाषा का प्रभाव बढ़ाने के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता है । रेडियो पर सबसे अधिक संगीत कार्यक्रम सुने जाते हैं ।

17.2.2 साहित्यिक कार्यक्रम

साहित्यिक कार्यक्रम साहित्यिक रुचि के श्रोताओं के लिए होते हैं । अत: इनका स्तर काफी ऊँचा होता है और ये सीमित वर्गों द्वारा सुने जाते हैं । इन कार्यक्रमों में रूपक, नाटक, प्रहसन, रेडियो नाटक, झलकियां, कवि सम्मेलन, कवि गोष्ठियाँ, साहित्यकारों से भेंटवार्ताएं, साहित्यिक विधाओं तथा जाने-माने साहित्यकारों के बारे में परिचर्चाएं, पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक गतिविधियों की रपट आदि शामिल है । इस तरह के कार्यक्रम अखिल भारतीय स्तर पर तथा क्षेत्रीय स्तर पर प्रसारित किए जाते हैं । इनमें आकाशवाणी में तैयार किए गए कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न स्थानों पर आयोजित साहित्यिक आयोजनों की रिकार्डिंग भी शामिल है ।

17.2.3 स्पोकन वर्ड कार्यक्रम

स्पोकन वर्ड कार्यक्रम मुख्यतया शिक्षा और सूचना प्रसार के उद्देश्य से प्रसारित किए जाते हैं । इतिहास, सामयिक विषय, विज्ञान, दर्शन, समाज शास्त्र, संस्कृति, कला, साहित्य आदि किसी भी विषय पर वार्ता एवं पीरचर्चाएं, प्रश्नोत्तरी आदि प्रसारित की जाती है । किसी घटना अथवा विषय के अनेक पहलुओं को सामने लाने के लिए संबंधित व्यक्ति अथवा व्यक्तियों से भेंटवार्ताएं लेकर उन्हें प्रसारित किया जाता है । इसी प्रकार किसी महत्वपूर्ण आयोजन खेल प्रतियोगिता, गणतंत्र दिवस, स्वाधीनता दिवस, निधन जैसे अवसरों का सीधा प्रसारण यानी आँखों देखा हाल भी स्पोकन वर्ड कार्यक्रमों की श्रेणी में आता है । इन सभी प्रोग्रामों की एक विशेषता यह है कि इनमें मनोरंजन तत्व गौण तथा शिक्षा एवं सूचना तत्व प्रमुख होते हैं ।

17.2.4 समाचार एवं विचार

समाचार एवं विचार किसी भी प्रसारण संगठन का सबसे सशक्त एवं महत्वपूर्ण पक्ष होता है । इसके अन्तर्गत समाचार बुलेटिन तथा समाचार-आधारित अन्य कार्यक्रम आते हैं, जिनमें वार्ताएँ, परिचर्चाएं, भेंटवार्ताएं, वायस डिस्पैच आदि शामिल है । आकाशवाणी का समाचार सेवा प्रभाग काफी व्यापक है ।

समाचार सेवा प्रभाग 39 घंटे और 39 मिनट की अवधि के कुल 315 समाचार बुलेटिन प्रतिदिन प्रसारित कर रहा है । इनमें विदेश सेवा के अन्तर्गत 26 भाषाओं में 9 घंटे 9 मिनट अवधि के 65 बुलेटिन शामिल है । स्वदेशी श्रोताओं के लिए हर घंटे समाचार बुलेटिन के अलावा एफ एम चैनल पर भी 24 संक्षिप्त समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं । 42 क्षेत्रीय समाचार इकाइयों द्वारा प्रतिदिन 137 बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं ।

इन सभी कार्यक्रमों की चर्चा करने का उद्देश्य यह स्पष्ट करता है कि रेडियो के अधिसंख्यक कार्यक्रम भाषा पर आधारित हैं । सभी भाषिक कार्यक्रम किसी न किसी भाषा के माध्यम से ही श्रोता तक पहुँचते हैं । यह तथ्य समझ लेने के बाद रेडियो में भाषा के महत्व को पहचानने में मदद मिलेगी ।

बोध प्रश्न-1

1. आज के संदर्भ में भारत में रेडियो की उपयोगिता के प्रमुख कारण लिखिए ।
2. रेडियो के भाषिक कार्यक्रमों के नाम बताइए ।
3. रेडियो में संगीत की क्या महत्व है?
4. स्पोकन वर्ड कार्यक्रमों के नाम लिखिए?

17.3 रेडियो में भाषा का महत्व

यों ऐसे अवसर और भाव भी होते हैं, जिनकी अभिव्यक्ति में भाषा भी हथियार डाल देती है, परन्तु सभी लौकिक क्रियाकलापों तथा गतिविधियों की अभिव्यक्ति और दूसरों तक उनका संप्रेषण भाषा के माध्यम से ही होता है । इसमें समस्त कार्य व्यापार शब्दों की सहायता

से किया जाता है । उच्चरित माध्यम होने के कारण ही हमारे देश में आकाशवाणी की भूमिका उल्लेखनीय हो जाती है । इसके दो प्रमुख कारण है । एक तो यह कि हमारे यहाँ लगभग 40 प्रतिशत जनता अशिक्षित है । वे लोग समाचारपत्र, पत्रिका आदि पढ नहीं सकते । दूसरा कारण यह है कि आर्थिक पिछड़ेपन की वजह से बड़ी संख्या में साक्षर लोग भी समाचारपत्र खरीदने की स्थिति में नहीं है । परन्तु रेडियो, ट्रांजिस्टर अब इतने सस्ते और आम हो गए हैं कि साधारण से साधारण आर्थिक स्थिति वाले परिवार में भी रेडियो उपलब्ध है । इस प्रकार बहुसंख्या ऐसे लोगों की है, जो पढ़कर या देखकर कम किन्तु सुनकर अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

17.3.1 भाषाओं की विविधता

आपने अभी तक पढ़ा कि श्रव्य माध्यम होने के कारण भाषा ही रेडियो के अधिकतर कार्यक्रमों का आधार है । किन्तु हमारे देश में अनेक भाषाएँ है । भारतीय संविधान में 16 राष्ट्रीय भाषाओं को मान्यता दी गई है । इनमें संस्कृत, उर्दू और सिंधी को छोड़कर सभी भाषाएँ किसी न किस प्रांत की भाषा है । रेडियो कार्यक्रम विशेषकर मनोरंजन तथा संगीत आदि के कार्यक्रम अपनी भाषा में ही सुनना सुखद लगता है । आकाशवाणी ने अपनी विकास यात्रा के दौरान भाषा की इस चुनौती से निपटने का संतुलित रास्ता विकसित किया है । ब्रिटिश शासन के अधीन प्रसारण तंत्र में शुरू में केवल अंग्रेजी और हिन्दी (हिन्दुस्तानी) में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे । ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता होने, सरकारी तंत्र में बंगाल के लोगों के वर्चस्व तथा विकास की दृष्टि से उच्च भारतीय भाषाओं से आगे रहने के कारण बंगला में भी बाद में प्रसारण होने लगा । देशी रियासतों के रेडियो केन्द्रों में अवश्य स्थानीय भाषाओं में कुछ कार्यक्रम दिए जाते हैं । 1940 के आसपास अन्य भारतीय भाषाओं गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु आदि में समाचार प्रसारित होने लगे ।

17.3.2 अंग्रेजी और हिन्दी को प्रमुखता

स्वतन्त्रता के बाद संविधान में 15 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा घोषित किए जाने और भाषा के आधार पर राज्यों के गठन के बाद प्रादेशिक भाषाओं के प्रति आग्रह बढ़ने लगा और राज्यों में खुलने वाले केन्द्रों से प्रसारण में संबंधित भाषा के कार्यक्रमों को प्रमुखता मिलने लगी । किन्तु राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी और हिन्दी को लगभग बराबर स्थान दिया गया । हाँ, आगे चलकर धीरे-धीरे हिन्दी कार्यक्रमों, विशेषकर मनोरंजन तथा कलात्मक कार्यक्रमों की संख्या बढ़ गई । किन्तु समाचार बुलेटिन तथा विचार कार्यक्रमों के लिए दोनों भाषाओं के बीच संतुलन बना रहा है । दिल्ली से भारतीय भाषाओं के राष्ट्रीय और विदेशी समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं, लेकिन सभी प्रदेशों के मुख्य केन्द्रों से सम्बन्धित भाषा तथा कुछ मामलों में बोलियों में क्रमश: प्रादेशिक एवं स्थानीय समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं ।

17.3.3 हिन्दी का स्थान

स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान ही देश को एक सूत्र में पिरोए रखने के लिए किसी एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई । हिन्दी भी महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चल रहे

स्वतन्त्रता संघर्ष का एक अंग बन गई थी । उस दौरान राजभाषा के रूप में हिन्दी को सभी प्रान्तों के नेताओं की स्वीकृति मिल गई । इसलिए स्वतन्त्रता के बाद संविधान निर्माताओं ने देवनागरी में लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा घोषित किया । स्वतन्त्रता से पूर्व उर्दू का मिश्रित रूप हिन्दुस्तानी तथा अंग्रेजी रेडियो की मुख्य भाषाएँ थीं । किन्तु आजादी के बाद हिन्दुस्तानी के स्थान पर हिन्दी यानी संस्कृत शब्दों की प्रमुखता वाली खड़ी बोली हिन्दी का प्रचलन बढ़ता गया । कुछ ही वर्षों में समाचार, सामयिक कार्यक्रमों तथा अन्य कार्यक्रमों में हिन्दी का प्रयोग काफी पैमाने पर होने लगा । मनोरंजन प्रधान कार्यक्रमों की भाषा तो हिन्दी ही है । सच तो यह है कि हिन्दी को देशव्यापी रूप देने और व्यावहारिक रूप से संपर्क भाषा बनाने में आकाशवाणी का उल्लेखनीय योगदान रहा है । अत: इस पाठ में रेडियो की भाषा और अनुवाद संबंधी पहलुओं की चर्चा करते हुए हिन्दी को ही आधार माना गया है ।

17.4 भाषा का स्वरूप

आपने पढ़ा कि भाषा रेडियो कार्यक्रमों की मुख्य आधार है । इसलिए रेडियो कार्यक्रमों के प्रसारण से जुड़े व्यक्तियों के लिए भाषा का ज्ञान अनिवार्य है । इनमें तकनीकी कर्मचारी अपवाद हो सकते हैं क्योंकि वे केवल ट्रांसमीटर से जुड़े रहते हैं ।

भारत में रेडियो का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि इसे सभी स्तरों के लोग सुन और समझ सकते हैं । अत: सुबोधता और सरलता रेडियो की भाषा का पहला गुण है ।

17.4.1 सरलता

इस बारे में सभी प्रसारण विशेषज्ञ, समाजशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक एकमत है कि व्यापक जन समुदाय तक संदेश पहुँचाने के लिए प्रसारण की भाषा सरल और सम्बद्ध श्रोता वर्ग को समझ में आने वाली होनी चाहिए । इसका सबसे प्रमुख कारण तो यह है कि सरल भाषा को सामान्य तथा विद्वान, निरक्षर तथा साक्षर और बच्चे व बड़े समान रूप से समझ लेते हैं । दूसरा कारण यह है कि प्रसारित संदेश मुद्रित सामग्री की भांति नहीं, जिसका कोई अंश समझ न आने पर आप पिछले पृष्ठ को पलट कर सदंर्भ जोड़ सकते हैं अथवा कठिन शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश के पृष्ठ उलट सकते हैं न ही श्रोता इस स्थिति में होता है कि किसी विद्वान या ज्ञानी व्यक्ति से परामर्श कर सके । एक बार जो वाक्य, उक्ति अथवा शब्द प्रसारित हो गया, वह हवा के झोंके की भांति आगे निकल जाता है । इसलिए सफल प्रसारण की बुनियादी आवश्यकता है भाषा की सरलता ।

17.4.2 शब्द रचना

अब प्रश्न यह है कि सरल भाषा का स्वरूप क्या हो? एक मत यह है कि उर्दू के महसूस, मौजूद, कसम, खुशी, अफसोस, सदी, सिलसिला, खास, वक्त, फिक्र, दावत, चीज, पाक, फिजूल जैसे प्रचलित शब्दों का हिन्दी के समाचारों, वार्ताओं तथा अन्य कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाए । दूसरा पक्ष यह है कि हिन्दी संस्कृत से निकली है तथा अन्य भारतीय भाषाएं भी संस्कृत के निकट हैं, अत: संस्कृतनिष्ठ शब्द यथा-उन्मूलन, मानचित्र, प्रोत्साहन, यथावश्यक,

वस्तुस्थिति, सर्वेक्षण, प्रावधान, विश्वसनीय, परिस्थिति, शताब्दि, उपस्थित, क्रमशः, निमंत्रण, स्वतन्त्रता, प्रकोष्ठ, परिवर्तन, सर्वाधिक, विश्लेषण तथा इसी प्रकार के शब्द प्रयोग किए जाए जिससे वह हिन्दी भाषी जनता द्वारा ही नहीं सभी भाषा-भाषियों द्वारा समझी जाएगी । वास्तव में दोनों पक्ष अपनी-अपनी जगह सही हैं । किन्तु शब्दों का मापदंड है उसका अधिक से अधिक लोगों द्वारा बोला एवं समझा जाना और बोलचाल में प्रयुक्त किया जाना । इसलिए उर्दू के जो शब्द हिन्दी में बोलचाल के अंग बन गए हैं, उनका प्रयोग करना यथेष्ट है तथा संस्कृत के जो शब्द लंबे समय से प्रयोग में आ रहे हैं, उन्हें लेना हितकर है । उदाहरण के लिए ''प्रोत्साहन'' और ''बढ़ावा'', ''विशेष'' और ''खास'', ''भाग लिया'' और ''हिस्सा लिया,'' ''उपस्थित'' तथा ''हाजिर'', ''उत्तर'' तथा ''जवाब'', ''प्रयास'' और ''कोशिश'', ''प्रसन्नता'' तथा ''खुशी'' दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है । आधार है शब्द का प्रचलित होना । प्रसारक से यह अपेक्षित है कि उसे इस बात का ज्ञान हो कि कौन से शब्द सामान्य व्यक्ति द्वारा समझे जा सकते हैं । यही कारण है कि आकाशवाणी के प्रसारणों में ''किन्तु'', ''अपितु'', ''एवं'', ''अन्यथा'', ''यद्यपि'', ''यदि'', ''तथापि'' की बजाए क्रमश : ''लेकिन'', ''बल्कि'' और ''नहीं तो'', ''हालांकि'', ''अगर'', ''तो भी'' आदि का प्रयोग अधिक होता है । इसी प्रकार ''उपरान्त'', ''पश्चात्'', ''पूर्व'', ''सम्मुख'', ''पुनः'' के स्थान पर ''बाद'', ''पहले'', ''सामने'', ''फिर'' शब्दों के प्रयोग को बेहतर माना जाता है । शब्दों का चयन करे समय यह भी ध्यान में रखा जाता है कि उन्हें बोलने के लिए वाणी को प्राणायाम न करना पड़े ।

ऐसी ही समस्या अंग्रेजी शब्दों को लेकर पैदा होती है । कसौटी अंग्रेजी शब्दों के बारे में भी यही है कि अधिक से अधिक लोग समझ सकें तथा भाषा की आत्मा भी नष्ट न हो । कई बार अंग्रेजी शब्दों के दुरूह अनुवाद के कारण हमारी भाषा बोझिल बन जाती है तो कभी अंग्रेजी शब्दों के अंधाधुंध प्रयोग से अपनी भाषा को पहचानना मुश्किल हो जाता है । टेलीफोन, इंजीनियर, डाक्टर, मशीन, कम्प्यूटर, रेलवे स्टेशन, टीम, स्टम्प, क्रीज, मैच, गोल, कम्पनी, टेक्नोलोजी, कार्टूनिस्ट, कांस्टेबल, फैलो, फोटोग्राफर, बजट, कर्फ्यू आदि अनेक शब्द हैं, जो बोलचाल में हिन्दी के अपने शब्द बन चुके हैं । दूसरी ओर ऐसे शब्द भी है जो अंग्रेजी तथा हिन्दी शब्दों को मिलाकर बने हैं । न वे पूरी तरह अंग्रेजी शब्द है और न ही संस्कृत के आधार पर उनकी रचना की गई है । ये है रेलगाड़ी, टेलीफोन केन्द्र, बस अड्डा, डाक टिकिट आदि । भाषा के प्रचलित रूप के प्रयोग पर बल देने का ही परिणाम है कि आकाशवाणी में एक ही अर्थ अभिव्यक्त करने के लिए उनके हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों पर्याय खुलकर प्रयोग होते हैं । यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि एक ही कार्यक्रम में किसी शब्द का बार-बार प्रयोग करना रोचकता में बाधक होता है । इसलिए किसी अर्थ में एक बार हिन्दी शब्द और दूसरी बार उसका प्रचलित अंग्रेजी पर्याय इस्तेमाल कर लिया जाता है । उदाहरण के लिए थाना और पुलिस स्टेशन, स्कूल तथा विद्यालय, कॉलेज और महाविद्यालय, प्रेस और समाचारपत्र, बिल और विधेयक, समिति और कमेटी, ग्रुप और गुट, पास तथा पारित, कारखाना और मिल, दल और पार्टी, अफसर और अधिकारी, सीट और स्थान, इकाई और यूनिट बेझिझक प्रयोग में किए जाते हैं ।

17.4.3 वाक्य रचना

शब्द भाषा की मूल इकाई है, परन्तु वाक्यों से पृथक उनका कोई अस्तित्व नहीं है । इसलिए वाक्य ऐसे बोले जाएं, जो सीधे श्रोता की समझ रूपी झोली में जाएं । उसे वाक्य का अर्थ निकालने के लिए बौद्धिक कसरत नहीं करनी पड़े । वाक्य यदि जटिल होंगे तो उसमें प्रयुक्त सरल शब्दों की नियति भी कीचड़ में गिरे फूलों से अधिक नहीं होगी । इसके लिए सबसे प्रमुख आवश्यकता है वाक्यों का संक्षिप्त होना । लंबे वाक्यों में उलझा देने से श्रोता अर्थ का अनर्थ समझ लेगा तथा प्रसारण का लक्ष्य ही विफल हो जाएगा । जिस बात को मुद्रित या लिखित माध्यम में एक वाक्य में कहकर चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है उसे श्रव्य माध्यम में दो या तीन वाक्यों में कहा जाना चाहिए । इसका उदाहरण देखें-'राष्ट्रपति के.आर. नारायणन ने आज चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में युवकों की चुनौती का डटकर मुकाबला करने का आह्वान किया तथा लोगों को अलगाववादी शक्तियों से सावधान रहने की चेतावनी दी ।'

व्याकरण की दृष्टि से इस वाक्य में कोई त्रुटि नहीं है और न ही इसमें बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग किया गया है । परन्तु यह वाक्य प्रसारण के लिए उपयुक्त नहीं है । आकाशवाणी का संपादक इस समाचार को इस प्रकार बनाएगा-'राष्ट्रपति ने लोगों से कहा है कि वे अलगाववादी शक्तियों से सावधान रहें । श्री आर.के. नारायणन आज चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बोल रहे थे । उन्होंने युवकों को समय की चुनौती का डटकर मुकाबला करने का आह्वान किया ।'

कई बार वाक्य छोटे तो होते है, किन्तु उनकी रचना इतनी जटिल होती है कि उसे समझने के लिए मस्तिष्क पर दबाव डालना पड़ता है । एक बानगी प्रस्तुत है-'मनमोहन सिंह के बजट ने उदारता के युग का सूत्रपात करके अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है जो चार दशकों से बनी हुई उस स्थिति के विपरीत है, जिसकी समाजवाद के विरोधी 'परमिट कोटा राज' कहकर निंदा करते रहे हैं ।'

यह वाक्य बहुत बड़ा नहीं है, किन्तु जटिल होने के कारण तत्काल समझ में नहीं आता। इसे सरल बनाने के लिए इसे दो वाक्यों में तोड़ना हितकर है । हालांकि कम समय में अधिक बात कहना प्रसारण का मूल सिद्धान्त है किन्तु अस्पष्ट तथा अबूझ बात कहना तो समय को ही व्यर्थ करना है । इसलिए भाषा को सरल बनाने के लिए यदि कुछ सैंकड अधिक खर्च करने पड़े भी तो संकोच नहीं करना चाहिए । इस वाक्यों को रेडियो वार्ताकार यों कहेगा-'मनमोहन सिंह के बजट ने अर्थव्यवस्था में उदारता के नए युग का सूत्रपात किया है । यह नई दिशा पिछले चार दशकों से चले आ रहे 'परमिट कोटा' राज के विपरीत है' ।

17.5 भाषा का प्रयोग

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सभी तरह के कार्यक्रमों की भाषा एक जैसी होगी। उदाहरण के लिए समाचारों तथा वार्ता की भाषा आमफहम होती है लेकिन किसी तकनीकी विषय

पर वार्ता या किसी साहित्यिक विषय पर बनाए गए कार्यक्रम की भाषा तनिक परिनिष्ठित होगी। इसी प्रकार संगीत, दर्शन, धर्म आदि विषयों पर प्रसारित कार्यक्रमों की भाषा अलग होगी ।

इसके अलावा अलग-अलग वर्गों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम प्रसारित होते हैं । कुछ कार्यक्रम ऐसे भी है जो विशिष्ट तथा शिक्षित वर्गों के लिए है । इनमें उसी के अनुरूप साहित्यिक अथवा परिनिष्ठत भाषा प्रयोग की जा सकती है । संगीत के पाठ के प्रसारण में संगीत से संबंधित शब्दावली का प्रयोग किया जाएगा, जिसे सामान्य श्रोता नहीं समझ सकता । इसी प्रकार किसी साहित्यकार कि साहित्यिक उपलब्धियों के संबंध में प्रसारित वार्ता यदि सामान्य से उच्च स्तर कि भाषा में पढ़ी जाती है तो इसमें कोई दोष नहीं । आध्यात्मिक अथवा दार्शनिक विषय पर प्रसारित वार्ता अथवा भेंटवार्ता में भी जटिल और दुरूह शब्दों के प्रयोग से बचना कठिन है, क्योंकि उसके बिना अभीष्ट बात कही ही नहीं जा सकती । टेकनोलोजी, विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियर, एकाउंटेंसी आदि अनेक विशिष्ट विषय हैं, जिनकी चर्चा करते समय संबंधित विषय में सीमित रूप से प्रयोग होने वाले शब्द अथवा वाक्यावली का इस्तेमाल करना आवश्यक हो जाता है । इनमें अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग होना अनिवार्य है, क्योंकि अनेक शब्द ऐसे होते हैं, जिनके हिन्दी पर्याय प्रयुक्त करने में श्रोताओं के पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा । इस संदर्भ में एक उपाय यह भी है कि कभी-कभी हिन्दी पर्याय के साथ प्रचलित अंग्रेजी शब्द भी दे दिए जाएं किन्तु बार-बार ऐसा करने से कार्यक्रम के प्रवाह और प्रभाव पर चोट आती है । बाईपास सर्जरी, माक्रोवेव ट्रांसमीटर, अल्ट्रा वायलेट, टेट्नस, टाक्साइड आदि अंग्रेजी शब्दों को लेने में कोई परहेज नहीं होनी चाहिए । इसी प्रकार रेडियो नाटकों में भाषा कुछ साहित्यिक तथा लाक्षणिक हो सकती है । नाटकों के अखिल भारतीय कार्यक्रम में विभिन्न भाषाओं के नाटकों का अनुवाद प्रसारित किया जाता है । इनमें भी भाषा कई बार कठिन हो जाती है किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अनुवाद करते समय भाषा कृत्रिम न बन जाए ।

दूसरी ओर विशिष्ट श्रोताओं के लिए अनेक नियमित कार्यक्रम प्रसारित होते है जिनमें बच्चों, महिलाओं, मजदूरों, किसानों, ग्रामीण श्रोताओं, युवकों, सैनिकों आदि के लिए कार्यक्रम सम्मिलित है । इन कार्यक्रम की भाषा एकदम सरल और सहज होती है । सभी कार्यक्रमों में किसी विषय से संबंधित व्यक्तियों की भेंट वार्ताएँ भी प्रसारित की जाती है । जिस व्यक्ति से इन्टरव्यू लिया जाता है उससे भी अपेक्षा की जाती है कि वह सहज रूप से अपनी बात रखे । कई बार संपादन करते समय कठिन, जटिल अंश को काट दिया जाता है, ताकि श्रोताओं को बात समझ में आ जाए ।

17.6 रेडियो समाचारों की भाषा

आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रमों में संगीत के बाद सबसे अधिक समाचार सुने जाते हैं। एक प्रकार से समाचार तथा राजनीतिक विषयों के कार्यक्रम ही मुख्य रूप से इस संगठन की आलोचना, निष्पक्षता और विश्वसनीयता की कसौटी होते हैं । देश की अधिसंख्यक जनसंख्या अनपढ़ होने तथा मुद्रित सामग्री और टेलीविजन की पहुँच सीमित और महंगी होने के कारण आकाशवाणी के समाचार बुलेटिन बड़ी संख्या के लोगों के देश-विदेश की घटनाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकास की नवीनतम जानकारी देते हैं । विदेशों में बसे भारतीयों को भी यहाँ की

गतिविधियों से अवगत कराके उन्हें देश के साथ जोड़े रखने के लिए विदेश समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं । समाचारों के महत्व के अनुरूप इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा का महत्व है । यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात हैं कि समाचारों को सरल, सुबोध तथा सहज भाषा और शैली में प्रस्तुत करना जितना आवश्यक है उतना ही कठिन है । इसके दो प्रमुख कारण है । एक तो यह कि समाचार बनाने के लिए समय बहुत कम मिल पाता है । समय सबसे बड़ी समस्या होती है । बाकी कार्यक्रम के लिए संशोधन, परिवर्तन करने की गुंजाइश रहती है । दूसरा यह कि समाचार अनेक स्रोतों से प्राप्त होते हैं । मुख्य स्रोत है समाचार समितियां, जिनकी शैली समाचारपत्रों में प्रकाशित होने वाले समाचारों जैसी होती है । इसके अलावा कई ऐसे शब्द अथवा वाक्य होते हैं जो बहुत जटिल तथा विशिष्ट विषयों से संबंधित होते हैं । उन्हें सामान्य व्यक्ति के समझने योग्य बनाने के लिए विस्तृत ज्ञान, सूझबूझ तथा प्रत्युत्पन्नमतित्व की आवश्यकता है ।

बोध प्रश्न-2

1. रेडियो कार्यक्रम में भाषा महत्वपूर्ण क्यों है?
2. आकाशवाणी में हिन्दी का क्या स्थान है?
3. क्या सभी तरह के कार्यक्रमों की भाषा एक जैसी होनी चाहिए ।
4. रेडियो की भाषा के आवश्यक गुणों का उल्लेख कीजिए ।
5. भाषा की सरलता का मापदंड क्या है?

17.7 अनुवाद

हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के समाचारों के संदर्भ में बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि समाचार सामग्री मुख्यतया अंग्रेजी में उपलब्ध होती है । इसे हिन्दी में अनुवाद करने और उसे रेडियो समाचार का रूप देने के लिए दोनों भाषाओं के सम्यक् ज्ञान तथा स्तरीय पत्रकारिता की आवश्यकता होती है । इसी कारण कभी-कभी हिन्दी के समाचारों की भाषा पर कृत्रिमता और क्लिष्टता का आरोप भी लगाया जाता है । परन्तु संभवत: बहुत कम लोग जानते होंगे कि नई दिल्ली में समाचार सेवा प्रभाग में अधिकतर समाचार पहले अंग्रेजी में बनते हैं तथा उन्हीं के आधार पर हिन्दी बुलेटिन तैयार होते हैं, जबकि सबेरे और शाम के राष्ट्रीय हिन्दी समाचार अंग्रेजी समाचारों से पहले प्रसारित होते हैं । हिन्दी पूल भी काम कर रहा है किन्तु उसमें भी मूल हिन्दी समाचार बहुत अधिक नहीं होते ।

17.7.1 भावानुवाद

भाषा अनुवाद के कारण भाषा में आने वाली कृत्रिमता से बचने के लिए अनुवादक को कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है और कुछ विशेष गुण प्राप्त करने होते हैं ।

सबसे पहले अनुवादक को स्रोत भाषा यानी जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है और लक्ष्य भाषा यानी जिसमें अनुवाद किया जाता है, का अच्छा जान होना चाहिए क्योंकि अनुवाद संदर्भ के अनुरूप करना होता है । शब्दानुवाद की बजाए भावानुवाद पर बल देना चाहिए । किस भी वाक्य या अनुच्छेद को पढ़कर उसके शब्दों के अर्थ के साथ-साथ समूचे संदर्भ में शब्दों एवं

वाक्यों का अर्थ समझकर ही दूसरी भाषा में उसे रूपान्तरित किया जाता है । इन्हीं सब बातों के कारण कारण अनुवाद को कला माना गया है । निरन्तर अभ्यास तथा भाषा एवं विषयों के ज्ञान में वृद्धि करके इस कला को निखारा जा सकता है ।

17.7.2 शब्द प्रयोग

अनुवाद भाषा की स्वाभाविकता में एक प्रमुख बाधा है । तत्काल ऐसा अनुवाद करना पड़ता है जिसमें मूल तथ्य का सही अर्थ भी प्रकट हो तथा सामान्य से सामान्य व्यक्ति की समझ में भी आ जाए । सरकारी माध्यम होने के कारण यह भी ध्यान रखना अनिवार्य होता है कि किसी कथन, निर्णय अथवा नीति संबंधी वक्तव्य की गलत व्याख्या न हो जाए । कई बार ऐसे वाक्यांश, शब्द अथवा कथन अंग्रेजी में प्रयुक्त होते हैं, जिनका अनुवाद केवल भाषा के ज्ञान से नहीं अपितु विवेक, प्रतिभा तथा बुद्धिकौशल से ही संभव है । मार्च, 1985 में संसद के बजट अधिवेशन में प्रधानमंत्री ने कलकत्ता के लिए 'डाइंग सिटी' शब्द प्रयोग किया, जिस पर विपक्ष ने काफी हो हल्ला मचाया । इसका शाब्दिक अनुवाद तो 'मर रहा नगर' अथवा 'मरणासन्न नगर' हो सकता है । परन्तु इससे बात तो स्पष्ट नहीं होती । हमारे देश में अंग्रेजी समाचारों की भाषा पढ़े-लिखे लोगों को ध्यान में रखकर लिखी जाती है, जबकि हिन्दी कार्यक्रम तैयार करते हुए राह तथ्य नहीं भुलाया जा सकता कि उन्हें पान वाले, तांगे वाले, मजदूर और किसान को भी सुनना है । इसलिए 'डाइंग' के लिए यही कहा गया है कि 'हालत बहुत खराब होतीं जा रही है' । कठिन शब्दों को सरल भाषा में व्याख्या करने के साथ-साथ अनेक अर्थों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का संदर्भ के अनुरूप अर्थ निकालना होता है । किसी सभा के बारे में एक समाचार में 'स्पीकर' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ । एक बार लोकसभा के स्पीकर के लिए तथा दूसरी बार भाषण देने वाले किसी व्यक्ति के बारे में । पहले 'स्पीकर' के लिए अध्यक्ष तथा दूसरे के लिए 'वक्ता' शब्द का प्रयोग किया जाएगा । इसी प्रकार किसी देश के प्रेसीडेंट और किसी संस्था के प्रेसीडेंट एक साथ किसी मंच पर हों तो गड़बड़ होने की गुंजाइश रहती है । 'एसेम्बली आफ पीपुल' तथा 'राजस्थान एसेम्बली' में पहले संदर्भ में 'लोगों का समूह' तथा दूसरे अर्थ में 'विधानसभा' लिखा जाएगा ।

17.7.3 वाक्य प्रयोग

हम अंग्रेजी प्रयोगों और मुहावरों की हू-ब-हू अनुवाद करने की बजाए उसे अपनी भाषा की परम्परा तथा मुहावरों में व्यक्त करें । "India started on a brisk note with Opener Tendulkar scorings 57" इस वाक्य को यों बोला जा सकता है-'भारत की शुरूआत बहुत बढ़िया रही । प्रारंभिक बल्लेबाज तेंदुलकर ने 57 रन बनाए' । यदि इसे अंग्रेजी रचना के अनुसार एक वाक्य में लिखने का प्रयास किया जाता तो निश्चित रूप से भाषा बोझिल और कृत्रिम बनती ।

एक वाक्य और देखिए-Mr. Mubarak said, he is prepared to host a meeting in Cairo. 'होस्ट' क्रिया का अर्थ मेजबानी करना होता है, परन्तु हिन्दी में बैठक की

मेजबानी करना नहीं लिखा जाता । अत: इसे यों लिखा जाएगा, 'श्री मुबारक ने कहा कि वे अपने यहाँ बैठक आयोजित करने को तैयार है' । इसी प्रकार Mrs. Gandhi's body is lying in state at Teen Murti House."

'मिसेज गाँधीज़ बाडी इज लाइंग इन स्टेट एट तीनमूर्ति हाऊस' का अपनी भाषा की संस्कृति के अनुसार सही अर्थ व्यक्त करता हुआ अनुवाद यह होगा-'श्रीमती गाँधी का पार्थिव शरीर अंतिम दर्शनों के लिए तीनमूर्ति भवन में रखा हुआ है' । 'रेड कारपेट वेल्कम' के लिए 'लाल गलीचा स्वागत' नहीं 'भव्य स्वागत' बोला जाना चाहिए तथा 'एबाउट ट्वेंटी इंडियन मैन वर इन एन एन्काउंटर विद पाकिस्तानी फोर्सेज इन कारगिल' को यदि यह लिखा जाए कि 'कारगिल में आज पाकिस्तानी सेना के साथ एक मुठभेड़ में 20 भारतीय सैनिक शहीद हो गए' तो उसका प्रभाव बढ़ जाएगा । अनुवाद करने से जहाँ भाषा में कृत्रिमता आती है, वही कभी-कभी कुशल हाथों में पड़कर समाचार उल्टे और निखर जाता है । उदाहरण के लिए नई राजस्थान विधानसभा के पहले अधिवेशन की समीक्षा से संबंधित समाचार को एक अंग्रेजी समाचारपत्र में इस प्रकार प्रारम्भ किया गया-

"With a battery of stalwarts including the presidents of the state units of the three major parties and indom table Mr. Bhairon Singh Shekhawat of the B.J.P. and the Former Chief Minister, one had expected from the opposition an orchestrated attempt to deal with the ruling party, particularly on issues such as the reservation, the spectre of famine looming large over one third of the state and use of contaminated water due to drinking water crisis which has led to the out break of epidemics.'

लगभग 90 शब्दों के इस वाक्य का ज्यों का त्यों अनुवाद करके समाचारों में प्रसारित कर दिया जाए तो श्रोता तो दूर, सम्भवत: स्वयं संपादक और वाचक के पल्ले भी कुछ न पड़े । इसे रेडियो से प्रसारित करने के लिए हिन्दी में निम्न प्रकार से लिखा जा सका है । यह रूप अंग्रेजी रूप से भी सुन्दर, सरल और बोधगम्य होगा । 'आशा तो यह थी कि इस बार विपक्ष सदन में एकजुट होकर सत्ता-रूढ़ दल से लोहा लेगा, क्योंकि विपक्ष में भारतीय जनता पार्टी के दबंग नेता और भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री भैंरोसिंह शेखावत और तीन प्रमुख दलों की राज्यशाखाओं के अध्यक्ष सहित अनेक अग्रणी नेता मौजूद हैं । साथ ही आरक्षण मामला, राज्य के एक तिहाई इलाके में अकाल तथा पीने के पानी की कमी के कारण दूषित पेय जल के इस्तेमाल से पैदा हुई महामारी जैसी अनेक ज्वलंत समस्याएँ उनके सामने थी ।'

17.8 आदर्श रेडियो भाषा

अनुवाद में प्राय: शब्द संख्या बढ़ जाती है, परन्तु इस रूपान्तर में शब्दों में वृद्धि हुई तथा सारी बात अधिक प्रभावशाली और सहज ढंग से कह दी गई है । यह तभी संभव है कि जब रेडियो पत्रकारिता की आवश्यकताओं, मर्यादाओं और मूल सिद्धान्तों की हमें अच्छी तरह

समझ हो । जिस भाषा में हम प्रसारण कर रहे हैं उसके अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत तथा कुछ अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान हमारी संप्रेषणीयता और अभिव्यक्ति में चार चांद लगा सकता है । प्रसारण कर्मी व्यक्ति को सामान्य पत्रकार, विद्वान अथवा विशेषज्ञ की भांति अन्य विषयों का ज्ञाता तो होना है, परन्तु सामान्य व्यक्ति की समझ के अनुरूप बोलचाल की भाषा ही उसे प्रयोग करनी है । निष्कर्ष रूप में हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि स्व. भवानी प्रसाद मिश्र की एक कविता की प्रसिद्ध पंक्तियों में इस समूचे पाठ का सार समाहित हो जाता है-

जिस तरह हम बोलते हैं,
उस तरह तू लिख ।
और इसके बाद भी
हमसे बड़ा तू दिख ।

बोध प्रश्न-3

1. रेडियो के समाचार कार्यक्रम में अनुवाद की बाध्यता क्यों है?
2. शब्दानुवाद और भावानुवाद में क्या अन्तर है?
3. अनुवाद के कारण भाषा कृत्रिम क्यों बनती है?
4. दस ऐसे अंग्रेजी शब्द बताइए जिनका हिन्दी कार्यक्रमों में सहज रूप से प्रयोग होता है।

17.9 सारांश

इस पाठ में हमने भारत में रेडियो की महत्ता तथा रेडियो में भाषा के महत्व के बारे में पढ़ा । हमने यह भी जाना कि हम देश में रेडियो में पहले अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी का प्रयोग होता था किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात हिंदुस्तानी की जगह हिन्दी का प्रयोग होने लगा । रेडियो कार्यक्रमों में हिन्दी का विशेष स्थान है । हमें यह भी ज्ञात हुआ कि रेडियो की भाषा सरल सुबोध और सहज होनी चाहिए । किन्तु अनुवाद की अनिवार्यता के कारण इसमें कभी-कभी कृत्रिमता आ जाती है । अंत में हमने यह पाया कि अनुवाद में सावधानी बरतकर भाषा को दुरूहता के दोष से दबाया जा सकता है और हमें रेडियो कार्यक्रमों में वैसी ही इस्तेमाल करनी चाहिए जैसी हम बोलते हैं ।

17.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Indian Broadcasting - Mr. H.R. Luthra, Publications Division, New Delhi
2. This is All India Radio - U.L. Barua, Publications Division, New Delhi
3. Broadcasting and the People - Mehra Masani, National Book Trust, New Delhi.
4. National Communication - R.K. Chatterjee, National Book Trust, New Delhi.
5. Two Voices - P.C. Chatterjee, Hemkunt Publications, New Delhi.

6. Broadcasting in India - G.C. Awasthi, Allied Publications, New Delhi
7. Hand Book of Broadcasting - Waldo Abbot, Mc-Graw Hill Book Company, London.

17.11 निबन्धात्मक प्रश्न अनुवाद

1. 'प्रसारण की भाषा की सबसे बड़ी आवश्यकता है-सरलता ।' इस कथन की व्याख्या कीजिए ।
2. आकाशवाणी के समाचारों का अनुवाद करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
3. 'रेडियो पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता से भिन्न है', भाषा के सन्दर्भ में इस उक्ति का विश्लेषण कीजिए ।
4. भाषा को प्रसारण योग्य बनाने में क्या-क्या कठिनाइयाँ आती हैं? संक्षेप में वर्णन कीजिए ।
5. अनुवाद भाषा की सरलता और स्वाभाविकता में एक प्रमुख बाधा है, यह कहाँ तक सत्य है?
6. रेडियो की भाषा पत्र-पत्रिकाओं की भाषा से क्यों और कैसे भिन्न होती है? विवेचना कीजिए ।

इकाई 18 टेलीविजन के समाचार लेखन प्रविधि

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य
18.1 प्रस्तावना
18.2 टेलीविज़न समाचार
18.2.1 दूरदर्शन के समाचार बुलेटिन
18.3 समाचार लेखन
18.3.1 समाचार की संरचना
18.3.1.1 घटनाक्रम
18.3.1.2 चित्रात्मक्ता
18.3.1.3 संक्षिप्तता
18.3.1.4 संभाषणशीलता
18.3.1.5 रिपोर्ट
18.3.2 पूरक कापी
18.4 समाचार बुलेटिन का स्वरूप और प्रक्रिया
18.4.1 क्रम निर्धारण
18.4.2 फ्लैश
18.4.3 मुख्य समाचार
18.5 समाचार को चित्रात्मक बनाने के अन्य साधन
18.5.1 स्टिल फोटो
18.5.2 सी.जी. (करैक्टर जेनेरेशन
18.5.3 मानचित्र और ग्राफिक्स
18.5.4 लोगो (प्रतीक चिह्न)
18.6 भाषा
18.7 अनुवाद
18.8 सारांश
18.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
18.10 निबन्धात्मक प्रश्न

18.0 उद्देश्य

इस पाठ का उद्देश्य टेलीविज़न समाचार लेखन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालना है। आप जानते हैं कि टेलीविजन श्रव्य के साथ-साथ दृश्य माध्यम है, अत: इसके प्रसारित समाचारों में फिल्मों, चित्रों, वीडियो तथा अन्य प्रकार की दृश्यात्मक सामग्री का समावेश अनिवार्य रूप से रहता है । समाचार बुलेटिनों के प्रसारण के विविध चरणों तथा इसके अनेक

अंगों की जानकारी देते हुए आपको बताया जाएगा कि किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करके समाचारों को सहजता में समझ में आने वाला तथा सुबोध बनाया जा सकता है । इस इकाई में आप समाचारों के संपादन और प्रस्तुतीकरण के तकनीकी एवं व्यावहारिक पहलुओं की भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

टेलीविज़न समाचारों के विशिष्ट स्वरूप को स्पष्ट करते हुए यह भी बताया जाएगा कि वे रेडियो तथा अखबारों के समाचारों की तुलना में किस प्रकार अधिक प्रभावशाली हैं और इनके लेखन, संपादन एवं प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया उनसे भिन्न एवं जटिल है । हिन्दी समाचार लिखने में अनुवाद कौशल की भी आवश्यकता है । अतः समाचारों के अनुवाद की तकनीक से संबंधित ज्ञान भी आप प्राप्त कर सकेंगे । इस पाठ के पढ़ने के बाद आप टी.वी. के लिए समाचार लेखन एवं संपादन की कला को आत्मसात् करने तथा थोड़े से अभ्यास से इसे स्वयं कर सकने में समर्थ पाएंगे ।

18.1 प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी को मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण एवं उपलब्धियों भरा कालखंड कहा जा रहा है, जो उचित ही है । इस कालखंड में असंख्य ऐसे क्रान्तिकारी अनुसंधान हुए हैं, जिनसे हमारे भौतिक जीवन का कायापलट हो गया है । सूचनातंत्र में नित नई उपलब्धियाँ एवं तकनीकों की खोज, विशेषकर उपग्रह संचार प्रणाली के विकास से सारी दुनिया बहुत करीब आ गई है । उपग्रह टेक्नोलॉजी के कारण टेलीविजन तथा रेडियो जैसे जनसंचार माध्यमों के विस्तार एवं प्रभाव क्षमता में कई गुना वृद्धि हो गई है । आप एक डिश एंटीना लगाकर दुनियाभर से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम टी.वी. पर अपने घर बैठे देख सकते है ।

किन्तु भारत में दूरदर्शन या टेलीविजन का इतिहास बहुत पुराना नहीं है । भारत में टी.वी. के इतिहास का एक रोचक पहलू यह है आज जिस माध्यम को मनोरंजन और व्यापार वृद्धि का प्रमुख साधन माना जा रहा है, उसकी शुरूआत सामाजिक शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से हुई थी । 15 सितम्बर, 1959 को दिल्ली में टेलीविजन का शुभारम्भ हुआ । उस समय सप्ताह में केवल दो दिन एक-एक घंटे के लिए कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे । इन कार्यक्रमों में लोगों के दृष्टिकोण में गतिशीलता लाने वाली जानकारी दी जाती थी ।

1982 में आयोजित एशियाई खेलों ने दूरदर्शन को नई अंगड़ाई लेने का अवसर दिया । रंगीन टेलीविजन शुरू होने के अलावा राष्ट्रीय कार्यक्रम सेवा अस्तित्व में आई और अभी तक फिल्म, चित्रहार तथा शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों का माध्यम मात्र माने जाने वाले दूरदर्शन को गंभीरता से लिया जाने लगा । इसके फलस्वरूप मध्यम वर्ग में टेलीविजन सेट खरीदने की होड़ लग गई ।

जुलाई, 1983 में एक क्रांतिकारी कदम उठाया गया । सरकार ने देश भर में विभिन्न स्थानों पर ट्रांसमीटर लगाने की एक विशाल योजना प्रारम्भ की, जिसके अन्तर्गत लगभग प्रतिदिन एक ट्रांसमीटर चालू किया गया । इस समय दूरदर्शन की गिनती विश्व के एक विशालतम टी.वी. नेटवर्क के रूप में होती है और लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या तक इसकी पहुँच हो गई है । अलग-अलग क्षमता के 1060 ट्रांसमीटर तथा लगभग 50 कार्यक्रम निर्माण

केन्द्र चल रहे हैं । मेट्रो चैनल को उपग्रह से जोड़कर उसके कार्यक्रम सारे देश में उपलब्ध हो गए हैं । इससे वस्तुत: ऐसा लगता है कि दूरदर्शन के राष्ट्रीय स्तर पर दो चैनल निरन्तर प्रसारित हो रहे हैं । निजी निर्माताओं के कार्यक्रम उन पर अधिकांश प्रसारित किए जाते हैं । 15 अगस्त, 1993 से अनेक उपग्रह चैनल भी प्रारम्भ हो गए हैं । इनके अलावा केबल टी.वी. को नियमित करने का विधेयक आ गया है, जिससे केबल ऑपरेटरो के कामकाज को नियंत्रित किया जा रहा है । किन्तु दुर्भाग्यवश टेलीविजन इस समय सूचनात्मक एवं ज्ञानवर्धन, कार्यक्रम कम और व्यावसायिक पक्ष से भरपूर मनोरंजन कार्यक्रम अधिक प्रसारित कर रहा है ।

18.2 टेलीविजन समाचार

अभी आपने जाना कि टेलीविजन आज के विश्व में मनोरंजन, सूचना तथा शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली माध्यम है । सूचना एवं ज्ञानवृद्धि की दृष्टि से किसी भी प्रसारण संगठन में समाचार तथा सामयिक विषयों के कार्यक्रमों का केन्द्रीय स्थान रहता है । वास्तव में प्रसारण तंत्र की विश्वसनीयता उसे समाचार एवं विचार कार्यक्रमों के स्वरूप एवं प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करती है । भारत में दूरदर्शन ही टी.वी.प्रसारण का मुख्य संगठन है । अत: इसी के समाचारों की समीक्षा की जाएगी । दूरदर्शन समाचारों का चार दृष्टियों से विशेष महत्व है । पहला तो यह कि दूरदर्शन सीधे सरकार के नियंत्रण में हैं, इसलिए इसके समाचारों के कई बार राजनीतिक फलितार्थ भी निकलते हैं । आप सब जानते हैं कि जितनी बार भी आकाशवाणी एवं दूरदर्शन को स्वायतत्ता देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया, उसके पीछे कारण केवल समाचारों एवं विचारों के कार्यक्रम की निष्पक्षता पर आंच आना रहा है । यह भी सच है कि इन संगठनों को सीमित रूप में ही सही स्वायता बनाने के विधेयक तक पारित होने के बाद भी उन्हें अभी तक स्वायता नहीं मिली । संभवत: इसका मुख्य कारण है समाचारों व विचारों के कार्यक्रमों पर सरकारी अंकुश बनाएं रखने की राजनीतिक लालसा ।

दूसरा पहलू है देश में साक्षरता का अभाव, जिसकी वजह से समाचारपत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं की सार्थकता एवं उपयोगिता कम हो जाती है और रेडियो व टी.वी. समाचारों पर निर्भरता बढ़ जाती है । दूरदर्शन समाचार चूंकि श्रव्य तथा दृश्य दोनों रूपों में घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं अत: लिखना-पढ़ना न जानने वाले व्यक्ति भी उन्हें सरलता से समझ लेते हैं । तीसरा पहलू है समाचारों, विशेषकर राष्ट्रीय समाचारों के बारे में दूरदर्शन का लगभग एकाधिकार। मनोरंजन तथा अन्य प्रकार के कार्यक्रम अब विदेशी चैनलों निजी निर्माताओं को दिए गए मेट्रो चैनल तथा केबल चैनल पर देखे जा सकते हैं । परन्तु, समाचारों के लिए आज भी कुछ लोग दूरदर्शन ही देखना चाहते हैं । अब निजी चैनलों पर समाचार और सामयिक कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित किये जा रहे हैं । यह कहना अनुचित न होगा कि आज किसी भी टी.वी. चैनल को समाचार बुलेटिन के प्रसारण के बिना दर्शक उसे मान्यता देने को तैयार नहीं है ।

चौथा पहलू यह है कि अभी हाल तक दूरदर्शन का सरकारी माध्यम होने का कारण समाचारों की सच्चाई एवं तथ्यात्मकता की दृष्टि से, दूरदर्शन समाचारों की विश्वसनीयता की भी

एक नई परिभाषा उभरकर सामने आई । साथ ही, विभिन्न सैटेलाइट टी.वी चैनलों पर समाचार आदि के नियमित प्रसारण से एक नई प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई है ।

18.2.1 दूरदर्शन के समाचार बुलेटिन

दूरदर्शन के समाचारों का प्रसारण सातवें दशक के मध्य में प्रारम्भ हुआ । उस समय 10 मिनट का केवल एक बुलेटिन हिन्दी में प्रसारित होता था जो दिल्ली के आस-पास ही सुना जा सकता था । यह बुलेटिन आकाशवाणी के हिन्दी समाचार एकांश में तैयार किया जाता था और वहां से टी.वी. स्टुडियो में ले जाकर प्रसारित किया जाता था । स्वतन्त्र दूरदर्शन निदेशालय की स्थापना के बाद भी कुछ वर्षों तक आकाशवाणी के संपादक दूरदर्शन में जाकर बुलेटिन तैयार करते रहे । उस समय बुलेटिनों में दृश्य सामग्री बहुत कम रहती थी । वास्तव में समाचार को वास्तविक स्वरूप राष्ट्रीय प्रसारण प्रारम्भ होने के बाद मिला जब रात को 8.40 पर हिन्दी में तथा 9.30 बजे अंग्रेजी में 20.20 मिनट के बुलेटिन प्रसारित होने लगे । 23 फरवरी, 1987 को प्रात:कालीन प्रसारण प्रारम्भ होने पर 10-10 मिनट के हिन्दी तथा अंग्रेजी बुलेटिन प्रारम्भ किए गए । 26 जनवरी, 1989 से दोपहर बाद प्रसारण भी प्रारम्भ हो गया । इसमें में भी साढ़े सात मिनट के दो बुलेटिनों का प्रसारण प्रारम्भ किया गया । एक जनवरी, 1993 से बुलेटिनों की अवधि में परिवर्तन कर दिया है । अब तो दूरदर्शन ने भी 'न्यूज़ एवं करंट एफेअर्स' का एक 'एक्सक्लुसिव चैनल' शुरू कर दिया । इसके अलावा जिन दिनों संसद का अधिवेशन होता है, हिन्दी तथा अंग्रेजी में संसद समाचार भी प्रसारित होते है । साथ ही, क्षेत्रीय भाषाओं में प्रादेशिक बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं ।

दूरदर्शन समाचार अपने दिल्ली मुख्यालय से प्रतिदिन, हेडलाइंस, सहित 13 समाचार बुलेटिन प्रसारित करता है । इन सभी बुलेटिनों का मुख्य उद्देश्य समूचे देश में और डी.डी. इंटरनेशनल के जरिए विश्व में नवीनतम समाचार प्रसारित करना है । विदेशों में दूरदर्शन इंटरनेशनल के जरिए दूरदर्शन समाचार प्रसारित किए जाते हैं । दूरदर्शन सी.एन.एन. और ए.बी.यू. को भी प्रतिदिन समाचार कैप्सूल देता है । दूरदर्शन ने 1 जनवरी, 2001 से आज तक 24 घंटे का फीचर बुलेटिन शुरू कर दिया है । 'आज तक' 24 घंटे का चैनल बन चुका है । उल्लेखनीय है कि समाचारों पर आधारित 'आज तक' प्रति रात्रि को दस बजे प्रसारित होता था ।

दूरदर्शन में समाचारों के महत्व तथा समाचार बुलेटिनों का ब्यौरा देने के बाद अब हम समाचार तैयार करने के लिए विभिन्न पहलुओं की चर्चा करेंगे ।

18.3 समाचार लेखन

सबसे पहले यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि टेलीविजन समाचार में लेखन से तात्पर्य केवल घटना, भाषण, बयान या विज्ञप्ति को समाचार रूप में लिखने से नहीं है । यहाँ लेखन का क्षेत्र बहुत व्यापक है । इसे लेखन की बजाय हम समाचार संरचना कह सकते हैं । इसमें समाचार को प्रसारण योग्य बनाने के स्तर तक ले जाने के सभी पहलू शामिल हैं । यह टीमवर्क है जिसमें कैमरामैन संवाददाता, प्रस्तुतकर्त्ता, तकनीकी कर्मचारी, संपादक आदि शामिल

हैं । संपादक, संवाददाता और प्रस्तुतकर्त्ता के बीच, विशेषकर संपादक तथा प्रस्तुतकर्त्ता के बीच, समन्वय अत्यन्त आवश्यक है । आलेख तथा दृश्य सामग्री के बीच पूर्ण समन्वय और परस्पर पूरकता ही टी.वी. समाचार बुलेटिन का प्राण है । यहाँ हम संपादक की भूमिका की ही मुख्य रूप से चर्चा करेंगे । इस प्रक्रिया पर प्रकाश डालने से पहले समाचार की संरचना को स्पष्ट करना आवश्यक है ।

18.3.1 समाचार की संरचना

वहीं संपादक या पत्रकार टेलीविजन के लिए सफल संवाद रचना कर सकते हैं जिन्हें भाषा शैली पर अधिकार के साथ-साथ उपलब्ध दृश्य सामग्री तथा तथ्यों की क्रमबद्धता का व्यावहारिक अनुभव एवं आत्म-विश्वास होगा । आप जो कुछ चित्रों के माध्यम से दिखाना चाहते हैं, वही आपको शब्दों के माध्यम से कहना भी होगा । समाचार के आमुख Intro), घटना के क्रमवार ब्यौरे तथा अन्य संबंधित जानकारी को चित्र के क्रम के मुताबिक लिखा जाता है । इसी प्रकार चित्र को समाचार की मांग के हिसाब से संपादित किया जाता है । चित्र और शब्द दोनों में जितना अधिक समन्वय होगा, समाचार उतना ही प्रभावशाली होगा । टी.वी. समाचार की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

18.3.1.1 घटनाक्रम

अखबार या रेडियो के लिए समाचार लिखते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक नहीं है कि किसी घटना को उसी क्रम में लिपिबद्ध किया जाए जिस क्रम में वह घटी है । परन्तु टी.वी. के लिए समाचार बनाते समय ऐसा करना सामान्यतया आवश्यक होता है । बाद की बात को पहले दिखाना अजीब सा लगता है । उदाहरण के लिए किसी की मृत्यु हो जाने पर अंतिम संस्कार या पहले तथा पार्थिव शरीर पर पुष्प मालाएं चढ़ाने का दृश्य बाद में नहीं दिखाया जा सकता । इसी प्रकार किसी नेता या मंत्री का भाषण देते हुए पहले दिखाकर उसे कार्यक्रम के उद्घाटन के लिए दीप प्रज्वलित करते हुए बाद में दिखाना खराब लगेगा ।

18.3.1.2 चित्रात्मकता

यह विशेषता टी.वी. समाचारों को अन्य माध्यमों से एकदम पृथक स्वरूप प्रदान करती है । जहाँ अन्य भी माध्यमों में समाचार में सभी आवश्यक सूचनाओं को उनके महत्व के आधार पर शामिल करना आवश्यक है, वहाँ टी.वी. समाचार में शब्दों का कम से कम इस्तेमाल करके 'चित्रों को बोलने' का अवसर देना अच्छी संपादन कला का लक्षण है । इसलिए समाचार लिखते समय उसके उस अंश को अधिक उजागर किया जाना आवश्यक सा जान पड़ता है, जिसमें चित्र का इस्तेमाल करने की संभावनाएँ हों । टेलीविजन समाचार में चित्र का प्रमुख स्थान है, जबकि शब्द सहायक भूमिका निभाते हैं । यदि किसी रिपोर्ट या भाषण आदि का ऐसा समाचार हो जिसके बारे में कोई प्रभावशाली फिल्म अथवा वी.सी आर. कवरेज उपलब्ध न हो तो उस घटना से संबंधित किसी पुरानी फिल्म का इस्तेमाल करके शुष्क समाचार को चित्रमय बना दिया जाता है । उदाहरण के लिए प्रधानमंत्री ने पिछले दिनों ऊर्जा के बारे में एक सम्मेलन का उद्घाटन

किया । उनके भाषण में अनेक महत्वपूर्ण घोषणाएँ थीं । उनका भाषण अंग्रेजी में था । हिन्दी समाचारों में उन्हें बोलते हुए लम्बे समय तक दिखाने की बजाय उन्हें कुछ क्षण दिखाने के बाद ऊर्जा के उत्पादन, वितरण तथा उपयोग से संबंधित एक पुरानी वी.सी आर. कवरेज का इस्तेमाल किया गया । इस प्रकार के पुराने चित्रों को 'फाइल' चित्र कहा जाता है ।

18.3.1.3 संक्षिप्तता

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि टेलीविजन के समाचार में चित्र बोलते हैं अत: समाचार एकदम संक्षिप्त होने चाहिए । समाचार संपादक को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि शब्द कभी-कभी चित्रात्मक अभिव्यक्ति में बाधक सिद्ध होने लगते हैं । घटना का विस्तृत विवरण देना आवश्यक नहीं है क्योंकि दर्शक पूरी घटना को चित्र रूप में स्वयं ही देखकर सब कुछ समझ लेता है ।

18.3.1.4 संभाषणशीलता

समाचार में चित्र के साथ-साथ ध्वनि का कलात्मक उपयोग इसे अधिक विश्वसनीय, सुबोध और रोचक बनाता है । प्रदर्शनी या पर्व-त्यौहार जैसे समाचारों में चित्र के साथ-साथ संगीत की स्वर लहरियों को सुनाने अथवा कार्यक्रम के स्थान पर बजाए गए यंत्रों की ध्वनि का इस्तेमाल करके समाचारों में सजीवता लाई जा सकती है । इसी प्रकार यदि किसी गोष्ठी और भाषण से संबंधित समाचार हो तो वक्ता के संभाषण के महत्वपूर्ण व संगत अंश को सुना देना चाहिए । इसमें 'शब्द' और 'चित्र' का समन्वय नितांत अनिवार्य है । यहाँ तक कि किसी के भाषण अथवा गीत के बोल दिखाते समय उनके 'होठों, (Lip) के मूवमेंट में पूर्ण समन्वय होना चाहिए । इसे 'सिंक' (Sync) कहते हैं । समाचार वाचक की बजाय वक्ता के अपने मुख से कहा गया अंश दर्शक के लिए निश्चय ही अधिक विश्वसनीय होता है । इससे बुलेटिन में रोचकता और 'विश्वसनीयता' भी आती है ।

18.3.1.5 रिपोर्ट

संभाषण के प्रयोग का सबसे श्रेष्ठ उपाय है रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण । इसमें किसी समाचार को उसकी पृष्ठभूमि तथा अन्य पहलुओं के साथ चित्रमय रूप में किसी संवाददाता अथवा किसी अन्य व्यक्ति की आवाज में प्रस्तुत किया जाता है । इसमें कम समय तथा कम शब्दों में अधिक सामग्री व जानकारी प्रस्तुत की जा सकती है । पश्चिमी टी.वी. प्रसारणों, विशेषकर बी.बी.सी. के समाचारों की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि उनके बुलेटिनों में समाचार वाचक बहुत कम बोलते हैं और अधिकतर समाचार संवाददाताओं द्वारा उनकी अपनी आवाज में घटना स्थल से सीधे प्रसारित किए जाते हैं । रिपोर्ट के माध्यम से समाचार प्रस्तुतीकरण अधिक विश्वसनीय, विविधमय, रोचक एवं प्रभावशाली होता है । इसी रूप में समाचार बुलेटिन प्रसारित करना भी प्रसारण संगठन का लक्ष्य होना चाहिए ।

18.3.2 पूरक कापी

रेडियो और टेलीविजन के समाचार संपादक पर समय की पाबंदी की तलवार हमेशा लटकी रहती है । निश्चित अवधि के बुलेटिन के लिए उसे सभी समाचार नाप-तौल कर बनाने होते हैं । कभी-कभी तकनीकी कारणों से चित्र न चल पाने अथवा प्रणाली के असफल हो जाने से निर्धारित समय से पहले बुलेटिन पूरा हो जाने की स्थिति बन जाती है । ऐसी हालत से निपटने के उद्देश्य से पूरक समाचार तैयार रखना उचित रहता है । दो या तीन ऐसे समाचार, जो अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण हों और जिनके लिए चित्र नहीं होते, वैकल्पिक उपयोग के लिए बनाकर रखने चाहिए, जिनका उपयोग आवश्यकता पड़ने पर किया जा सके । इसे 'पूरक कापी' कहा जाता है ।

18.4 समाचार बुलेटिन का स्वरूप और प्रक्रिया

बुलेटिन संपादक का सबसे पहला काम है उपलब्ध और अपेक्षित समाचारों तथा उपलब्ध चित्रात्मक सामग्री यानी फिल्मों, दी वी.आर. कवरेज आदि और संभावित चित्र सामग्री को ध्यान में रखते हुए अपने बुलेटिन की रूपरेखा तैयार करना । वह यह भी देखता है कि पिछले दिन और पिछले बुलेटिन में क्या-क्या प्रसारित हो चुका है । वह बुलेटिन में शामिल किए जाने वाले समाचारों के महत्व के अनुसार उनका क्रम निर्धारित करता है और उसी के अनुरूप चित्रात्मक सामग्री का क्रम तय करके प्रस्तुतकर्त्ता को सौंप देता है । संपादक चित्रात्मक सामग्री देखने के बाद उसमें समाचार के मुताबिक काट-छांट यानी फिल्म संपादन करने का परामर्श देता है और यह भी संकेत देता है कि समाचार विशेष के लिए कितनी अवधि का चित्र अपेक्षित है । प्रस्तुतकर्त्ता संपादक के परामर्श के अनुसार चित्रों का संपादन करके उसी क्रम में अलग-अलग कैसेटों पर टेप कर लेता है । संपादक चित्रों के अनुसार समाचार लिखता है तथा पृष्ठ अंकित करके समाचार वाचक को देता है । समाचार के आलेख की प्रति पर संपादक पृष्ठ संख्या के साथ-साथ यह भी अंकित करता है कि चित्र को कहाँ से दिखाना प्रारम्भ करना है, किस अंश पर उसे रोकना है (होल्ड) और किस अंश पर पुन: दिखाना (क्यू) है । इसके अलावा जब बुलेटिन पढ़ने वाले दो व्यक्ति हों तो प्रत्येक पृष्ठ पर समाचार वाचक का नाम भी संपादक लिखता है । संपादक प्रत्येक आलेख का समय भी नोट करता रहता है ताकि बुलेटिन की निश्चित अवधि के अनुसार ही आलेख तैयार किए जाएं । प्रसारण के समय प्रस्तुतकर्त्ता की मुख्य भूमिका रहती है । वह पैनल पर बैठकर माइक से स्टूडियो में फ्लोर मैनेजर के माध्यम से समाचार वाचकों, कैमरा मैनों तथा अन्य तकनीकी कर्मियों को दृश्य सामग्री के प्रदर्शन और वाचन के सम्बन्ध में आदेश (कमांड) देता है ।

18.4.1 क्रम निर्धारण

समाचारपत्र और रेडियो में किसी भी समाचार के आलेख तथा समाचारों के क्रम एवं स्थान में आसानी से कभी भी परिवर्तन किया जा सकता है । परन्तु टी.वी. समाचार बुलेटिन में इसकी गुंजाइश बहुत कम रहती है । अंतिम क्षणों में चित्रात्मक समाचार में कोई और महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जाए तो उसे बिना चित्र के यानी 'ड्राई' प्रसारित किया जाता है । कई बार यह

परिवर्तन या जोड़ इतना महत्वपूर्ण होता है जिससे पिछला समाचार निरर्थक हो जाता है । ऐसी स्थिति में पिछले आलेख का पृष्ठ निकाल लिया जाता है । परन्तु चित्रात्मक सामग्री निकालना संभव नहीं होता अत: नए समाचार के पढ़ने के दौरान उसे 'इन आउट' कर दिया जाता है अर्थात् उसे बिना स्क्रीन पर दिखाए तेजी से चला दिया जाता है । यों तो बुलेटिन में समाचार का क्रम निर्धारण उनके महत्व के अनुसार किया जाता है किन्तु यदि सभी समाचार चित्रमय न हों तो यह ध्यान में रखा जाता है कि एक साथ कई शुष्क समाचार लगातार न रखे जाएँ, बल्कि चित्रमय समाचारों के बीच-बीच में उन्हें रखा जाए । यह इसलिए किया जाता है क्योंकि शुष्क समाचार अधिक देर तक लगातार देना अरुचिकर लग सकता है ।

जैसाकि पहले बताया जा चुका है बुलेटिन को निर्धारित समय से अधिक चलाना यानी 'ओवर कैरी' अथवा समय से पहले समाप्त करना यानी 'अंडर कैरी' करना समाचार संपादक का दोष माना जाता है । परन्तु कई बार बीच में किसी महत्वपूर्ण 'गैर चित्रमय' समाचार को लेना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है । ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए बुलेटिन के अंत में प्राय: कम महत्वपूर्ण समाचारों को रखा जाता है ताकि यदि उन्हें न भी पढ़ा जाए अर्थात् वो 'क्राउड आउट' हो जाएं तो विशेष अंतर न पड़े ।

18.4.2 फ्लैश

जब बुलेटिन का प्रसारण प्रारम्भ हो जाने के बाद कोई ऐसा महत्वपूर्ण समाचार आ जाता है जो पहले दिए गए किसी समाचार की अगली कड़ी है या बुलेटिन में प्रसारित हो चुके समाचार का खंडन करता है तो उसे 'पलैश' या 'अभी-अभी मिले समाचार के रूप में बुलेटिन में स्थान दिया जाता है ताकि श्रोताओं/दर्शकों को मालूम हो जाए कि यह समाचार बाद में आया है। इसके अलावा कोई नया अति महत्वपूर्ण समाचार आने पर भी उसे 'फ्लैश' के रूप में प्रसारित किया जा सकता है ।

18.4.3 मुख्य समाचार

बुलेटिन के प्रारम्भ तथा अंत में उसके मुख्य समाचार प्रस्तुत किए जाते हैं । यद्यपि ये सबसे पहले प्रस्तुत किए जाते हैं किन्तु इन्हें तैयार करने का काम आमतौर पर बुलेटिन पूरा होने से कुछ समय पहले किया जाता है ताकि सभी उपलब्ध समाचारों में मुख्य समाचारों का चयन किया जा सके । मुख्य समाचारों को अति संक्षिप्त, चुस्त और सुबोध बनाया जाता है । किसी बुलेटिन में तीन से आठ तक मुख्य समाचार बनाने की परम्परा है । बजट बुलेटिन जैसे विशेष समाचार बुलेटिनों में इससे अधिक मुख्य समाचार भी रखे जाते हैं । यदि कोई महत्वपूर्ण समाचार बुलेटिन प्रसारण के दौरान प्राप्त होने पर पलैश के रूप में शामिल किया जाता तो उसे अंत में दुबारा पढ़े जाने वाले मुख्य समाचारों में उसके महत्व के अनुसार क्रम पर रखकर पढ़ा जाता है । कभी-कभी यह नया समाचार दुबारा पढ़े जाने वाले मुख्य समाचारों का 'लीड' समाचार भी बन जाता है ।

18.5 समाचार को चित्रात्मक बनाने के अन्य साधन

आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि समाचार संपादक को किसी समाचार के विषय पक्ष के साथ-साथ टेलीविजन पर उसके प्रस्तुतीकरण से जुड़े सभी पहलुओं की समुचित जानकारी होना आवश्यक है । इसमें वे दृश्य तत्व भी शामिल हैं, जो समाचार से संबंधित फिल्म अथवा वी.सी आर. कवरेज न होने पर उसे कुछ हद तक चित्रात्मकता प्रदान करते हैं । इनमें से कुछ प्रमुख साधनों की जानकारी हम संक्षेप में दे रहे हैं ।

18.5.1 स्टिल फोटो

किसी घटना की वीडियो कवरेज न हो पाने या कवरेज की गुणवत्ता सही न होने की स्थिति में उस अवसर पर खींचे गए स्टिल चित्र दिखाना उपयोगी होता है । घटनाओं के ये चित्र एक या उससे अधिक हो सकते हैं । घटना के विकास क्रम के अनुसार चित्र बदलकर भी दिखाए जा सकते हैं । किसी व्यक्ति-के बारे में कोई समाचार देते हुए उस व्यक्ति का चित्र स्क्रीन पर आने से समाचार की संप्रेषणशीलता बढ़ जाती । व्यक्ति की किसी उपलब्धि, बयान, मृत्यु आदि की खबर हुए इन व्यक्ति चित्रों (पोट्रेट) का उपयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त भवनों जैसे कि संसद भवन, उच्चतम न्यायालय, विधानसभा भवन, निर्वाचन आयोग के स्टिल चित्रों से समाचारों को प्रासंगिकता प्रदान की जाती है । आजकल, लगभग हर टेलीविजन चैनल पर 'रेडियो डिस्पेचेज' साधारण बातें हो गई है । इसलिए वहाँ स्थित रिपोर्टर का चित्र तथा वहाँ के किसी महत्वपूर्ण स्थान, स्मारक आदि के चित्र के साथ आजकल उसकी आवाज ले ली जाती है। इस विधि से कुछ सार्थकता का आभास होने लगता है ।

18.5.2 सी.जी. (कैरेक्टर जेनेरेशन)

इस तकनीक में समाचार के महत्वपूर्ण अंश को, विशेषकर संख्याओं व आकड़ों को स्क्रीन पर सुपर किया जाता है । कई बार सुनते हुए दर्शक आकड़ों को भूल सकता है या भ्रमित हो सकता है । इसलिए जब वह सुनने के साथ-साथ उसे लिखित रूप में देखता भी है तो उस अंश की संप्रेषणशीलता दुगुनी हो जाती है । आर्थिक समाचारों, खेलों के अंकों, संख्याओं और मत विभाजन के समय विभिन्न पक्षों की स्थिति के लिए कैरेक्टर जेनेरेशन यानी सी.जी. तकनीकी का पर्याप्त इस्तेमाल किया जाता है । अब यह तकनीक कम्प्यूटरीकृत हो गई है । इस तकनीक की एक महत्वपूर्ण उपयोगिता यह भी है कि जब कोई व्यक्ति किसी भिन्न भाषा में बोल रहा हो तो बुलेटिन की भाषा में उसका रूपान्तरण संक्षिप्त रूप में सी.जी. करके दर्शकों तक वह भाषण संप्रेषित किया जा सकता है । समाचारों के दौरान किसी संबंधित व्यक्ति, संवाददाता और समाचार वाचक का नाम देने के लिए भी सी.जी. पद्धति को काम में लाया जाता है ।

18.5.3 मानचित्र और ग्राफिक्स

जिस स्थान, जिला, प्रांत, क्षेत्र, देश आदि से संबंधित समाचार दिया जा रहा हो, उसका मानचित्र दिखाने से घटना और स्थान के बीच संबंध जोड़ने में सरलता हो जाती है । अब कम्प्यूटर की मदद से मानचित्र में यह भी दिखाया जा सकता है कि घटनाक्रम किस स्थान से प्रारम्भ होकर कहां तक पहुँचा । उदाहरण के लिए विमान अपहरण का समाचार देते हुए मानचित्र में विमान के चित्र तथा 'ऐरो' की मदद से यह दिखाया जा सकता है कि विमान का अपहरण अमृतसर में हुआ, जहाँ से विमान लाहौर ले जाया गया और वहाँ से काबुल होता हुआ वह दिल्ली में उतरा । यह पूरा मार्ग पेंटबाक्स नाम के कम्प्यूटरीकृत उपकरण की मदद से स्क्रीन पर अंकित हो जाता है । मौसम की जानकारी देते हुए वर्षा, ओलावृष्टि, बादल आदि के स्थानों एवं गति को दिखाने के लिए यही विधि अपनाई जाती है । आर्थिक समाचार या कोई तालिका दिखाने के लिए ग्राफ का उपयोग किया जाता है । मानचित्र और ग्राफ समाचार संपादित करते हुए ग्राफिक्स कलाकारों से तैयार करा लिए जाते हैं ।

18.5.4 लोगो (प्रतीक चिड़)

किसी संस्था, खेल, प्रतियोगिता, कार्यक्रम अथवा आयोजन के 'लोगो' या प्रतीक चिह्न का इस्तेमाल भी समाचार को चित्रात्मक बनाने की एक विधि है । उदाहरण के लिए ओलम्पिक खेलों का निश्चित 'लोगो' दिखा देने से दर्शक को पता रहता है कि वह ओलम्पिक खेलों से संबंधित समाचार देख रहा है । अलग-अलग खेलों-हाकी, क्रिकेट, फुटबाल, बाक्सिंग, कुश्ती, टेनिस आदि के प्रतीक के रूप में स्टिल अथवा वी.सी आर. 'लोगो' तैयार करके उन्हें कम्प्यूटरीकृत में डाल दिया जाता है और आवश्यकता पड़ने पर उनका इस्तेमाल किया जाता है। इसी प्रकार विभिन्न संस्थाओं के अलग-अलग 'लोगो' हैं, जिनका इस्तेमाल समाचार प्रसारण में किया जाता है ।

18.6 भाषा

प्रसारण माध्यमों में समाचारों की भाषा अखबारों की भाषा से काफी भिन्न होती है । किन्तु समाचारों के स्रोत चूंकि मुख्यतया वही समाचार एजेंसियां हैं, जो अखबारों के लिए भी समाचार प्रेषित करती हैं, अत: टेलीविजन के लिए समाचार लिखते समय तो भाषा के लिखित तथा मुद्रित रूप को उच्चरित रूप देना होता है और दूसरे उसे चित्र या फिल्म की माँग के अनुसार लिखना होता है । जैसा कि 'समाचार की संरचना' अनुभाग में भी बताया गया है कि चित्र अपने आप बोलता है । वास्तव में, शब्दों का उपयोग वहीं होना चाहिए जहां चित्र से वह बात स्पष्ट अथवा सार्थक हो रही हो । अत: कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक जानकारी व्यक्त करने की कला ही अच्छे टी.वी. समाचार संपादक की मुख्य लेखकीय विशेषता है । टी.वी. समाचारों की भाषा की कुछ अन्य मुख्य बातें इस प्रकार है

- वाक्य सरल और संक्षिप्त होने चाहिए ।
- प्रयास यह किया जाए कि एक वाक्य में एक ही बात कही जाए ।
- जटिल वाक्यों का कम से कम प्रयोग करना वांछनीय है ।

- बोलचाल के शब्द तथा मुहावरे प्रयोग किए जाने चाहिए ताकि सभी स्तरों एवं वर्गों के लोग समझ सकें ।
- हिन्दी समाचार तैयार करते हुए अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों, यथा-स्टेशन, इंजीनियर, स्कूल, टेलीफोन, बस, पेंसिल, कापी, पेन, रेल तथा इसी प्रकार के अन्य शब्दों व अन्य भारतीय भाषाओं, विशेषकर उर्दू में सहज प्रयोग में आने वाले शब्दों को अपनाने में संकोच नहीं करना चाहिए ।
- जिन शब्दों के उच्चारण के लिए वाचक को प्राणायाम करना पड़े, उनकी बजाय उनके सरल पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग करना बेहतर है ।
- चिकित्सा, इंजीनियरी, उद्योगों तथा अन्य विशिष्ट व्यवसायों से संबंधित तकनीकी अंग्रेजी शब्दों के अप्रचलित कठिन हिन्दी पर्याय इस्तेमाल करने के लोभ का संवरण करना चाहिए ।
- शब्दों में विविधता रहनी चाहिए । एक ही समाचार में किसी एक शब्द का बार-बार प्रयोग अखरता है । कोई नाम भी बार-बार नहीं बोला जाना चाहिए । नाम के स्थान पर सर्वनाम, रूप, पदनाम आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है ।
- भाषा में रोचकता लाने के प्रयास किए जाने चाहिए ।
- समाचार लिख लेने के पश्चात् यदि समय हो तो उसे दुबारा पढ़कर भाषा को परिमार्जित करना चाहिए ।
- समाचार लिखते हुए नामों, संख्याओं, स्थानों, तिथियों, पदनामों की फिर से जाँच कर लेनी चाहिए । कुछ वर्ष पहले आकाशवाणी में एक समाचार बुलेटिन में सोनिया गाँधी की जगह मेनका गाँधी नाम पढ़ा गया । इसी प्रकार एक बुलेटिन में स्वतन्त्रता दिवस की जगह गणतंत्र दिवस प्रसारित हो गया ।

18.7 अनुवाद

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता की एक विवशता यह है कि उसे अनुवाद का काफी आश्रय लेना पड़ता है । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में यह बंधन और भी अधिक कड़ा है क्योंकि सरकारी माध्यम होने के कारण इनमें प्रामाणिकता का आग्रह अधिक रहता है और समाचार का मूल ढ़ांचा प्राय अंग्रेजी में ही तैयार होता है । आकाशवाणी में तो अब 'हिन्दी पूल' प्रारम्भ हो गया है परन्तु दूरदर्शन में हिन्दी समाचार बुलेटिन को अनुवाद की बेड़ी से छुटकारा मिलने के फिलहाल कोई आसार नहीं हैं । टेलीविजन के समाचार प्राय: जल्दी में तैयार किए जाते हैं । अत: अनुवाद के बंधन के कारण इनकी भाषा सहज तथा प्रवाहपूर्ण नहीं बन पाती फिर भी यदि शाब्दिक अनुवाद से बचते हुए भावानुवाद पर बल दिया जाए तो जटिलता एवं कृत्रिमता से कुछ हद तक मुक्ति पाई जा सकती है । अंग्रेजी की वाक्य रचना जटिल है और उसमें एक ही वाक्य में योजक शब्दों की सहायता से कई बातें शामिल कर ली जाती हैं । उदाहरण के लिए-"The President Dr. Shankar Dayal Sharma, who is patron of Indian Philosophical Congress and himself a renounce soholar

emphasied the need of developing Philosophy intro an independent discipline in Universities"

यह जटिल वाक्य अंग्रेजी की प्रकृति के अनुरूप होने के कारण वहाँ सहज स्वीकार्य है । परन्तु इसका अनुवाद हिन्दी में भी इसी संरचना में कर दिया जाए तो वह दुरूह व कठिन लगेगा । अत: इस प्रकार के वाक्यों को दो या तीन लघु और सरल वाक्यों में तोड़ कर लिखा जाना चाहिए । इसी प्रकार अंग्रेजी के मुहावरों को ज्यों का त्यों हिन्दी में रूपान्तरित कर देने से भाषा की स्वाभाविकता पर आंच आती है । 'The body of the deporbea leader is lying in state" के लिए हिन्दी में 'दिवगंत नेता का पार्थिव शरीर अंतिम दर्शनों के लिए रखा गया है' लिखने से बात आसानी से समझ में आएगी । Red carpet Welcome को 'भव्य स्वागत' लिखना ही सही है । यही बात अन्य वाक्यों व मुहावरों पर लागू होती है ।

अनुवाद करते समय संदर्भ का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है । एक ही शब्द के अलग-अलग संदर्भो में अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं । President शब्द का अर्थ अध्यक्ष भी हो सकता है और राष्ट्रपति भी । इसी प्रकार Speaker शब्द का वक्ता और अध्यक्ष (लोकसभा अथवा विधानसभा का) दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है । एक बार दूरदर्शन के मुख्य बुलेटिन में खाडी युद्ध के संबंधित एक समाचार में (Mines) (बारूदी सुंरग) के लिए 'खान' शब्द प्रसारित हुआ था । यह आवश्यक नहीं है कि हर अंग्रेजी शब्द का अनुवाद किया जाए । कुछ तकनीकी या प्रचलित अंग्रेजी शब्दों के तत्सम रूप भी हिन्दी में अपना लिए गए हैं, जिनका इस्तेमाल करना उचित है । कहना आवश्यक नहीं है कि अंग्रेजी तथा हिन्दी पर समान रूप से अधिकार तथा विभिन्न विषयों के सामान्य ज्ञान के बिना कोई भी पत्रकार अच्छा और स्वाभाविक अनुवाद नहीं कर सकता । अभ्यास अनुवाद कला सीखने का सबसे श्रेष्ठ साधन है । इस प्रकार इन मोटी बातों का ध्यान रखकर अनुवाद की विवशता को ढोते हुए भी हिन्दी समाचार बुलेटिनों की भाषा सुबोध, सरल, सहज तथा प्रवाहमयी बनाई जा सकती है ।

18.8 सारांश

इस पाठ में आपको आज के युग में टेलीविजन की सार्थकता समझाते हुए यह बताया गया है कि टेलीविजन प्रसारण में समाचारों का क्या और कितना महत्व है । इसके पश्चात दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले समाचार बुलेटिनों का विवरण दिया गया । आपको टेलीविजन के लिए लिखे जाने वाले समाचार की सरंचना से अवगत कराते हुए समूचे बुलेटिन के स्वरूप तथा उसकी प्रक्रिया समझाने का प्रयास किया गया । फिल्म या वी.सी.आर. के अलावा लिखित समाचार को दृश्यात्मक रूप प्रदान करने के अन्य सहायक तत्वों का भी संक्षेप में उल्लेख किया गया । पाठ के अंतिम चरण में समाचारों की भाषा के विभित्र पहलुओं पर प्रकाश डालने के बाद बताया गया है कि भाषा को अनुवादजनित कृत्रिमता और जटिलता जैसे दोषों से कैसे बचाया जा सकता है ।

18.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. जनमाध्यम और पत्रकारिता : प्रवीण दीक्षित, सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर

2. भारतीय प्रसारण	:	विविध आयाम, मधुकर गंगाधर, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. दूरदर्शन	:	स्वायत्तता और स्वतंत्रता: सुधीर पचौरी, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली
4. Broadcast copywriting	:	Peter B. Orlik Aceyen & Becon Inc. London
5. The Grammar of Television Production	:	Desmon Devis Society of Film and Television Art, London
6. Broadcasting in India	:	P.C. Chatterjee, Sage Publication, New Delhi.
7. Beyond Data	:	Science and Technology Communication by Mohan Sundana Rajan, Publication Division, Government of India, New Delhi.
8. National Communications	:	R.K. Chatterjee National Book Trust. New Delhi.
9. Hand Book of Broadcasting	:	Waldo Abbot Mc-Grew Hill Book Company, London.
10. Art of Broadcasting	:	S.P. Jain, Intellectual Publishing House, New Delhi.

18.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. टेलीविजन प्रसारण में समाचारों का क्या स्थान है?
2. टेलीविजन समाचार अखबारों तथा रेडियो समाचारों से किस तरह भिन्न हैं?
3. दूरदर्शन समाचारों के मुख्य पहलुओं पर प्रकाश डालिए ।
4. समाचार की संरचना पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए ।
5. टेलीविजन के लिए समाचार बुलेटिन तैयार करते हुए संपादक से क्या अपेक्षाएँ सज़ार्हि हैं?
6. समाचार को चित्रात्मक बनाने के सहायक साधनों का ब्यौरा दीजिए ।
7. समाचार बुलेटिन में प्रस्तुतकर्ता (प्रोड्यूसर) की भूमिका स्पष्ट कीजिए ।
8. टेलीविजन समाचारों की भाषा' विषय पर एक लेख लिखिए ।
9. अनुवाद से समाचारों की भाषा कृत्रिम एवं दुरूह बनती है' इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं?

10. समाचार वाचक के गुणों पर प्रकाश डालते हुए एक प्रभावशाली 'समाचार बुलेटिन' के मुख्य बिन्दुओं की विवेचना कीजिए ।
11. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए-(कोई चार)
    1. फ्लैश
    2. संवाददाता को अपनी 'रिपोर्ट डस्पेच' तैयार करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?
    3. फाइल चित्र
    4. 'सिंक'
    5. पूरक कापी

इकाई 19 समाचारों का अनुवाद

19.0 उद्देश्य
19.1 प्रस्तावना
19.2 टेलीविजन प्रसारण और समाचार
19.3 दूरदर्शन समाचारों की संरचना
19.3.1 समाचारों के स्रोत
19.3.2 समाचारों की भाषा
19.4 अनुवाद की अनिवार्यता
19.5 अनुवाद का स्वरूप
19.5.1 संदर्भ एवं प्रसंग
19.5.2 शब्द तथा मुहावरे
19.6 मौखिक समाचारों का अनुवाद
19.7 सारांश
19.8 निबंधात्मक प्रश्न

19.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले समाचार बुलेटिनों की भाषा पर प्रकाश डालते हुए उसमें अनुवाद के स्वरूप की विवेचना करना है । जनसंचार के माध्यमों की भांति टेलीविजन के हिन्दी समाचार तैयार करने में भी अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है । आप जानते हैं कि सरकारी ही नहीं आर्थिक, व्यापारिक, तकनीकी एवं जीवन के अन्य अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मुख्यतया अंग्रेजी के माध्यम से ही कार्य-व्यापार, ज्ञान एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है । अत: समाचारों की अधिकांश आधारभूत सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध होती है । हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में समाचार बुलेटिनों का संकलन, संपादन करने के लिए इस सामग्री का अनुवाद करना आवश्यक होता है ।

प्रस्तुत इकाई में समाचारों की संरचना और टेलीविजन बुलेटिन की विशिष्ट आवश्यकताओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए अनुवाद कला के स्वरूप एवं प्रक्रिया को भी स्पष्ट किया गया है । आप यह भी जान सकेंगे कि समाचारों का अनुवाद करते हुए किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए । व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर हम आपके लिए ऐसे उदाहरण भी प्रस्तुत करेंगे जिनसे पता चलता है कि अनुवाद में असावधानी और अल्पज्ञान के कारण किस प्रकार अर्थ का अनर्थ हो सकता है ।

19.1 प्रस्तावना

टेलीविजन या दूरदर्शन आधुनिक सूचनातंत्र का सर्वाधिक 'ग्लेमरस' (चमकदार) महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य अंग बन चुका है । जिस प्रकार फिल्म, विज्ञापन जैसे व्यवसायों से जुड़े व्यक्ति आम लोगों की नज़र एवं चर्चा का विषय होते हैं, उसी प्रकार अब टेलीविजन के कार्यक्रमों के

अभिनेता, निर्माता, उद्घोषक, समाचार वाचक, संपादक, प्रस्तुतकर्त्ता आदि भी 'शो ब्रिज' संसार के अंग बनते जा रहे हैं । पत्र-पत्रिकाओं में फिल्मी सितारों, निर्देशकों, गीतकारों, गायकों आदि की भांति टेलीविजन के विभिन्न विभागों और उनसे जुड़े कर्मियों के बारे में भी तरह-तरह के किस्से, कहानियाँ छपती और चर्चित होती हैं । कहने का मतलब यह है कि टेलीविज़न के कार्यक्रम चाहे वे दूरदर्शन से प्रसारित होते हों या गैर-सरकारी अथवा विदेशी चैनलों के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचते हों, वे देशवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, ज्ञानपरक एवं मनोरंजन संबंधी जीवन चर्चा में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान बना चुके हैं । टी.वी 15 सितम्बर, 1959 को भारत में अवतरित हुआ IDIOT BOX (इडियट बॉक्स) कहलाए जाने वाला टेलीविजन चार दशकों में देश के सांस्कृतिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गया है ।

वीडियो टेक्नोलॉजी के आविष्कार के बाद तो फिल्मों को दर्शकों, विशेषकर शहरी दर्शकों तक पहुँचाने का दायित्व भी टी.वी ने अपने कंधों पर ले लिया है । टेलीविजन में मनोरंजन को महत्व लगभग पूरी तरह दिया जाने लगा है । यद्यपि आज इस सशक्त माध्यम का सूचना पक्ष यानी समाचार एवं विचार पक्ष को भी नकारा नहीं जा सकता है । वास्तव में हमारे देश की परिस्थितियों में दूरदर्शन के समाचारों का अत्यधिक महत्व है । हमारे यहाँ साक्षरता का प्रतिशत कम होने के कारण पत्र-पत्रिकाएँ बहुत कम लोग पढ़ते हैं । इसके अलावा निर्धनता के कारण प्रतिदिन डेढ़-दो रूपए का समाचारपत्र खरीद पाना अधिसंख्यक देशवासियों के बस की बात नहीं। और फिर इतने विशाल एवं विस्तृत भू-भाग वाले देश के दूर-दराज के दुर्गम क्षेत्रों में पत्र-पत्रिकाएँ पहुँच भी नहीं पातीं । दूसरी ओर रेडियो और टेलीविजन की पहुँच अब बहुत सुलभ एवं व्यापक हो गई है । इस प्रकार आकाशवाणी के 198 से भी अधिक प्रसारण केन्द्र हैं । इसके अतिरिक्त अब स्थानीय केन्द्र खोलने पर जोर दिया जा रहा है । इस प्रकार देश के लगभग समाचारों 90 प्रतिशत भूभाग तथा करीब 98 प्रतिशत आबादी तक रेडियो कार्यक्रम पहुँच सकते हैं । निजी निर्माताओं द्वारा निर्मित कार्यक्रम दिखाए जाने से भारत में दूरदर्शन या टेलीविजन प्रसारण का समूचा स्वरूप क्रांतिकारी ढंग से परिवर्तित हो चुका है ।

19.2 टेलीविजन प्रसारण और समाचार

जैसा कि अभी आपने पढ़ा कि टेलीविजन आज के युग में मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षण और सूचना का भी सर्वाधिक सशक्त माध्यम है । किसी भी देश या समाज के लिए राजनीति और अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सूचना तंत्र की मजबूती भी अब अनिवार्य हो गई है । विश्व अब इतना छोटा होता जा रहा है कि देश के लोगों को दुनिया के घटनाक्रम की जितनी अधिक जानकारी होगी उतनी अधिक सरलता से वे प्रगति एवं समृद्धि प्राप्त कर सकेंगे । सूचना के इस प्रसार-विस्तार का मुख्य साधन है समाचार । विश्व के सभी प्रमुख प्रसारण नेटवर्क अपने समाचार एवं विचार कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता देते हैं । वास्तव में आज किसी प्रसारण संगठन की छवि एवं विश्वसनीयता उसके समाचार एवं विचार कार्यक्रमों के आधार पर ही विकसित होती है । भारत में दूरदर्शन तथा अन्य नेटवर्क अंग्रेजी व हिन्दी तथा क्षेत्रीय स्तर पर अनेक भारतीय भाषाओं के समाचार बुलेटिन नियमित रूप से प्रसारित किए जा रहे हैं । परन्तु इस इकाई में हिन्दी समाचारों को ही विवेचना एवं विश्लेषण का आधार बनाया जाएगा ।

दूरदर्शन से हिन्दी में राष्ट्रीय स्तर पर अनेकानेक बुलेटिन प्रसारित होते हैं । दिल्ली से प्रादेशिक बुलेटिन भी प्रसारित किया जाता है । हिन्दी भाषी राज्यों के दूरदर्शन केन्द्रों-लखनऊ, जयपुर, भोपाल, पटना से भी प्रादेशिक बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं । विभिन्न सेटेलाइट, निजी नेटवर्क भी प्रादेशिक भाषाओं को बहुत महत्व दे रहे हैं । संसद के अधिवेशन के दौरान दिल्ली से संसद समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है । समाचारपत्रों के समाचार कक्षों की भांति दूरदर्शन तथा टी.वी. नेटवर्क के समाचार कक्ष में भी समाचार संपादित करते हुए अनुवाद का आश्रय लिया जाता है क्योंकि अधिकांश आधारभूत सामग्री अंग्रेजी में प्राप्त होती है । अनुवाद के विविध पहलुओं का विवेचन करने से पूर्व टेलीविजन समाचार की संरचना तथा उसके स्रोतों पर नजर डालना समीचीन होगा ।

19.3 टेलीविजन समाचारों की संरचना

यों तो किसी भी नई जानकारी को समाचार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है किन्तु माध्यम के अनुरूप समाचार के स्वरूप एवं संरचना में परिवर्तन हो जाता है । उदाहरण के लिए समाचार पत्र में किसी घटना को जितनी विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक शैली में प्रस्तुत किया जा सकता है, रेडियो तथा टेलीविजन में नहीं । इसी प्रकार रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है जबकि टेलीविजन श्रव्य एवं दृश्य माध्यम है । अत: टेलीविजन में शब्दों के साथ फिल्म, फोटो तथा अन्य दृश्यात्मक साधनों का भी उपयोग किया जाता है, जिस कारण समाचार की संरचना भिन्न हो जाती है । संक्षिप्तता, चित्रात्मकता, सहजता एवं सुबोधता टेलीविजन समाचार की मुख्य विशेषताएँ हैं । टेलीविजन पर भाषा के साथ-साथ चित्र भी बोलते हैं, अत: शब्दों का यथासंभव कम परन्तु चित्रों के अनुरूप उपयोग किया जाता है । रेडियो की भांति दूरदर्शन के समाचार बुलेटिनों की अवधि निर्धारित रहती है । अत: समय सीमा ध्यान में रखते हुए समाचारों का संपादन किया जाता है । उदाहरण के लिए एक ही समाचार की संरचना 30 मिनट, 15 मिनट, 10 मिनिट और 5 मिनट के बुलेटिन में भिन्न हो जाएगी ।

समाचारपत्र में आप किसी घटना को चाहे किसी क्रम से वर्णित कर सकते हैं । समाचार के महत्व, पत्र की नीति अथवा स्थान की दृष्टि से घटना के किसी भी अंश को ऊपर नीचे रखकर समाचार बना सकते हैं । परन्तु टेलीविजन पर इतनी स्वतंत्रता संभव नहीं है क्योंकि चित्र की मांग को भी ध्यान में रखा जाता है । घटना का मध्य या अंतिम भाग पहले दिखाकर प्रारम्भिक अंश बाद में दिखाना विचित्र लगेगा । अत: क्रम के संबंध में समझौता करना पड़ता है । दूरदर्शन के समाचार में वाचक की भूमिका भी महत्वपूर्ण रहती है । समाचार वाचक और दर्शक एक दूसरे के आमने-सामने होते हैं । अत: बहुत अच्छे ढंग से संपादित समाचार भी वाचक की लापरवाही के कारण प्रभावहीन सिद्ध हो सकता है और केवल दो-तीन पंक्ति का कोई सामान्य समाचार भी कभी-कभी समाचार वाचक की वाणी, आरोह-अवरोह तथा चेहरे के हाव-भाव के कारण अत्यन्त प्रभावशाली बन सकता है ।

19.3.1 समाचार के स्रोत

समाचारपत्रों तथा रेडियो की भांति दूरदर्शन के संदर्भ में भी समाचारों का मुख्य स्रोत संवाद एजेंसियां हैं । इनमें स्वदेशी एजेंसियां सम्मिलित हैं । इनके अलावा दूरदर्शन ऐसी एजेंसियों से भी समाचार प्राप्त करता है जो केवल विजुअल यानी चित्रात्मक समाचार प्रेषित करती हैं । सरकारी विभाग और गैर सरकारी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थान भी अपनी ओर से चित्र तथा शब्द के रूप में अपने समाचार उपलब्ध कराते हैं । विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर दूरदर्शन के अपने संवाददाता नियुक्त हैं । अनेक महत्वपूर्ण अवसरों एवं घटनाओं को कवर करने के लिए भी संवाददाता भेजे जाते हैं । कई बार ये संवाददाता पूरा समाचार संकलित व संपादित करके अपने स्वर में रिकार्ड करके फीड कर देते हैं जिसे थोडे बहुत परिवर्तन के साथ बुलेटिन में शामिल किया जाता है । दिल्ली में आकाशवाणी की पूल प्रतियाँ भी दूरदर्शन के समाचार कक्ष में उपलब्ध रहती हैं । संपादक इन सभी स्रोतों से प्राप्त सामग्री में से बुलेटिन विशेष की आवश्यकता, समाचार के महत्व तथा दूरदर्शन की नीति व दिशा निर्देशों को ध्यान में रखते हुए समाचारों का चयन एवं संपादन करता है और प्रस्तुतकर्त्ता के सहयोग से बुलेटिन प्रसारित किया जाता है । मौलिक रूप से लगभग ऐसी ही 'पैटर्न' एवं स्वरूप अन्य नेटवर्क में देखने को मिलेगा, किन्तु उनके संवाददाताओं की संख्या प्राय: अधिक है । 'प्रेजेन्टेशन तथा तकनीकी उपलब्धियों में निःसंदेह वे दूरदर्शन से आगे हैं । हाल में, कारगिल युद्ध की रिपोर्टिंग इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

19.3.2 समाचारों की भाषा

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं टेलीविजन समाचारों में चित्रों का अधिक और शब्दों का यथासंभव कम उपयोग अपेक्षित है । किन्तु दूरदर्शन के बुलेटिन एक तो अभी पूर्णरूप चित्रमय नहीं बन सके जिससे भाषा का बहुत ही कम इस्तेमाल हो और दूसरे 'प्रसार भारती' के आने के बावजूद भी सरकारी छाप उनमें अक्सर दिखाई देती है । इसलिए कभी-कभी ऐसी खबरें शामिल की जाती हैं जिनके चित्र उपलब्ध नहीं होते या जिनके बारे में चित्र दिखाने की मनाही होती है । उदाहरण के लिए संसद अधिवेशन, मंत्रिमंडल की बैठक, संसदीय समितियों की बैठकों के निर्णयों आदि के आधार पर प्राय: महत्वपूर्ण समाचार बनते हैं परन्तु इनके चित्र दूरदर्शन पर प्राय: नहीं दिखाए जा सकते । इसी प्रकार नेताओं, राजनैतिक दलों आदि के वक्तव्य, विदेशों के समाचार, जिनके विजुअल तत्काल उपलब्ध नहीं होते बिना चित्र के यानी ड्राई प्रसारित किए जाते हैं । इसलिए हमारे दूरदर्शन बुलेटिनों में भाषा का व्यापक इस्तेमाल होता है ।

श्रव्य-दृश्य माध्यम होने के कारण समाचारों की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो दर्शक को सीधे समझ में आ जाए । दूरदर्शन के दर्शकों में अशिक्षित, अल्पशिक्षित तथा शिक्षित सभी प्रकार के लोग शामिल हैं । फिर अन्य भारतीय भाषाएँ बोलने वाले करोड़ों दर्शक भी हिन्दी समाचार देखते हैं । आम बोलचाल की पांडित्य-विहीन भाषा का इस्तेमाल करते हुए यथासंभव अन्य भाषाओं के शब्द भी आत्मसात् करने चाहिए । विदेशी शब्दों का प्रयोग करने में भी संकोच नहीं होना चाहिए । हिन्दी एक विकासमान भाषा है । अत: संस्कृत, उर्दू, पंजाबी, बंगला,

मराठी, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि जिन देशी-विदेशी भाषाओं के संपर्क में हिन्दी आ चुकी है, उनके शब्द खुलकर परन्तु हिन्दी की अपनी मर्यादा की रक्षा करते हुए इस्तेमाल किए जाने चाहिए । वाक्य रचना सरल होनी चाहिए । जटिल वाक्यों से बचना ही हितकर है । दूरदर्शन समाचारों की भाषा के आदर्श स्वरूप को अभिव्यक्त करने के लिए जाने माने कवि भवानी प्रसाद मिश्र की इन पंक्तियों को रेखांकित करना उपयुक्त होगा ।

'जिस तरह हम बोलते है उस तरह तू लिख । और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख।' अर्थात् आम लोगों की भाषा में समाचार तैयार करते हुए भी उनके स्तर एवं गरिमा पर कोई आंच न आए । परन्तु दुर्भाग्यवश दूरदर्शन के हिन्दी समाचारों की भाषा उतनी सुबोध, सहज, प्रवाहमयी और मधुर नहीं है जैसी कि ऊपर बताए गए गुणों के अनुसार अपेक्षित है । इसके कई कारण हैं परन्तु सबसे मुख्य कारण है अनुवाद की बैसाखी का सहारा लेने की अनिवार्यता ।

19.4 अनुवाद की अनिवार्यता

जैसा कि प्रारम्भ में बताया गया है कि हमारे देश में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के साथ एक अनिवार्य समस्या यह है कि अधिकतर समाचारों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया जाता है । यह सत्य स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए । हिन्दी को संविधान में राजभाषा घोषित किए जाने के बावजूद सरकार का अधिकतर काम-काज अंग्रेजी में हो रहा है । संसद में अधिकतर नेता अंग्रेजी में बोलना पसंद करते हैं । शिक्षा, विज्ञान, व्यापार, वाणिज्य, उद्योग आदि सभी प्रमुख गतिविधियाँ अंग्रेजी भाषा के माध्यम से चल रही हैं । अत: समाचारों की अधिकांश मूल सामग्री अंग्रेजी में मिलती है । केवल दूरदर्शन में नहीं, बल्कि अन्य सेटेलाइट नेटवर्कों को भी अपनी हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं की बुलेटिनों में अनुवाद का सहारा लेना अनिवार्य है । विदेशी समाचार एजेन्सियों की शत-प्रतिशत सामग्री अंग्रेजी में ही होती हैं । आकाशवाणी में तो अब हिन्दी पूल सेवा प्रारम्भ हो गई है किन्तु दूरदर्शन में हिन्दी संपादकों को अनुवाद के इस अनिवार्य बंधन को झेलना पड़ता है ।

19.5 अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद दो भाषाओं का सेतु होता है । परन्तु अनूदित अंश ऐसा होना चाहिए जो उस भाषा को बोलने वालों के स्वभाव, संस्कार एवं संस्कृति के अनुरूप हो । मौखिक भाषा यानी स्पोकन वर्ड के मामले में यह बात और भी अधिक सार्थक है । शब्दानुवाद की बजाय भावानुवाद पर बल देना चाहिए । उदाहरण के लिए हिन्दी में कर्तृवाच्य का अधिक प्रयोग होता है तथा जटिल वाक्यों की परम्परा नहीं है । दूसरी ओर अंग्रेजी में कर्तृवाच्य एवं जटिल वाक्यों का अत्यधिक प्रचलन है । अत: समाचारों के लिए अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते हुए कर्तृवाच्य में रूपांतरित करके भाषा की सहजता बनाए रख सकते हैं । उदाहरण के लिए The prizes were distributed by the President" का सहज अनुवाद होगा 'राष्ट्रपति ने पुरस्कार वितरित किए' । इसी प्रकार अंग्रेजी के जटिल वाक्य को दो-तीन छोटे वाक्यों में तोड़कर लिखा जा सकता है । इससे एक तो हम हिन्दी के सहज स्वभाव का अनुकरण करेंगे और दूसरे वाक्यों को श्रोता एवं दर्शक आसानी से ग्रहण कर सकते हैं जबकि लम्बे व जटिल वाक्य दुराह तथा

दुर्बोध होते हैं । संवाद एजेन्सियों से प्राप्त समाचार मूलत: अखबारों को ध्यान में रखकर लिखे जाते हैं । अत: वे लम्बे एवं जटिल होते हैं परन्तु उन्हें दूरदर्शन के समाचारों में रूपान्तरित करते समय सरल एवं संक्षिप्त बनाना आवश्यक होता है-एक उदाहरण देखिए : "Considering the great contribution of industrial pease in bosting production, three industrial pease awards based on lovest number of mandays lost or account of strikes. Lockouts, another disputes and increasing production by 10% or more over the preceding year are given every year."

इस वाक्य को यदि हम एक ही हिन्दी वाक्य में रूपान्तरित करने का प्रयास करेंगे तो हमारे दर्शक वाक्य के आदि-अंत को जोड़ने का ही बौद्धिक अभ्यास करते रह जाएंगे और उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा । इसलिए इस जटिल एवं लम्बे वाक्य को तीन-चार सरल एवं छोटे वाक्यों में इस प्रकार लिख सकते हैं । 'उत्पादन बढ़ाने में औद्योगिक शांति का प्रर्याप्त योगदान है । इसके लिए प्रतिवर्ष तीन औद्योगिक शांति पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं । ये पुरस्कार कम से कम कार्य दिवसों की क्षति या हड़ताली, तालाबंदियों तथा अन्य विवादों की कम से कम संख्या और उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में 10 प्रतिशत या उससे ज्यादा वृद्धि के आधार पर दिए जाते हैं ।

समाचारों के अनुवाद में शब्दों का चयन भी सूझबूझ के साथ किया जाना चहिए । संपादक या अनुवादक को स्वयं को भाषा के प्रहरी या नियंता का मुखौटा कभी नहीं पहनना चाहिए । दूरदर्शन समाचारों के संपादक का उद्देश्य समाचार अथवा संदेश को अधिक से अधिक सुबोधता के साथ दर्शकों तक पहुँचाना है । अत: प्रचलित या सहज में समझे जाने वाले शब्द चाहे वे मूलत: किसी भी भाषा के हों, प्रयोग किए जाने चाहिए । हमारा अभिप्राय यह है कि अंग्रेजी से अनुवाद करते समय अंग्रेजी के वे शब्द जो हिन्दी में बोले, समझे जाते हैं और जिनके हिन्दी विकल्प अभी लोगों के गले का हार नहीं बन पाए हैं, प्रयोग किए जाने चाहिए । टेलीफोन, कमेटी, स्कूल, पेंसिल, ट्रेन, बस, मोटर, इंजिन, बाक्स, ऑफिस, सिनेमा, वीडियो, रेडियो, इंजीनियर, डॉक्टर आदि सैकड़ों अंग्रेजी शब्दों को इस कोटि में रखा जा सकता है ।

19.5.1 संदर्भ एवं प्रसंग

समाचारों की भाषा के स्वरूप की चर्चा करते हुए हमने आपको बताया कि किसी भाषा में भाव या घटना की अभिव्यक्ति करते हुए भाषा के स्वभाव एवं संस्कार का ध्यान रखना आवश्यक है । भाषा अपने बोलने वालों की भावनाओं एवं आकांक्षाओं, मूल्यों एवं मान्यताओं की वाहक होती है । अत: एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय भाषा के संस्कार का ध्यान रखना आवश्यक है अन्यथा समाचारों की भाषा कृत्रिमता दोष का शिकार हो जाएगी ।

इस संदर्भ में अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं । "Twenty soldiers were killed in the action against the Pakistani troops in chhamb sector" इस वाक्य में "Killed' शब्द के लिए 'मारे गए' सही अनुवाद है । परन्तु यदि हम इसकी जगह काम आए या 'शहीद हो गए' लिखेंगे तो भाषा का प्रभाव बढ़ जाएगा । इसी प्रकार 'The body of the

departed leader is lying in state" वाक्य के लिए "दिवंगत नेता का पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए रखा हुआ है'' । तभी लिखा जा सकता है जब हमें उस समाज की संस्कृति की जानकारी होगी जो उस भाषा को सुनने समझने वाले हैं । "Late" के लिए मृत के स्थान पर 'स्वर्गीय' शब्द का प्रयोग अधिक उपयुक्त लगता है । गंगा में नहाने की बजाय 'गंगा स्नान' प्रयोग निश्चय ही बेहतर होगा । भाषा प्रयोग के संदर्भ में संस्कृत में एक मिसाल दी जाती है । 'सैंधव आनय' अर्थात् 'सैंधव लाओ' । सैंधव का अर्थ नमक भी होता है और घोड़ा भी। अब आदेश मानने वाले की सूझबूझ पर निर्भर करता है कि वह सैंधव का क्या अर्थ लेता है। यदि युद्ध क्षेत्र में यह आदेश दिया जाएगा तो उसका अर्थ घोड़ा होगा और यदि रसोई में बैठी गृहिणी अपने अनुचर से ये शब्द कहेगी तो अर्थ होगा नमक । समाचारों के अनुवाद में संदर्भ पहचानने की सूझबूझ बहुत ही गहरी होनी चाहिए । दूरदर्शन समाचारों का अनुवाद बहुत जल्दी में किया जाता है । अत: संदर्भ एवं प्रसंग के अनुरूप शब्दों व मुहावरों का तत्काल चयन करना होता है । ऐसे असंख्य शब्द हैं, जिनके अर्थ अलग-अलग संदर्भ में अलग-अलग हो सकते हैं । उदाहरण के लिए The Principal gave away awards to the winning teams" तथा "The tribunal has pronounced its interim award over the river water dispute"

पहले वाक्य में Award का अर्थ पुरस्कार होगा जबकि दूसरे वाक्य में 'पंच फैसला' होगा । इसी प्रकार अंग्रेजी शब्द State लिए अलग अलग संदर्भ में राज्य, सरकार, देश, अवस्था, कथन, सरकारी सवारी, विदेश विभाग आदि विविध हिन्दी शब्द इस्तेमाल किए जाएगे। Observe शब्द मनाने, देखने, निरीक्षण, विचार आदि कई क्रियाओं के लिए प्रयुक्त होता है । "The Speaker adjorned the House" और "The speaker in the meeting upon the need of prescring communal harmony." इन दोनों वाक्यों में speaker शब्द के लिए पहले संदर्भ में अध्यक्ष एवं दूसरे में वक्ता का अर्थ लिया जाएगा ।

19.5.2 शब्द तथा मुहावरे

दूरदर्शन से प्रसारित बुलेटिनों में खेलों से लेकर विज्ञान तथा राजनीति से लेकर अध्यात्म तक लगभग सभी विषयों के समाचार शामिल रहते हैं । अत: संपादकों को सभी विषयों और इन क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले तकनीकी शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है । उदाहरण के लिए अमरीका तथा इंग्लैंड में मंत्री के लिए Secretary पदनाम का इस्तेमाल होता है, जबकि हमारे यहाँ Secretary का अर्थ सचिव होता है । वहाँ Secretary of State का अर्थ है विदेश मंत्री । यदि हमें इस परम्परा का ज्ञान नहीं होगा तो हम अर्थ का अनर्थ कर देंगे। Spirit शब्द का भौतिकी में अलग अर्थ है जबकि अध्यात्म एवं मनोविज्ञान में अलग अर्थ है । 'Value' शब्द का हिन्दी पर्याय 'मूल्य' है परन्तु 'मूल्य' शब्द का अर्थशास्त्र में अलग तथा समाज शास्त्र में अलग अर्थ है । संपादक को इन सभी बारीकियों की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

एक ही समाचार में किसी शब्द की पुनरावृत्ति अखरती है । अत: अनुवाद करते हुए किसी शब्द के लिए उपलब्ध पर्यायवाची शब्दों का यथा संभव इस्तेमाल किया जाना चाहिए । अंग्रेजी के 'And' शब्द के लिए हमारे यहाँ 'तथा', और, 'एवं' आदि शब्द हैं । इसी प्रकार किसी नाम को बार-बार बोलने की बजाय उनके पदनाम, सर्वनाम आदि का बदल-बदल कर प्रयोग किया जा सकता है ।

यह आवश्यक नहीं है कि हर अंग्रेजी शब्द का अनिवार्य रूप से अनुवाद किया जाए । ऐसे असंख्य शब्द हैं जो हिन्दी में बोल-चाल की भाषा का हिस्सा बन चुके हैं । इनमें ऑक्सीजन, चिमनी, कम्प्यूटर, बटन, पर्स, कापी, होटल, कॉलेज, स्टेशन, क्लब, टेबल, पार्क, रेस्टोरेंट, पेंट, स्कर्ट आदि अनेक शब्द शामिल है । ऐसे भी अनेक अंग्रेजी शब्द हैं जिनके हिन्दी पर्याय प्रचलित होने के बावजूद वे भी हिन्दी में आत्मसात् कर लिए गए हैं । ये हैं स्कूल और विद्यालय, रेलगाड़ी और ट्रेन, उद्यान और पार्क, टेलीफोन व दूरभाष, थाना व पुलिस स्टेशन, अफसर और अधिकारी इत्यादि । इन दोनों रूपों का प्रयोग किया जाना चाहिए ।

परन्तु जो शब्द हिन्दी में प्रचलित नहीं हुए हैं और उनके अच्छे पर्याय हिन्दी में उपलब्ध हैं, उन्हें जबर्दस्ती से या अपनी सुविधा के कारण प्रयोग करना भाषा के साथ खिलवाड़ माना जाएगा । गोलीबारी के लिए 'फायरिंग', आयोग के लिए 'कमीशन' राज्यपाल के लिए 'गवर्नर', 'मंत्रिमंडल' के लिए कैबिनेट, 'जाँच' के लिए 'एन्क्वायरी' आदि शब्द इसी श्रेणी में आते हैं । इधर कुछ समाचारपत्रों में इस प्रकार के शब्द प्रयोग में देखने में आए हैं । यह अनुचित है।

मुहावरे भाषा को संवारते हैं और कम शब्दों में व्यापक एवं गहरे अर्थ को व्यक्त करते हैं । मुहावरे किसी भाषा-भाषी समाज की आचरण मूल्य प्रणाली में से विकसित होते हैं । अत: मुहावरों का अनुवाद बड़ी सावधानी से किया जाना चाहिए । जिस अर्थ के लिए हिन्दी में मुहावरा मौजूद है, उसका शाब्दिक अनुवाद करने की बजाय मूल हिन्दी मुहावरे का प्रयोग अपेक्षित है । 'Red Carpet Welcome' के लिए 'भव्य स्वागत' लिखा जा सकता है । "The Department could not deliver the goods" वाक्य का किसी ने अनुवाद किया 'विभाग माल नहीं बांट सका' । 'यहाँ Deliver the goods' शब्द मुहावरे के रूप में आए है । अत: इसके लिए 'विभाग सही झ ढ़ग से काम नहीं कर सका' लिखा जाना चाहिए था । कलकत्ता के लिए संसद में एक बार 'Dying City' का मुहावरा इस्तेमाल किया गया । इसका अनुवाद 'मरता हुआ शहर' थोडे ही किया जा सकता है । उसे समस्याग्रस्त नगर बोला गया ।

समाचारों के अनुवाद में इन सभी सावधानियों पर सफलतापूर्वक ध्यान रखने के लिए आवश्यक है कि आपका हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान रूप से अधिकार हो । इसके साथ-साथ संस्कृत का भी ज्ञान हो तो सोने पर सुहागा है । हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं में व्यापक रूप से संस्कृत तत्सम या तद्भव रूप में इस्तेमाल होते हैं । अत: संस्कृत का ज्ञान निश्चय ही अच्छे अनुवाद में अत्यन्त सहायक होगा । नए तकनीकी शब्द गढ़ने में भी संस्कृत का अद्वितीय योगदान रहा है ।

19.6 मौखिक समाचारों का अनुवाद

दूरदर्शन समाचारों का स्वरूप अन्य माध्यमों के समाचार से पर्याप्त भिन्न होने के कारण संपादक को समाचार के मौखिक स्वरूप का भी अनुवाद करके प्रस्तुत करना पड़ता है । जैसा कि हमने समाचार के स्रोतों की चर्चा के दौरान बताया कि विदेशी चित्रमय समाचार कुछ अन्तर्राष्ट्रीय टेलीविजन समाचार एजेन्सियों से प्राप्त होते हैं । उनमें बहुत से समाचारों में चित्रों के अनुरूप स्वर दिया जाता है और वे एक से दो मिनट के कैप्सूल के रूप में होते हैं । उन्हें ज्यों का त्यों हिन्दी समाचारों में शामिल नहीं किया जा सकता, क्योंकि हिन्दी समाचारों के दर्शकों के लिए वे निरर्थक होंगे । ऐसे समाचारों को सुनकर तत्काल उसका अनुवाद किया जाता है और उपलब्ध चित्रों के क्रम के अनुरूप उसे संपादित किया जाता है । इस प्रक्रिया में भी वाक्य संक्षिप्त और सरल रखे जाते हैं ।

इसी प्रकार जब किसी का बयान, भाषण अथवा संवाददाता सम्मेलन में संबोधन का समाचार दिया जाता है और उस समाचार का मौखिक अंश अंग्रेजी में होता तो उसके महत्वपूर्ण अंश को हिन्दी में प्रस्तुत करने के लिए करेक्टर जेनरेशन यानी सी.जी. की तकनीकी अपनाई जाती है, जिसमें भाषण का अंग्रेजी अंश सुनाने के साथ-साथ उसके हिन्दी अनुवाद को टी.वी. स्क्रीन पर लिखित रूप में अंकित किया जाता है । लिखित अंश लम्बा होने पर उसे पढ़ने में कठिनाई हो सकती है । अत: इन अंशों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इसके लिए वाक्यों के अंत में आने वाली क्रियाओं या सहायक क्रियाओं तथा कारकों आदि का यथासंभव कम से कम इस्तेमाल करके वाक्य संक्षिप्त एवं चुस्त बनाए जाते हैं । उदाहरण के लिए प्रधानमंत्री ने किसानों की एक सभा में अपने भाषण के दौरान अन्य बातों के अलावा कहा "This Govt. decided to allot 30 crore rupees for income generating programmes in rural areas."

इस समूचे वाक्य का अविकल अनुवाद करने की बजाय इसे इस रूप में लिखा जा सकता है 'ग्रामीण क्षेत्रों में आय पैदा करने वाले कार्यक्रमों के लिए 30 करोड़ रूपये का प्रावधान। इसमें कई शब्दों की बचत हो जाती है । इसी प्रकार के वाक्य बनाकर भाषण के पूरे अंश को दर्शकों के लिए सरलता से समझ में आने वाला बनाया जा सकता है । सी.जी. की यह तकनीक अन्य समाचारों में भी, विशेषकर जहाँ अंकों व संख्याओं का अधिक उपयोग हो, अपनाई जाती है। ऐसे समाचारों में समाचार वाचक द्वारा पढ़े गए महत्वपूर्ण अंश को सी.जी. रूप में भी दिखाया जाता है, जिससे दर्शक का ध्यान और गहराई से उस अंश की ओर केन्द्रित हो जाता है।

19.7 सारांश

इस इकाई में टेलीविजन की बढ़ती हुई लोकप्रियता पर प्रकाश डालते हुए आपको दूरदर्शन समाचारों का महत्व समझाया गया । तत्पश्चात् यह बताया गया कि दृश्य-श्रव्य माध्यम होने के नाते दूरदर्शन के समाचारों विशेषकर हिन्दी समाचारों में आम बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करना आवश्यक है दूरदर्शन में समाचार तैयार करने में अनुवाद की अनिवार्यता को

रेखांकित किया गया तथा यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद के कारण भाषा में जटिलता, दुरूहता तथा कृत्रिमता आने की संभावना रहती है । अनुवाद में आने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करने के बाद आपको उन उपायों तथा सावधानियों की जानकारी दी गई जिन्हें अपनाकर अनुवाद करते हुए भाषा की सहजता, स्वाभाविकता तथा सरलता की रक्षा की जा सकती है ।

19.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. 'समाचार प्रसारण दूरदर्शन की अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रक्रिया है । "इस कथन की समीक्षा कीजिए ।
2. टेलीविजन समाचारों की भाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।
3. टेलीविजन समाचारों को अनुवाद की छाया से मुक्त रखने के लिए किन सावधानियों पर ध्यान देना आवश्यक है?
4. समाचारों के संपादन में अनुवाद की अनिवार्यता के क्या कारण हैं?
5. 'अनुवाद दो भाषाओं में पुल का काम करता है' । इस उक्ति से आप कहाँ तक सहमत है?

छात्र टिप्पणी

छात्र टिप्पणी

छात्र टिप्पणी

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1.	स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2.	भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3.	कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5.	पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6.	संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7.	महिलाओं में वैद्यानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8.	राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9.	बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10.	एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11.	एम.बी.ए.	3 वर्ष
12.	पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13.	पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14.	पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15.	पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16.	टी.एच.एम.	1 वर्ष
17.	डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18.	डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19.	डी.एल.एस.	1 वर्ष
20.	डी.सी.सी.टी.	18 माह
21.	बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22.	एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23.	बी.लिब.	1 वर्ष
24.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25.	बी.एड.	2 वर्ष
26.	पी.एच.डी.	3 वर्ष
27.	पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष